नवोदय विद्यालय ग्रन्थालयों के संकलन एवं सेवाओं का एक विवेचनात्मक अध्ययन

ग्रन्थालय एवं सूचना विज्ञान विभाग में

डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी

की

उपधि हेतु प्रस्तुत

शोध–प्रबन्ध

2003

सह–निर्देशक

प्रो० एम० टी० एम० खान
(आचार्य एवं विभागाध्यक्ष)
पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय
झांसी

निर्देशक

डा० बी० के शर्मा
(प्रवाचक एवं पूर्व विभागाध्यक्ष)
पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग
डा० बी० आर० अम्बेदकर विश्वविद्यालय
आगरा

शोधकर्ता

प्रदीप द्विवेदी

ग्रन्थालय एवं सूचना विज्ञान विभाग, बुन्देल खण्ड विश्वविद्यालय
झांसी

परम् पूज्य माता जी
एवं पिता जी
के श्री चरणों में
सादर समर्पित।
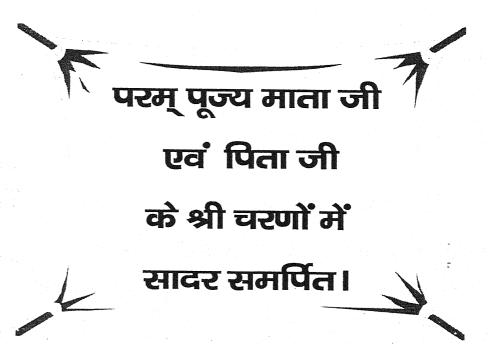
Prof. M. T. M. Khan
Prof. & Head
Dept. of Library & Information Science
Bundelkhand University, Jhansi.

Dr. B. K. Sharma
Ex. Reader & Head
Dept. of Library & Information Science
Dr. B. R. Ambedkar University, Agra

CERTIFICATE

This is to certify that the work embodied in the thesis entitle **"Navodaya Vidyalaya Granthalayon Ke Sankalan Avam Sevaon Ka Eak Vivechanatmak Adhyayan"** is submitted by **Pradeep Dwivedi** for the award of the degree of **Doctor of Philosophy** in Library & Information Science. It is a record of the bonafide research work carried by him under our supervision and guidance. This work has not been submitted else where for a degree-diploma in any form.

It is further certified that he has worked with me for the period recognized under the Ph. D. degree, ordinance -7 of the **Bundelkhand University Jhansi.**

(Prof. M. T. M. Khan)

(Dr. B. K. Sharma)

Dr. B. K. Sharma
(Ex-Head, Deptt. Of LIS, Dr. B R.A.U.)
8, Surya Nagar, AGRA-282002
Phone-0562-2157175

DECLARATION

I do hereby declare that the thesis entitled **"Navodaya Vidhyalaya Granthalayon Ke Sankalan Avam Sevaon Ka Eak Vivechanatmak Adhyayan"** submitted to Budelkhand University, Jhansi, has not previously formed the basis for the award of any degree-diploma or other similar title of a recognition. This word embodies the result of my original research reflects an advancement in this area.

Date: 10/12/2003

Place: Jhansi

(Pradeep Dwivedi)

विषय सूची

तालिका सूची

प्राक्कथन

सूचना प्रौद्यागिकी के इस युग में सूचना को एक शक्ति एवं संसाधन के रूप में स्वीकारकिया गया है अतः गन्थालयों की भूमिका को राष्ट्रीय, आर्थिक, औद्योगिक, शैक्षणिक तथा सामाजिक विकास एवं उन्न्यन राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के क्रियाकलापों में अधिक महत्वपूर्ण माना गया है। सूचना को शक्ति की भी संज्ञा दी जाती है, वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी के अनुसंधान के लिए सूचना अति आवश्यक सामग्री तो है ही साथ ही मनोरंजनात्मक क्रिया कलानों के लिए भी सूचना की आवश्यकता होती है। हम सूचना के बिना सफल एवं सार्थ तथा उपादेय नहीं सिद्ध हो सकते हैं, इस प्रकार सूचना अनुसंधान एवं विकास के निष्पादन का एक आवश्यक संसाधन है।

सूचना के संग्रहण, सुरक्षा एवं प्रसार की दृष्टि से ग्रन्थालयों को सर्वोत्तम साधन एवं एजेन्सी माना गया है। सूचना को किस प्रकार से वांछित मात्रा में उपयुक्त समय पर उपयोग कर्ताओं को कैसे सुलभ किया जाय इसमें ग्रन्थालायों की भूमिका अद्वितीय है।

हमारा देश भारत गाँवों का देश है जहाँ की लगभग 70% आबादी गाँवों में निवास करती है। अतः गाँवों के समुचि विकास हेतु समय—समय पर विभिन्न परियोजनाऐं एवं कार्यक्रम संचालित किये जाते रहे हैं। इसी कड़ी में गाँवों में शिक्षा का विकास एवं प्रसार हो ऐसा विचार हमारे भूतपर्व प्रधानमंत्री स्व0 श्री राजीव गाँधी जी के मन में आया। जिसके परिणाम स्वरूप जवाहर

नवोदय विद्यालयों की स्थापना की गयी, जो मानव संसाधान विकास मंत्रालय के आधीन ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। इन नवोदय विद्यालयों में स्थित पुस्तकालयों की स्थिति, उनके द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाऐं क्या हैं, तथा उनमें क्या और विकास होना चाहिए तथा सेवाओं को किस प्रकार और अधिक प्रभावी एवं कारगर बनाया जा सकता है, उक्त विचारों को ध्यान में रखते हुए ही यह शोध कार्य किया गया है।

प्रस्तुत कृति को पूर्ण करने में अनेक विषय विशेषज्ञों, गुरूजनों का सहयोग एवं आशीर्वाद एक सम्बल के रूप में प्राप्त हुआ है। अतः उन सबके प्रति आभार व्यक्त करना मैं अपना पुनीत कर्तव्य समझता हूँ।

इसी कम मे सर्वप्रथम मैं अपने मार्गदर्शक **डा0 वी0 के0 शर्मा,** पूर्व विभागाध्यक्ष ग्रन्थालय एवं सूचना विज्ञान विभाग (डा0 बी0 आर0 अम्बेदकर विश्वविद्यालय, आगरा) एवं सह मार्गदर्शक **प्रो0 एम0 टी0 एम0 खान,** विभागाध्यक्ष, ग्रन्थालय एवं सूचना विज्ञान विभा, (बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी) परम श्रद्धेय **प्रो0 एस0 एम0 त्रिपाठी जी** पूर्व विभागाध्यक्ष, ग्रन्थालय एवं सूचना विज्ञान विभाग, (जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर) तथा शोध कार्य रूपी रथ के सारथी **डा0 यू0 सी0 शर्मा जी**, विभागाध्यक्ष, ग्रन्थालय एवं सूचना विज्ञान विभाग, (डा0 बी0 आर0 अम्बेदकर विश्वविद्यालय, आगरा) के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंनें अपने सानिध्य में प्रत्येक चरण एवं अवस्था में मेरी सहायता एवं मार्गदर्शन किया है, जिनके अनुभव व अनमोल ज्ञान के

बिना इस कार्य का पूर्ण होना सम्भव नहीं था। मैं इन विद्वानों के प्रति हृदय से सदा आभारी रहूँगा।

इस अध्ययन एवं अन्वेषण में **डा0 एम0 एम0 ए0 अन्सारी**, संहायक पुस्तकालयाध्यक्ष (जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, दिल्ली) **डा0 डी0 वी0 एस0 बघेल** विभागाध्यक्ष पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग (वी0 एस0 ए0 कालेज, मथुरा) से बहुआयामी मार्गदर्शन एवं बहुमूल्य सुझाव इस प्रस्तुतिकरण को वांछित रूप प्राप्त कराने में नीव का पत्थर साबित हुई है। इन विषय–विशेषज्ञों के प्रति हृदय से आभारी हूँ। जिनका बहुमूल्य सहयोग एवं सुझाव इस अनुसंधान के कार्य को सम्पादित करने में प्राप्त हुआ है।

इस कार्य को सम्पन्न करने में मेरे सहयोगियों से भी अपूर्व सहयोग प्रापत हुआ है। अतः मैं **श्री दिनेश प्रताप सिंह**, सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष (जी0 बी0 पन्त विश्वविद्यालय, पन्तनगर) तथा **डा0 एन0 पी0 सिंह, श्री एस0 के0 सिंह, श्री आर0 सी0 तिवारी**, एवं **श्री शेखर शर्मा** सभी (बी0 एम0 ए0 एस0 इन्जीनियरिंग कॉलेज, आगरा) का मैं हृदय से आभारी हूँ। जिन्होंने किसी न किसी रूप में मेरी सहायता की है।

मैं उन सभी लेखकों का हृदय से आभार प्रकट करता हूँ। जिनकी कृतियों से इस अध्ययन एवं अन्वेषण को आधार सामग्री प्राप्त हुई है।

अन्त में अप्रत्यक्ष रूपी प्रेरणाश्रोत पूज्यनीय माताजी **श्रीमती राजेश्वरी** एवं पिता **श्री रामऔतार द्विवेदी** का मैं और मेरी लेखनी सदैव आभारी रहेगी, जिनके आशीर्वाद से इस कृति को पूर्ण करने में सफल रहा।

मैं अपने परम आदरणी पिता तुल्य **श्री हरि प्रसाद शर्मा** का कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने कार्य की प्रगति के बारे में बार–बार पूछ कर प्रेरित किया है। मैं मेरी गुरूमाता **श्रीमती शशी शर्मा** का भी कृतज्ञ हूँ। मैं देवेशी कम्प्यूटर का भी कृतज्ञ हूँ जिन्होंने शोध कार्य को सुन्दर ढंग से पूर्ण करने में तत्परता दिखाई है।

यह प्रयास मेरा मौलिक कार्य है जिसे सम्पन्न करने का मैंने पूर्ण प्रयत्न किया, यदि इसमें किसी प्रकार का अभाव व त्रुटि प्रतीत होती है तो यह मेरा दायित्व है।

(प्रदीप द्विवेदी)

दिनांकः 10|12|2003

अध्याय – एक

परिचय

परिचय

वैदिक युग से लेकर आज तक भारत में शिक्षा का मूल तात्पर्य यह है कि शिक्षा प्रकाश का वह श्रोत है। जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हमारा सच्चा पथ प्रदर्शन करती है। शिक्षा से तात्पर्य ईश्वर भक्ति तथा धर्मिकता की भावना, चरित्र निर्माण, व्यक्तित्व का विकास, नागरिक तथा सामाजिक कर्तव्यों का पालन, सामाजिक कुशकता की उन्नति, राष्ट्रीय संस्कृति का संरक्षण तथा प्रसार आदि से है।

प्राचीन काल में शिक्षण की विधि मौखिक थी तथा छात्रों को आचार्य द्वारा बताई गयी बातों को कंठस्थ करना होता था। तथा छात्र शिक्षा दीक्षा का कार्य आश्रमों एवं गुरूकुलों में होता था।

18वीं सताब्दी में भारतीय शिक्षा का क्या रूप था इसका वास्तविक ज्ञान प्राप्त करने के लिए उपयुक्त साधन उपलब्ध नहीं हैं। 19वीं सताब्दी के प्रारम्भ में अंग्रजों द्वारा प्रचलित भारतीय शिक्षा व्यवस्था की जाँच की गयी एवं उसमें सुधार के उपायों को प्रारम्भ किया गया।

सर्व प्रथम सन् 1698 में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के प्रयासों से मुम्बई तथा मद्रास में कुछ दान आश्रित विद्यालय खोले गये जिनका उद्देश्य – अंग्रेजों, ईसाइयों, कम्पनी के कर्मचारियों तथा जन साधारण के बच्चों को निःशुल्क शिक्षा देना था। सन् 1840 में बम्बई में शिक्षा बोर्ड का तथा 1856

में बंगाल में शिक्षा परिषद का निर्माण हो चुका था। तथा 1856 के अन्त तक सभी प्रान्तों में शिक्षा विभागों की स्थापना का क़ार्य पूर्ण हो चुका था जिसका श्रेय 'वुड' को जाता है।

सन् 1844 में लार्ड हार्डज्ज द्वारा सरकारी नौकरियों के लिए अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त व्यक्तियों को वरीयता दी जाने की घेषणा के फलस्वरूप अंग्रेजी शिक्षा के प्रसार की गति तीव्र हो गयी थी। 1859 के आदेश पत्र ने सहायता अनुदान को उच्च तथा माध्यमिक शिक्षा के लिए सीमित कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि माध्यमिक शिक्षा पर व्यय करने के लिए अधिक धन उपलब्ध होने लगा जिससे इस स्तर पर शिक्षा को आशातीत उन्नति हुई। माध्यमिक शिक्षा के क्षेत्र में राजकीय प्रयत्नों के साथ–साथ भारतीय एवं मिसनरियों ने भी सराहनीय कार्य किये। परिणाम स्वरूप सन् 1882 के अन्त तक माध्यमिक विद्यालय अवाध गति से बढ़े जो कि इस प्रकार है –

यह वह माध्यमिक विद्यालय हैं जिनका संचालन पूर्णतः राज्य सरकारों द्वारा किया जाता है। 1854 में राजकीय विद्यालयों की संख्या 169 थी तथा 1882 में इन विद्यालयों की सख्या 1363 हो गयी।

1857 की क्रांति के पश्चात् मिशनरियों के प्रति सरकार का रूख कड़ा हो गया था फिर भी माध्यमिक विद्यालयों का विस्तार लगातार होता रहा। भारत में 680 मिशन स्कूल थे।

1854 तक भारतीयों ने माध्यमिक शिक्षा की दिशा में बहुत ही कम कार्य किया था परन्तु 1882 के अन्त तक राष्ट्रीयता की भावना से प्रेरित होकर 1341 माध्यमिक विद्यालयों का निर्माण कर लिया था।

सन् 1921–22 में मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों की संख्या 7530 तथा सन् 1936–37 में बढ़कर 13056 हो गयी थी। जिससे यह स्पष्ट होता है कि 19वीं सताब्दी के प्रारम्भ से ही माध्यमिक शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति प्रारम्भ हो गयी थी।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् सन् 1952–53 में ताराचन्द्र समिति और केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार बोर्ड की सिफारिसों के फलस्वरूप माध्यमिक शिक्षा आयोग की नियुक्ति की गयी। इस समय भारत के विभिन्न राज्यों में विभिन्न प्रकार के विद्यालय जिनमें माध्यमिक शिक्षा प्रदान की जाती है – मिडिल स्कूल, हाई स्कूल, उच्चमाध्यमिक तथा इण्टरमीडिएट कालेज आदि। स्वतंत्र भारत में माध्यमिक विद्यालयों के निर्माण की दिशा में अति सराहनीय प्रगति हुई है। सन् 1958–59 में 14326 हायर सैकेन्ड्री स्कूल थे।

माध्यमिक स्तर पर शिक्षा के विस्तार की अपेक्षा शिक्षा के स्तर को सुधारने पर अधिक बल दिया जा रहा है। दूसरी पंचवर्षीय योजना के दौरान 2115 बहुउद्देशीय स्कूल खोले गये। तत्पश्चात् तृतीय और चतुर्थ पंचवर्षीय योजनाओं के अन्तरगत माध्यमिक शिक्षा के स्तर को और ऊँचा तथा व्यापक बनाने के लिए केन्द्र सरकार ने सौ आवासीय उच्चतर

माध्यमिक विद्यालय जिन्हें केन्द्रीय स्कूल कहते हैं की कार्य योजना तैयार की गयी।

केन्द्रीय सरकार के स्थनांतरित होने वाले कर्मचारियों के बच्चों की शिक्षा में किसी प्रकार का व्यवधान न हो इसलिए देश के विभिन्न शहरों में एक जैसी आर्दश शैक्षणिक सुविधायें प्रदान करने के लिए भारत सरकार ने नबम्बर 1962 में एक योजना लागू की। इसके अन्तर्गत शिक्षा मंत्रालय द्वारा वर्ष 1963–64 में 20 रेजीमेन्टल विद्यालय स्थापित किये गये जिनका केन्द्रीय विद्यालयों के रूप में संकलन किया गया। प्रारम्भ में वर्ष 1963–64 में इन विद्यालयों की संख्या 20 थी वहीं बढ़ कर वर्ष 1995–96 में 838 तक पहुंच गयी।

1. केन्द्रीय सरकार द्वारा स्थानांतरित होने वाले कर्मचारी जिनमें रक्षा तथा अर्धसैन्यवलों के पुलिस कर्मी सामिल है के बच्चों की शैक्षिक आवश्यकता को पूरा करना।

2. स्कूली शिक्षा के क्षेत्र में अधिक से अधिक श्रेष्ठता अपनाते हुए आदर्शों को प्रतिष्ठित करना।

3. शिक्षा से जुड़े दूसरे निकाय जैसे केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड तथा राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद आदि के सहयोग से शिक्षा के क्षेत्र में परिवर्तन सीलता को विकसित करना।

केन्द्रीय विद्यालय संगठन की व्यवस्था मानव संसाधन विकास मंत्रालय के मंत्री, केन्द्रीय विद्यालय के प्रभारी एवं अध्यक्ष के रूप में तैनात करके की गयी है। इनकी कार्य प्रणाली एवं व्यवस्था को सुद्रण रखने के लिए इन्हें 19 क्षेत्रीय कार्यालयों में बाँटा गया है।

इस प्रकार माध्यमिक शिक्षा के क्षेत्र में सातवीं पंचवर्षीय योजना में एक नये अध्याय का सूत्रपात नवोदय विद्यालय के रूप में हुआ। जिनका मुख्य उद्देश्य उन ग्रामीण क्षेत्रों के बच्चों को जिनका परिवार गरीवी रेखा के नीचे जीवन यापन कर रहा है को आधुनिक एवं उच्च स्तर की सेवा मुफ्त में देने का प्रावधान है। इन विद्यालयों में बच्चों को निःशुल्क आवास, वर्दी, भोजन आदि की व्यवस्था इन विद्यालयों के अन्तर्गत की गयी है जो कि लगभग केन्द्रीय विद्यालयों के ही समान हैं।

आधुनिक एवं नई शिक्षा नीति की कड़ी में एक अध्याय नवोदय विद्यालय के रूप में जुड़ा और आधुनिक शिक्षा को ग्रामीण क्षेत्रों में पहुंचाने तथा उन गरीब एवं निर्धन परिवारों से सम्बन्धित बच्चों के सम्पूर्ण विकास के लिए तत्कालीन प्रधानमंत्री स्व. श्री राजीव गाँधी द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में नवोदय विद्यालय स्थापित करने का कार्य किया गया। सातवीं पंचवर्षीय योजना में प्रत्येक जिले में औसतन एक विद्यालय की स्थापना की जाये यह परिकल्पना की गयी। आठवीं पंचवर्षीय योजना के पहले तीन वर्षों में 50 विद्यालय प्रतिवर्ष की दर से 150 विद्यालय खोलने का निर्णय लिया गया। जो इस योजना के शुरू होने से पहले ही स्वीकृत 280 विद्यालयों के

अतिरिक्त है। 31 मार्च 1996 तक जिन राज्यों में यह योजना लागू हुई उनके 444 में से 378 जिलों में विद्यालय स्थापित हुए। वर्तमान में सम्पूर्ण भारत वर्ष में 423 नवोदय विद्यालयों की स्थापना हो चुकी है।

नवोदय विद्यालयों के मुख्य उद्देश्य –

1. मुख्यतः ग्रामीण क्षेत्रों के प्रतिभाशाली छात्रों को चाहे वह किसी भी सामाजिक, आर्थिक प्रष्ठ भूमि वाले हों को आधुनिक शिक्षा प्रदान करना।

2. त्रिभाषा सूत्र के अनुसार यह सुनिश्चित करना कि नवोदय विद्यालय के बच्चे तीन भाषाओं में अपेक्षित प्रवीणता प्राप्त करें।

3. अनुभव और सुविधाओं के आदान–प्रदान से प्रत्येक जिले में स्कूली शिक्षा के स्तर में सुधार लाने के लिए प्रमुख केन्द्र के रूप में कार्य करना।

4. इससे यह प्रयास रहता है कि प्रत्येक नवोदय विद्यालय में 1/3 लड़कियां दाखिल हों यह माध्यमिक शिक्षा परिषद से संबद्ध है।

इन विद्यालयों का सफल एवं सुचारू रूप से संचालन करने के लिए विद्यालय समिति का गठन किया गया तथा इन्हें आठ क्षेत्रीय कार्यालयों में बाँटा गया है।

इन स्कूलों का संचालन नवोदय विद्यालय समिति द्वारा किया जाता है। जो मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अन्तर्गत एक स्वायत्त संगठन है जिसे समिति पंजीकरण अधिनियम (1860–XXI) के अन्तर्गत 28.02.86 को दिल्ली में पंजीकृत किया गया है।

प्रबंधात्मक संगठन :

नवोदय विद्यालय समिति के प्रसासनिक ढाचे का कार्यकारी प्रधान निदेशक होता है। मुख्यालय में इस कार्य के संचालन में संयुक्त निदेशक, उपनिदेशक तथा सहायक निदेशक उनकी सहायता करते है। प्रत्येक विद्यालय का अध्यक्ष उस जिले का जिलाधिकारी होता है। इन विद्यालयों को निम्न क्षेत्रिय कार्यालयों के रूप में स्थापित किया गया है।

क्षेत्रिय कार्यालय	विद्यालयों की संख्या	राज्य
1. भोपाल	63	मध्य प्रदेश, उडीसा
2. चंडीगढ	41	पंजाब, हिमांचल प्रदेश, चंडीगढ
3. हैदराबाद	72	आन्ध प्रदेश, कर्नाटक, केरल, पांण्डिचेरी, अण्ड वान निकोबार
4. जयपुर	47	राजिस्थान, हरियाणा, दिल्ली
5. लखनउ	54	उत्तर प्रदेश
6. पटना	46	बिहार
7. पुणे	49	महाराष्ट, गुजरात, गोआ, दमन और द्वीप, नगर हवेली, दादरा
8. शिलांग	51	मेघालय, मणिपुर, मिजोरम, अरूणांचल प्रदेश, नागालेण्ड, त्रिपुरा, सिक्किम, असम
कुल	**423**	

सेकेन्ड्री स्कूलों में जो 10 वर्षीय तथा दो वर्षीय कार्यक्रमों के जो शिक्षा के स्तर हैं जिन्हें हाईस्कूल तथा इण्टरमीडिएट कहा जाता है में ग्रंथालय के इतिहास तथा स्थिति पर दृष्टिपात करने पर यह स्पष्ट होता है कि इस दिशा में शिक्षाविदों, प्रबन्धकों तथा अध्यापकों का ध्यान पूर्णतः आकर्षित नहीं हुआ है।

कुछ प्रदेशों में इस दिशा में ध्यान दिया गया है और पूर्णकालिक प्रशिक्षित एवं योग्य ग्रंथालयी को नियुक्त करने और उसकी सेवाओं का उपयोग करने के लिए व्यवस्था भी की गयी है। तथा समुचित ग्रंथालय भी संचालित किये जाते हैं। लेकिन ऐसी व्यवस्था उभी राज्यों में एक जैसी नहीं है लेकिन नवोदय विद्यालयों में केन्द्रीय विद्यालयों की भाँति स्कूल की स्थापना के साथ ही ग्रंथालयों को आवश्यक रूप से स्थपित करने प्रशिक्षित एवं योग्य ग्रंथाालयिओं की नियुक्ति प्रशिक्षित अध्यापकों की भाँति उपयुक्त वेतनमान में करने का प्रावधान किया गया है।

उददेश्य –

नवोदय विद्यालय पुस्तकालय प्रायः ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित हैं, तथा आवासीय संस्थान हैं। अतः यह जानने कि उपरोक्त विद्यालय पुस्तकालय उपयोग कर्ताओं की आकांक्षा के अनुरूप कार्य कर हैं या नहीं ।

1. नवोदय विद्यालय ग्रन्थालयों में पाठ्य सामग्री का संकलन एवं संगठन पुस्तकालय एवं सूचना व्यवसाय के मानकों के अनुरूप हो रहा है अथवा नहीं, क्योंकि किसी भी ग्रन्थालय की सफलता में पाठ्य सामग्री का संगठन एवं संकलन आवश्यक एवं अति महत्वपूर्ण है।

2. विद्यालय पुस्तकालयों का प्रमुख उदेदेश्य छात्रों में पढने की आदत को विकसित करना है, अतः पाठय सामग्री के चयन एवं पुस्तकालय निर्णयों में पुस्तकालयाध्यक्ष की भूमिका का विश्लेषण करना है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि पुस्तकालयाध्यक्ष की विद्यालय की शैक्षणिक नीतियों एवं गतिविधियों की अनन्य विकास में भूमिका क्या है।

3. पुस्तकालय एवं सूचना व्यवसाय एवं सूचना प्रौद्योगिकी के बदलते हुए परिदृष्यों में कम्प्यूटर के अनुप्रयोग एवं प्रयोग की ओर अग्रसर हो रहे हैं। अतः प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के माध्यम से यह भी जानने का प्रयास किया गया है कि नवोदय विद्यालय ग्रन्थालयों में कम्प्यूटरों के अनुप्रयोग एवं प्रयोग की स्थिति क्या है।

4. सूचना प्रौद्योगिकी के परिदृष्य में कर्मचारियों के मानव संसाधन विकास जैसे – कर्मचारियों की प्रोन्नति, प्रशिक्षण

इत्यादि से सम्बन्धित नवोदय विद्यालय समिति की क्या संस्तुतियां हैं तथा उनका अनुपालन हो रहा है कि नहीं, प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में यह भी जानने का प्रयास किया गया है।

5. नवीन शिक्षा पद्यतियों के अन्तरगत पुस्तकालयों में अमुद्रित पाठय सामग्री जैसे – सी0 डी0, टेप, कैसेटस, डी0 वी0 डी0, आदि का प्रचलन बढा है। अतः प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में यह भी जानने का प्रयास किया गया है, कि उपरोक्त की तरफ नवोदय विद्यालय ग्रन्थालयों की नीति सकारात्मक है अथवा नहीं।

6. वर्तमान बदलते हुए परिदृष्यिों में सूचना के बाजारीकरण की ओर पुस्तकालयों की प्रवृत्ति विक़सित हो रही है। पुस्तकालय अवधारणाओं के अन्तरगत जहाँ पुस्तकालयों की निःशुल्क उपयोग की अवधारणा थी, तथा पाठक को पुस्तकालय में आमन्त्रित करने के लिए विभिन्न प्रकार एवं विधियों का प्रयोग किया जाता था, अनुदान आदि प्रदान किये जाते थे। वहीं बदलते हुए परिप्रेक्ष्य में पुस्तकालयों को स्वं साधन एवं धन अर्जित करने की विधियों को विकसित करना पड रहा है। अतः प्रस्तावित शोध प्रबन्ध में यह भी जानने का प्रयत्न किया गया है, कि सूचना के

बाजारीकरण की तरफ नवोदय विद्यालय ग्रन्थालयों की रूचि एवं दिशा सार्थक एवं सकारात्मक है या नहीं।

कार्य विधि –

प्रस्तुत शोध नवोदय विद्यालय ग्रन्थालयों के संकलन एवं सेवाओं का एक विवेचनात्मक अध्ययन को प्रारम्भ करने से पूर्व विभिन्न सूचना श्रोतों का विश्लेषण किया गया तथा यह पता लगाने का प्रयत्न किया गया कि नवोदय विद्यालय ग्रन्थालयों के संकलन एवं सेवाओं पर कोई शोध प्रबन्ध हुआ है या नहीं। विभिन्न सूचना श्रोतों जिनमें लाइब्रेरी एण्ड इन्फार्मेशन साइंस एवस्ट्रेक्ट, सम्मेलन कार्यवाही (कान्फ्रेन्स वाल्यूम्स) एवं पुस्तकों का विस्त्रित विश्लेषण एवं अध्ययन किया गया।

उपरोक्त सूचना श्रोतों का अवलोकन करने के उपरान्त पर निष्कर्ष निकाला गया कि प्रस्तुत विषय नवोदय विद्यालय ग्रन्थालयों के संकलन एवं सेवाओं पर कोई शोध कार्य भारत वर्ष के किसी भी विश्वविद्यालय में पूर्ण या आंशिक रूप से नहीं हुआ है। विभिन्न पत्रिकाओं का विश्लेषण करने के उपरान्त या तो ज्ञात हुआ कि विभिन्न शोधकर्ताओं एवं लेखकों ने नवोदय विद्यालय ग्रन्थालयों के ऊपर कुछ लेख तो लिखे हैं लेकिन उनमें भी विचारों की एकता एवं निरंतरता का अभाव पाया गया तथा कोई भी गहन अध्ययन

प्रस्तुत विषय नवोदय विद्यालय ग्रन्थालयों के संकलन एवं सेवाओं पर नहीं हुआ था।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को पूर्ण करने के लिए एतिहासिक शोध विधियों का प्रयोग किया गया है। जिसके अनुसार सर्वप्रथम विभिन्न सूचना श्रोतों में प्रस्तुत विषय एवं साहित्य का अवलोकन करने के उपरान्त प्रस्तुत विषय से सम्बन्धित आंकडे शोधकर्ता द्वारा, विभिन्न ग्रन्थालयों का भ्रमण करके एकत्रित किये थे। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध पूर्णतः आंकड़ों एवं सर्वेक्षण पर आधारित है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में दो प्रकार के आंकड़े एकत्रित किये गये (1) प्राथमिक, (2) अन्य; प्राथमिक आकंडों को एकत्रित करने के लिए शोधकर्ता द्वारा प्रश्नावली, साक्षातकार एवं निरीक्षण तीनों ही विधियों का प्रयोग किया गया है। प्रश्नावली में शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत विषय से सम्बन्धित विभिन्न प्रकार के प्रश्न जैसे – ग्रन्थालय का संकलन, भवन, एवं उपस्कर, सूचना प्रौद्योगिकी, कर्मचारियों के विकास तथा पुस्तकालय सेवाओं से सम्बन्धित प्रश्नों को विभिन्न दृष्टि कोणों से तैयार किया गया तथा प्रश्नावली के लिए विभिन्न प्रकार के प्रश्न निर्मित किये गये। जिनको उपयोगकर्ता, पुस्तकालय अधिकारियों एवं कर्मचारियों से पूछा गया। उपरोक्त सभी को तैयार करने के उपरान्त शोधकर्ता द्वारा विभिन्न नवोदय विद्यालय ग्रन्थालयों का दो–तीन बार व्यक्तिगत रूप से निरिक्षण किया

गया। प्रश्नावली को उपयोगकर्ताओं, पुस्तकालय अधिकारी एवं कर्मचारियों को वितरित किया गया तथा उनकी विचार धाराओं को एकत्र किया गया। पुस्तकालय अधिकारियों एवं कर्मचारियों से विभिन्न प्रश्न पूछे गये जिनको टेपरिकार्डर के माध्यम से एकत्र कर लिया गया। तथा मौके पर जाकर अवलोकन के आधार पर भी आंकडों को एकत्रित किया गया। द्वितीय आंकडे विभिन्न प्रकाशित सूचना श्रोतों जैसे – नवोदय विद्यालय समिति का वार्षिक प्रतिवेदन, बजट, नवोदय विद्यालय समिति को प्रेषित विभिन्न प्रतिवेदनों, सन्दर्भ श्रोतों एवं विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखों के माध्यम से एकत्रित किया गया।

प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आकडों को एकत्रित करने के उपरान्त उनको प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के शीर्षक एवं राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप विभिन्न प्रकार से विश्लेषित किया गया।

विभिन्न दृष्टि कोणों से विश्लेषण करने के उपरान्त राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय मानकों से उनकी तुलना की गयी तथा यह निष्कर्षित करने का प्रयत्न किया गया कि नवोदय विद्यालय ग्रन्थालयों में पाठकों की आकांक्षाओं के अनुरूप कार्यरत हैं अथवा नहीं। साथ ही जहाँ पर तथा ग्रन्थालय में पायी कमियों को दूर करने के लिए विभिन्न अनुसंसायें भी प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में की गयी

हैं। उपरोक्त अनुसंसायें न केवल नवोदय विद्यालय ग्रन्थालयों की सेवाओं एवं उनके संकलन में व्याप्त अनियमित्ताओं एवं कमियों को दूर करने में सहायक होगी अपितु उपर्युक्त अनुसंसाओं का अनुपालन भारतवर्ष के अन्य सभी प्रकार के विद्यालय ग्रन्थालयों में करके उनकी स्थितियों को सुदृढ़ एवं विकसित करने में सहायक होंगी।

सेकेन्ड्री स्कूलों में जो 10 वर्षीय तथा दो वर्षीय कार्यक्रमों के जो शिक्षा के स्तर हैं जिन्हें हाईस्कूल तथा इण्टरमीडिएट कहा जाता है में ग्रंथालय के इतिहास तथा स्थिति पर दृष्टिपात करने पर यह स्पष्ट होता है कि इस दिशा में शिक्षाविदों, प्रबन्धकों तथा अध्यापकों का ध्यान पूर्णतः आकर्षित नहीं हुआ है।

कुछ प्रदेशों में इस दिशा में ध्यान दिया गया है और पूर्णकालिक प्रशिक्षित एवं योग्य ग्रंथालयी को नियुक्त करने और उसकी सेवाओं का उपयोग करने के लिए व्यवस्था भी की गयी है। तथा समुचित ग्रंथालय भी संचालित किये जाते हैं। लेकिन ऐसी व्यवस्था उभी राज्यों में एक जैसी नहीं है लेकिन नवोदय विद्यालयों में केन्द्रीय विद्यालयों की भाँति स्कूल की स्थापना के साथ ही ग्रंथालयों को आवश्यक रूप से स्थपित करने प्रशिक्षित एवं योग्य ग्रंथाालयिओं की नियुक्ति प्रशिक्षित अध्यापकों की भाँति उपयुक्त वेतनमान में करने का प्रावधान किया गया है।

साहित्य विश्लेषण

1. आई0एल0ए0 वुलेटिन खण्ड ्ग्ग्प नम्बर 2 (2003) के पेज सं. 23 पर नवोदय विद्यालय लखनऊ संभाग के पुस्तकालध्यों के व्यावसायिक स्थिति के सन्दर्भ में डा0 मनोज कुमार शर्मा द्वारा एक लेख प्रकाशित किया गया है जिसमें उन्होंने नवोदय विद्यालय पुस्तकालध्याक्षें के व्यावसायिक स्थिति का विश्लेष्ण किया है। लेखक ने बताया कि नवोदय विद्यालय की स्थाना के लिए जो उद्देश्य रहे थे उस सन्दर्भ में लखनऊ संभाग के ग्रन्थालयाध्यक्षों की स्थिति क्या है।

2. संतोष कुमार वी0 तथा परमेश्वरन, एम0 (2000) के द्वारा भी केल्प्रो बुलेटिन खण्ड चार सं0 51, 52 में एक लेख प्रकाशित किया गया जिसमें उन्होंने नवोदय विद्यालय ग्रन्थालयों की स्थिति का एक सर्वेक्षण किया। लेखक ने अपने निष्कर्ष में यह निष्कर्षित किया कि सूचना एवं प्रौद्योगिकी के बदलते परिदृष्यों में नवोदय विद्यालय ग्रन्थालय सार्थक रूप से कार्य नहीं कर रहे हैं।

3. एम0के0सिन्हा (2002) ने कैल्प्रो बुलेटिन के खण्ड पांच में एक लेख प्रकाशित किया जिसका शीर्षक स्कूल लाइब्रेरी इन इण्डिया था में लेखक द्वारा विद्यालय पुस्तकालयों के उद्देश्यों, पुस्तकालय संकलन, मानव संसाधन विकास से सम्बन्धित स्थिति का सर्वेक्षण किया एवं विस्तृत विश्लेषण किया। इसमें लेखक

द्वारा सर्वेक्षण के उपरान्त पाई गयी कमियों को दूर करने के सुझाव भी व्यक्त किये गये हैं।

4. जे0सी0 अग्रवाल द्वारा ऐजूकेशन इन इण्डिया आठवीं पंचवर्षीय योजना में विद्यालय ग्रन्थालयों के संदर्भ में विस्तृत विवेचन किया है तथा यह भी निर्देशित किया है कि भारत सरकार द्वारा स्कूल पुस्तकालयों के लिए आवंटित धन राशि का मापदंड क्या है।

5. आई0वी0 यादव द्वारा 1999 में बच्चों के संदर्भ में पढ़ने की आदत को विकशित करने के लिए एक अध्ययन किया गया तथा यह निष्कर्श निकाला कि बच्चों में पढ़ने की आदत को विकशित करने के लिए बुक रिबयू, कहानी सुनाना, खोल खेलना इत्यादि गतिविधियोकं द्वारा पढ़ने की आदत को विकशित किया जा सकता है।

6. के0पी0 सिंह द्वारा लाइब्रेरी प्रोगरेस के खण्ड 22 (2002) में पुस्तकालय के कम्प्यूटरीकरण के संदर्भ में एक लेख प्रकाशित किया गया तथा यह बताने का प्रयत्न किया है कि पुस्तकालयों को कम्प्यूटरीकरण करते समय कौन कौन सी समस्याओं का सामना करना पडता है तथा कम्प्यूटरींकरण के प्रयुक्त हार्डवेयर सैफ्टवेयर क्या है तथा इसके क्या फायदे हैं

7. उपरोक्त पत्रिका के अन्दर ही एक लेख प्रीति महाजन द्वारा प्रकाशित किया गया है जिसमें लेखक ने इंटरनेट की उपयोगिता तथा उससे सम्बन्धित फायदों को ग्रंथालय के संदर्भ में विश्लेशित किया है।

8. एबोट ए0 द्वारा लाइब्रेरी ट्रेन्ड के 1998 के अंक में एक लेख प्रकाशित किया जो मुद्रित पाठ्य सामिग्री से अमुद्रित पाठ्य सामग्री की तरफ पुस्तकालय के बढ़ते रूझान की स्थिति का मूल्यांकन प्रस्तुत करता है तथा अमुद्रित पाठ्य सामग्री से होने वाले फायदों को व्यक्त किया गया है।

9. डा0 एम0एम0ए0 अन्सारी द्वारा मानव संसाधन विकास से सम्बन्धित एक लेख लाइब्रेरियनसिप टू डे एंड टूमारो के खण्ड दो में एक लेख प्रकाशित किया गया तथा यह बताने का प्रयत्न किया गया है कि मानव संसाधन विकास कार्यक्रमों को पुस्तकालय में लागू करने से कर्मचारियों की कार्य क्षमताओं, पुस्तकालय सेवाओं की गुणवत्ता, उपयोगकर्ताओं की संतुष्टि पर क्या प्रभाव पढ़ता है तथा पुस्तकालय की गुणवत्ता को किस प्रकार विकशित किया जा सकता है।

क्षेत्र :

सम्पूर्ण भारत वर्ष में कुल 423 नवोदय विद्यालयों की स्थापना कर जा चुकी है। जो ग्रमीण क्षेत्रों में ही संस्थापित किये गये है। परन्तु केन्द्रीय विद्यालयों की संख्या 838 है क्योंकि यह क्षेत्रों शहरी में संस्थापित किये गये है। नवोदय विद्यालयों को आठ मण्डलों – भोपाल, चंण्डीगढ, हैदराबाद, जयपुर, लखनउ, पटना , पुणे, तथा शिलांग आदि में विभक्त किया गया है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में केवल उत्तर प्रदेश के अन्दर स्थित नवोदय विद्यालयों को ही अध्ययन की परिधि में शामिल किया गया है क्योंकि नवोदय विद्यालय ग्रन्थालय, नवोदय विद्यालय समिति के आधीन केन्द्रीय सरकार द्वारा मानव संसाधन विकास मंत्रालय के माध्यम से स्थापित एवं संचालित किये जाते हैं। नवोदय विद्यालय ग्रन्थालयों के लिए योजनाओं का निरूपण एवं कार्यान्वयन नवोदय विद्यालय समिति द्वारा निर्गत आदेशों के अनुरूप ही किया जाता है। अतः भारत वर्ष के किसी भी प्रान्त में स्थित नवोदय विद्यालय की कार्य प्रणाली प्रायः एक ही प्रकार की होती है।

उत्तर प्रदेश भारत का सबसे बड़ा राज्य है तथा शैक्षणिक दृष्टि से काफी पिछड़ा भी है। अतः इस क्षेत्र में स्थित नवोदय विद्यालय ग्रन्थालयों के ऊपर निकाली गयी कोई भी अनुसंसा इन विद्यालय ग्रन्थालयों को प्रभावी बनाने में तो सहायक है ही लेकिन

भारत के अन्य राज्यों के नवोदय विद्यालय ग्रन्थालयों में भी समान रूप से लागू होगी। अतः प्रस्तुत शोध प्रबन्ध उत्तर प्रदेश के नवोदय विद्यालय के ग्रन्थालयों तक ही सीमित है।

अध्याय – दो

नवोदय विद्यालय : एक परिचय

नवोदय विद्यालय : एक परिचय

सर्व प्रथम सन् 1698 में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के प्रयासों से मुम्बई तथा मद्रास में कुछ दान आश्रित विद्यालय खोले गये जिनका उद्देश्य अंग्रेजों, ईसाइयों कम्पनी के कर्मचारियों तथा जनसाधारण के बच्चों को निःशुल्क शिक्षा देना था। सन् 1840 में बम्बई में शिक्षा बोर्ड का तथा 1856 में बंगाल में शिक्षा परिषद का निर्माण हो चुका था। सन् 1856 के अन्त तक सभी प्रान्तों में शिक्षा विभागों की स्थापना का कार्य पुर्ण हो चुका था जिसका श्रेय वुड़ को जाता है।

सन् 1844 में लार्ड हार्डिज्ज द्वारा सरकारी नौकरियों के लिए अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त व्यक्तियों को वरीयता दी जाने की घोषणा के फलस्वरूप अंग्रेजी शिक्षा के प्रसार की गति तीव्र हो गयी थी। 1859 के आदेश पत्र में सहायता अनुदान को उच्च तथा माध्यमिक शिक्षा के लिए सीमित कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि माध्यमिक शिक्षा पर व्यय करने के लिए अधिक धन उपलब्ध होने लगा। जिससे इस स्तर पर शिक्षा की आशातीत उन्नति हुई माध्यमिक शिक्षा के क्षेत्र में राजकीय प्रयत्नों के साथ–साथ भारतीयों एवं मिशनरियों ने भी सराहनीय कार्य किये। परिणाम स्वरूप सन् 1882 के अन्त तक माध्यमिक विद्याालय अवाधगति से बढ़े।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् सन् 1952–53 में ताराचन्द्र समिति और 'केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार बोर्ड' की सिफारिसों के फलस्वरूप

माध्यमिक शिक्षा आयोग की नियुक्ति की गयी। उस समय भारत के विभिन्न राज्यों में विभिन्न प्रकार के विद्यालय जिनमें माध्यमिक शिक्षा प्रदान की जाती है मिडिल स्कूल, हाई स्कूल, उच्च माध्यमिक तथा इण्टरमीडिएट कालेज आदि। स्वतन्त्र भारत में माध्यमिक विद्यालयों के निर्माण की दिशा में अति सराहनीय प्रगति हुई है। सन् 1958–59 में 14326 हायर सेकेण्ड्री स्कूल थे।

मध्यमिक स्तर पर शिक्षा के विस्तार की अपेक्षा शिक्षा के स्तर को सुधारने पर अधिक वल दिया जा रहा है। दूसरी पंचवर्षीय योजना के दौरान 2115 बहुउद्देशीय स्कूल खोले गये। तत्पश्चात त्रतीय और चतुर्थ पंचवर्षीय योजनाओं के अन्तरगत माध्यमिक शिक्षा के स्तर को और ऊँचा तथा व्यापक बनाने के लिए केन्द्र सरकार ने सौ आवासीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय जिन्हें केन्द्रीय स्कूल कहते हैं की स्थापना की गई।

स्थापना –

आधुनिक एवं नई शिक्षा नीति की कड़ी में एक अध्याय नवोदय विद्यालय के रूप में जुड़ा और आधुनिक शिक्षा को ग्रामीण क्षेत्रों में पहुँचाने तथा उन गरीब एवं निर्धन परिवारों से सम्बन्धित बच्चों के सम्पूर्ण विकास के लिए तत्कालीन प्रधानमंत्री स्व0 श्री राजीव गाँधी द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में नवोदय विद्यालय स्थापित करने का कार्य प्रारम्भ किया गया। सातवीं पंचवर्षीय योजना में प्रत्येक जिले में औषतन एक विद्यालय की स्थापना की जाय यह परिकल्पना की गयी। आठवीं पंचवर्षीय योजना के पहले तीन वर्षो में 50 विद्यालय प्रतिवर्ष की दर से 150

विद्यालय खोलने का निर्णय लिया गया। जो इस योजना के शुरू होने से पहले ही स्वीकृत 280 विद्यालयों के अतिरिक्त है। 31 मार्च 1996 तक जिन राज्यों में यह योजना लागू हुई उनके 444 में से 378 जिलों में विद्यालय स्थापित हुए।

यह एक सर्वविदित एवं मान्य तथ्य है कि विशिष्ट योग्यता या अभिक्षमता वाले वालकों को अधिक गति से ज्ञान प्राप्त करने के अवसर प्रदान किये जाने चाहिए। भारत जैसे प्रजातान्त्रिक देश में राष्ट्र व समाज का कर्तव्य है कि वह श्रेष्ठ बालकों को अधिक से अधिक अच्छी शिक्षा प्रदान करने के दायित्व को उठायें, भले ही उन वालकों के माता पिता अपने वालकों की श्रेष्ठ शिक्षा का व्यय वहन करने की स्थिति में हों अथवा नहीं। इस आधार भूत एवं सर्वमान्य तथ्य को राष्ट्र के दायित्व के रूप में स्वीकार करते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में शैक्षिक विषमताओं को दूर करने तथा शिक्षा के समान अवसरों से वंचित बालकों की विशिष्ट आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए उन्हें शिक्षा के समान अवसर उपलब्ध कराने पर बल दिया गया है। आशय यह है कि शिक्षा पर होने वाले व्यय को वहन करने की अभिभावकों की क्षमता पर विचार किये बिना ही विशिष्ट प्रतिभा तथा रूझान वाले वालकों को उत्तम गुणवत्ता की शिक्षा उपलब्ध कराकर उन्हें तीव्र गति से आगे बढ़ाने के अवसर प्रदान किये जाये। इस उद्‌देश्य की पूर्ति हेतु नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में गति संवर्द्धक विद्यालय (Pace Setting Schools) स्थापित करने का संकल्प किया गया है। नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि नवीन प्रवर्तन (Innovations) तथा प्रयोग (Experiments) की पूर्ण छूट देते हुए

एक निश्चित प्रारूप पर राष्ट्र के विभिन्न भागों में नवोदय विद्यालय स्थापित किये जायेंगे।

उद्देश्य –

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) के अनुसार इन विद्यालयों के व्यापक उद्देश्य निम्नांकित हैं।

1 समानता व सामाजिक न्याय के साथ–साथ बालकों के लक्ष्य को प्राप्त करना (अनुसूचित जाति एवं जनजाति के लिए आरक्षण के साथ)

2 देश के विभिन्न भागों से आये प्रतिभावान बालकों को अधिकतर ग्रामीण बालकों को साथ–साथ रहने व पढ़ने के अवसर प्रदान करके राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देना।

3 उनकी पूर्ण क्षमता को विकसित करना तथा

4 विद्यालय उन्नयन के राष्ट्रव्यापी कार्यक्रम में ही उत्प्रेरक का कार्य करना।

स्पष्ट है कि नवोदय विद्यालय की स्थापना का मुख्य उद्देश्य सामाजिक, आर्थिक अथवा अन्य किसी सीमाओं के कारण शिक्षा से वंचित बालकों को गुणात्मक शिक्षा उपलब्ध कराकर संतुलित तथा वहु आयामी विकास करना हे। स्पष्टतः यह विद्यालय बालकों को उत्तम

गुणवत्ता की शिक्षा उपलब्ध करायेंगे। भले ही उनके अभिवावकों की अपने बच्चों की शिक्षा पर किये जाने वाले व्यय की क्षमता तथा उनका सामाजिक, आर्थिक स्तर कुछ भी क्यों न हो। सातवीं पंचवर्षीय योजना में निर्णय लिया गया कि प्रत्येक जिले में औषतन एक नवोदय विद्यालय स्थापित हो। यह नवोदय विद्यालय सरकार द्वारा पूर्णतयः वित्तीय सहायता प्राप्त है। तथा इनका प्रबन्ध भारत सरकार द्वारा गठित नवोदय विद्यालय समिति करती है। नवोदय विद्यालय समिति एक स्वायत्त संस्था है।

नवोदय विद्यालय जिन्हें अब जवाहर नवोदय विद्यालय कहते है। भारत सरकार की एक महात्वकांक्षी शिक्षा योजना है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में किये गये संकल्प गतिसंवर्धक विद्यालय की स्थापना को पूरा करने के लिए अब तक 22 राज्यों व 7 संघीय क्षेत्रों में अब तक 378 नवोदय स्कूल खोले जा चुके हैं।

प्रवेश पद्यति –

नवोदय विद्यालय में दाखिला राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान तथा प्रशिक्षण परिषद द्वारा तैयार और संचालित की गयी परीक्षा के आधार पर कक्षा 6 से किया जाता है। इस परीक्षा का माध्यम मात्र भाषा या क्षेत्रीय भाषा होता है, जिसके द्वारा विद्यार्थियों ने कक्षा 5 में पढ़ कर परीक्षा उत्तीर्ण की हो। यह प्रवेश परीक्षा लिखित, वर्ग तटस्थ होती है और इस प्रकार से तैयार की जाती है कि ग्रामीण स्कूल के प्रतिभाशाली बच्चे बिना किसी असुविधा के इस प्रतियोगिता में भाग ले सके।

पात्रता एवं शर्तें –

नवोदय विद्यालय में कक्षा 6 में दाखिला एक लिखित चयन परीक्षा के माध्यम से निम्नलिखित पात्रता मानदंडों की शर्त पर किया जाता है :–

सभी उम्मीदवारों के लिए :–

(क) नवोदय विद्यालयों में कक्षा 6 में दाखिला एक चयन परीक्षा के आधार पर होता है।

(ख) निर्धारित चयन परीक्षा में बैठने वाला उम्मीदवार, जिस जिले में दाखिला चाहता है उसी जिले के किसी मान्यता प्राप्त स्कूल में, उस सत्र में पांचवीं कक्षा में पढ़ रहा होना चाहिए। परन्तु वास्तविक दाखिला इस शर्त पर होता है कि उसने दाखिला से पहले कक्षा 5 पास कर ली हो।

(ग) दाखिला चाहने वाले की उम्र न्यूनतम 9 वर्ष तथा अधिकतम 13 वर्ष होनी चाहिए। यह शर्त अनुसूचित जातियों तथा अनुसूचित जन जातियों के बच्चों सहित सभी वर्गों के बच्चों पर लागू होगी।

(घ) प्रत्येक उम्मीदवार को किसी मान्यता प्राप्त स्कूल/स्कूलों से विगत 3 सत्रों में क्रमशः कक्षा 3,4 तथा 5 में औपचारिक शिक्षा पद्यति से पूरा एक शैक्षिक सत्र प्रति कक्षा पढ़ा तथा उत्तीर्ण हुआ होना चाहिए।

(ङ) किसी भी उम्मीदवार को किसी भी हालत में, दूसरी वार चयन परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

ग्रामीण उम्मीदवारों के लिए :–

(क) कम से कम 75 प्रतिशत स्थान, उस जिले के ग्रामीण क्षेत्रों से चुने उम्मीदवारों से भरे जायेंगे और शेष स्थान उस जिले के शहरी क्षेत्रों से चुने उम्मीदवारों से चुने जायेगें।

(ख) शहरी क्षेत्र वे हैं जिन्हें 1981 की जनगणना अथवा तदुपरांत सरकारी अधिसूचना में वर्णित किया गया है। अन्य सभी क्षेत्र ग्रामीण माने जायेंगे।

(ग) ग्रामीण कोटे के अन्तरगत प्रवेश चाहने वाले उम्मीदवार को ग्रामीण क्षेत्र में स्थित मान्यता प्राप्त विद्यालय/विद्यालयों से कक्षा 3,4 तथा 5 पढ़ा और उत्तीर्ण किया होना चाहिए।

शिक्षा का माध्यम –

इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि इस प्रकार दाखिल अधिकांश छात्रों को पहले मातृ भाषा/क्षेत्रीय भाषा के माध्यम से पढ़ाया गया होगा, कक्षा 7 अथवा 8 तक शिक्षा उक्त माध्यम से ही प्रदान की जाती है। इसी अवधि के दौरान भाषा विषयों और सहमाध्यम दोनों ही रूपों में हिन्दी/अंग्रेजी का गहन शिक्षण भी प्रदान किया जाता है। भाषा शिक्षण की आधुनिक तकनीकों जैसे कम्प्यूटर, सी0डी0रोम, माइक्रोफिल्म, माइक्रोफिस, आडियों, वीडियो आदि माध्यमों के दक्षतापूर्ण उपयोग द्वारा कक्षा 7 व 8 के बाद हिन्दी/अंग्रेजी को अपनाने में कोई कठिनाई उत्पन्न नहीं होती है।

इसके पश्चात् सभी नवोदय विद्यालयों में सामाजिक अध्ययन तथा मानविकी के लिए हिन्दी तथा गणित और विज्ञान के लिए अंग्रेजी सामान्य माध्यम है।

आरक्षण –

अनुसूचित जातियों तथा अनुसूचित जन जातियों के बच्चों के पक्ष में स्थानों का आरक्षण, सम्बन्धित जिले में उनकी जनसंख्या के अनुपात में किया जाता है। वषर्ते कि किसी भी जिले में यह आरक्षण राष्ट्रीय औषत से कम न हो। लड़कियों के लिए स्थानों के आरक्षण की भी व्यवस्था है।

विद्यार्थियों का प्रवास –

नवोदय विद्यालय योजना की एक महत्वपूर्ण विशिष्टता राष्ट्रीय एकता है। जब कि इस उद्देश्य को अनेक तरीकों से प्राप्त किया जा सकता है। नवोदय विद्यालय योजना यह मानती है कि राष्ट्रीय एकता, विद्यार्थियों को उनकी अति संवेदनशील आयु में अपने राज्य के अलावा दूसरे राज्यों के अपने साथियों के साथ मिलकर रहने और अध्ययन करने के सुअवसर प्रदान करके प्राप्त की जा सकती है। इस प्रकार राष्ट्रीय एकता के अनुभव से एक दूसरे से परिचित होने तथा अभिप्रेरित होने में उन्हें सहायता मिलेगी।

इस प्रकार यह योजना, कक्षा 9 के स्तर पर 20 प्रतिशत छात्रों को एक नवोदय विद्यालय से, विभिन्न भाषायी क्षेत्रों में स्थित दूसरे नवोदय विद्यालय में प्रवास की व्यवस्था प्रदान करती है। यह प्रवास हिन्दी भाषी जिलों और अहिन्दी भाषी जिलों के बीच होगा।

ग्रन्थालयों का प्रावधान –

सेकेण्ड्री स्कूलों में जो 10 वर्षीय तथा 2 वर्षीय पाठ्यक्रमों के जो शिक्षा के स्तर हैं जिन्हें हाईस्कूल तथा इण्टरमीडिएट कहा जाता है वे ग्रन्थालय के इतिहास तथा स्थिति पर दृष्टिपात करने पर यह स्पष्ट होता है किसी दिशा में शिक्षाविदों, प्रबन्धकों तथा अध्यापकों का पूर्णतः ध्यान आकर्षित नहीं हुआ है।

कुछ प्रदेशों में इस दिशा में ध्यान दिया गया है और पूर्ण कालिक प्रशिक्षित एवं योग्य ग्रन्थालयी को नियुक्त करने और उसकी सेवाओं का उपयोग करने के लिए व्यवस्था भी की गयी है। तथा समुचित ग्रन्थालय भी संचालित किये जाते हैं। लेकिन ऐसी व्यवस्था सभी राज्यों में एक जैसी नहीं है लेकिन नवोदय विद्यालयों में केन्द्रीय विद्यालयों की भांति स्कूल की स्थापना के साथ ही ग्रन्थालयों को आवश्यक रूप से स्थापित करने, ग्रन्थालय सेवाओं को सुलभ करने, अन्य सेवाओं का आयोजन करने तथा व्यवस्था करने के लिए प्रशिक्षित एवं योग्य ग्रन्थालयिओं की नियुक्ति प्रशिक्षित अध्यापकों की भांति उपयुक्त वेतनमान में करने का प्रावधान किया गया है।

स्कूल पुस्तकालयों का बदलता स्वरूप –

पुस्तकालय हमारे देश के सूचना तन्त्र का एक प्रमुख भाग है और ग्रन्थालयी इस कार्य में मदद करता है। वर्तमान समय में सूचना विस्फोट सम्पूर्ण विश्व में हो रहा है इसमें पुस्तकालयों की सबसे बड़ी भूमिका है।

स्कूल पुस्तकालय के सन्दर्भ में, मूलभूत उद्देश्य, पुस्तकों तथा अन्य पाठ्य सामग्री को संग्रहित कर अध्यापकों तथा विद्यार्थियों को उपलब्ध कराना है।

विद्यालय पुस्तकालय किसी भी विद्यालय के निर्माण में एक महत्व पूर्ण अंग है। यह एक सामाजिक संस्थान होते हैं जहां सूचना को एकत्रित कर उसको संग्रहित किया जाता है तथा उपयुक्त पाठकों तक उसे पहुँचा दिया जाता है। दूसरे शब्दों में कहे तो सही सूचना सही पाठक को उपयुक्त समय में पहुँचाने के लिए पुस्तकालय किसी भी शिक्षण संस्था की उन्नति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

जिस तरह से शिक्षण की विधियाँ विज्ञान एवं तकनीकी माध्यम से बदल रही है, और स्वअध्ययन एवं दूरस्थ शिक्षण विधियों का प्रचलन बढ़ा है। उससे विद्यालय पुस्तकालयध्यक्षों का कार्य एवं सेवाऐं भी प्रभावित हुई है।

वर्तमान परिदृश्य में स्कूल या विद्यालय पुस्तकालय अध्ययन प्रयोगशाला की तरह कार्य कर रहे हैं और विभिन्न तरह एवं माध्यमों से उपयोगकर्ताओं को उनकी आवश्यकतानुरूप पाठ्य सामग्री उपलब्ध कराते हैं। तथा छात्रों को उनके सार्वभौमिक विकास में भी मदद करते हैं। शिक्षण सामग्री के अलावा पुस्तकालय छात्रों के व्यक्तित्व के विकास एवं उनके परस्पर सम्बन्धों को भी विकसित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

नवोदय विद्यालय पुस्तकालयों का बदलता हुआ स्वरूप यह प्रदर्शित करता है कि पुस्तकालय, एक सामाजिक संस्था है जो समाज के विकास

हेतु अन्त तक अपना योगदान देती रहती है। विद्यालय पुस्तकालय दैनिक कार्यों को करते हुए छात्रों की उन्नति एवं उनके सर्वांगीण विकास हेतु अपना योगदान देते हैं।

अध्याय – तीन

नवोदय विद्यालय ग्रन्थालय : परिचयात्मक अध्ययन

नवोदय विद्यालय ग्रन्थालय : परिचयात्मक अध्ययन

प्राचीन काल में शिक्षण की विधि मौखिक थी तथा छात्रों को आचार्य द्वारा बताई बातों को कंठस्थ करना होता था तथा छात्र शिक्षा दीक्षा का कार्य आश्रमों एवं गुरूकुलों में होता था।

18वीं सताब्दी में भारतीय शिक्षा का क्या रूप था इसका वास्तविक ज्ञान प्राप्त करने के लिए उपयुक्त साघन उपलब्ध नहीं है। 19वीं सताब्दी के प्रारम्भ में अंग्रेजों द्वारा प्रचालित भारतीय शिक्षा व्यवस्था की जांच की गयी एवं उसमें सुधार के उपायों को प्रारम्भ किया गया।

हमारा देश 15 अगस्त सन् 1947 को स्वतन्त्र हुआ और 26 जवनरी 1950 को गणतन्त्र बना। अब हमारा अपना संबिधान है और हमारी राष्ट्रीय नीति है सम्बिधान ने सभी व्यक्तियों को समानता एवं स्वतन्त्रता का वचन दिया है और समुचित न्याय दिलाने की व्यवस्था की तथा भाई चारे के आधार पर देश को समृद्ध बनाने का वचन दिया है। राष्ट्र के इस आदर्श को प्राप्त करने के लिए शिक्षा में ढांचागत सुधार एवं उदारता आवश्यक है। मुद्रालियर आयोग ने जनतन्त्र के सन्दर्भ में शैक्षिक उद्‌देश्यों पर विस्तार से विचार किया है। और जनतन्त्रात्मक नागरिकता के विकास, नेत्रत्व के विकास एवं व्यक्तित्व के विकास पर बल दिया है।

आधुनिक एवं नई शिक्षा नीति की कड़ी में एक अध्याय नवोदय विद्यालय के रूप में जुड़ा और आधुनिक शिक्षा को ग्रामीण क्षेत्रों में पहुँचाने तथाा उन गरीब एवं निर्धन परिवारों से सम्बन्धित बच्चों को सम्पूर्ण विकास के लिए तत्कालीन प्रधान मन्त्री स्व0 श्री राजीवगाँधी द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में नवोदय विद्यालय स्थापित करने का कार्य प्रारम्भ किया गया। सातवीं पंचवर्षीय योजना में प्रत्येक जिले में औषतन एक विद्यालय की स्थापना की जाय यह परिकल्पना की गयी। आठवीं पंचवर्षीय योजना के पहले 3 वर्षों में 50 विद्यालय प्रतिवर्ष की दर से 150 विद्यालय खोलने का निर्णय लिया गया। जो इस योजना के शुरू होने से पहले ही स्वीक्रत 280 विद्यालयों के अतिरिक्त है। 31 मार्च 1996 तक जिन राजयों में यह योजना लागू हुई उनके 444 में से 423 जिलों में विद्यालय स्थापित हुए।

नवोदय विद्यालय की विस्त्रत रूपरेखा :–

नवोदय विद्यालय कक्षा 6 से 12 तक के हैं। यह विद्यालय केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद से सम्बन्धित हैं। तथा इसके द्वारा आयोजित की जाने वाली परीक्षाओं के लिए तैयार करते हैं। कक्षा 6 से कक्षा 8 तक शिक्षा का माध्यम राज्य की क्षेत्रीय भाषा है। तथा साथ–साथ हिन्दी या अंग्रेजी के शिक्षण पर भी विशेष ध्यान दिया जाता हैं कक्षा 9 से कक्षा 12 तक विज्ञान व गणित की शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी तथा सामाजिक विषय की शिक्षा का माध्यम हिन्दी है। नवोदय विद्यालय आवासीय तथा सहशिक्षा वाले हैं। इनमें छात्रों एवं छात्राओं के लिए अलग–अलग छात्रावास हैं। नवोदय विद्यालय में शिक्षा पूर्णतः निःशुल्क है। छात्र छात्राओं को आवास भोजन, पुस्तकें, पाठ्य

सामग्री तथा गणवेश भी निःशुल्क उपलब्ध कराये जाते हैं। प्रत्येक नवोदय विद्यालय में छठी कक्षा में योग्य अभ्यार्थियों की उपलब्धता के अनुरूप अधिक से अधिक 80 छात्रों को प्रवेश दिया जाता है। यह छात्र ही आगामी कक्षाओं में जाते हैं। परन्तु यदि कोई छात्र ज्ञानार्जन में सन्तोषजनक प्रगति तथा आचरण बनाये रखने में असमर्थ रहता है तो उसे विद्यालय छोडने के लिए कहा जा सकता है।इन स्कूलों में 75 प्रतिशत स्थान ग्रामीण छात्रों के लिए आरक्षित है। तथा शेष 25 प्रतिशत छात्रों की पूर्ति शहरी क्षेत्र के अभ्यार्थियों से की जाती है। अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के छात्रों के लिए भी सम्बन्धित जिले में उनके अनुपात के आधार पर स्थान आरक्षित है।किन्तु कम से कम 15 प्रतिशत स्थान अनुसूचित जाति के लिए तथा 7.5 प्रतिशत स्थान अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षित होते हैं। कुल स्थानों के एक तिहाई को वालिकाओं द्वारा पूरा करने का प्रयास किया जाता है। यह विद्यालय ग्रामीण क्षेत्रों में खोले गये हैं। नवोदय विद्यालय की कक्षा 6 में प्रवेश राष्ट्रीय शैक्षिक एवं प्रशिक्षण परिषद (NCERT) द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर आयोजित चयन परीक्षा के आधार पर किया जाता है। चयन परीक्षा में केवल वही बच्चे भाग लेने के लिए पात्र होते है। जिन्होंने चालू शिक्षा सत्र के ठीक पूर्व के शिक्षा सत्र में किसी मान्यता प्राप्त विद्यालय में कक्षा 5 उत्तीर्ण की हो तथा जिनकी आयु 9 वर्ष से कम तथा 13 वर्ष से अधिक न हो। जिस जिले में नवोदय विद्यालयस स्थित होता है केवल उसी जिले के अभ्यार्थी ही उस नवोदय विद्यालय में प्रवेश के लिए आवेदन पत्र जिला शिक्षा अधिकारी, प्राथमिक विद्यालयों के प्राचार्य, नवोदय विद्यालय के प्राचार्य या क्षेत्रीय सलाहकार (NCERT) से निःशुल्क प्राप्त किये जा सकते है। छात्रों के चयन के लिए प्रवेश परीक्षा में 3 वस्तुनिष्ठ परीक्षण मानसिक योग्यता परीक्षण

अंकगणित परीक्षा तथा भाषा परीक्षण है। इन तीनों परीक्षणों के क्रमशः 60 प्रतिशत, 20 प्रतिशत, 20 प्रतिशत भार दिया जाता है। किसी भी परिस्थित में एक विद्यार्थी प्रवेश हेतु चयन परीक्षा में दूसरीवार सम्मिलित नहीं हो सकता है।

नवोदय विद्यालय की ढांचागत व्यवस्था :-

निःसन्देह नवोदय विद्यालय योजना सैद्धान्तिक दृष्टि से शैक्षिक विषमता को दूर करने वाली एक अच्छी योजना प्रतीत होती है। इन विद्यालयों की प्रमुख मान्यता है कि गाँव के प्रतिभाशाली बच्चे भी, चाहे उनका आर्थिक सामाजिक स्तर कैसा भी क्यों न हो इन स्कूलों में अच्छी शिक्षा ग्रहण कर सकते है। वास्तव में ग्रामीण बालक दोहरे अभाव के शिकार हैं: प्रथम उनके घर के निकट अच्छे स्कूल नहीं है तथा द्वितीय गैर सरकारी स्तर पर चलायें जा रहे अच्छे स्कूल अत्यधिक महगें होने के कारण उनकी पहुँच के बाहर है। इसके अतिरिक्त दूरी के कारण यदि बच्चों को छात्रावास में रखना पडे तो खर्च इतना अधिक होता है कि यह सामान्य व्यक्ति के बस से बाहर की बात है। अतः सरकारी व्यय पर निर्धन प्रतिभावान विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में बच्चों को शिक्षा उपलब्ध कराने की दृष्टि से खोले जा रहे नवोदय विद्यालय की सहायता से समाज में बढ रही शैक्षिक विषमता को दूर करने में सहायता मिल सकने की आशा तो की ही जा सकती है। परन्तु इस सैद्धान्तिक पक्ष की व्यवहारिकता पर भी दृष्टि डालना आवश्यक होगा। ऐसा तो नहीं कि इन नवोदय विद्यालयों में निर्धन व ग्रामीण क्षेत्रों के प्रतिभावान छात्रों को प्रवेश मिल ही न सके। नवोदय विद्यालयों में निर्धन प्रतिभावान छात्र भी प्रवेश पा

सकेंगे इस बात को स्वीकार करने में मुख्य संकोच है कि क्या चयन परीक्षा में सुविधाविहीन निर्धन छात्र स्वं को सुविधा सम्पन्न धनी छात्रों से श्रेष्ठ प्रमाणित कर सकेंगे?

कार्य प्रणाली एवं प्रवंद्यात्मक संगठनः–

नवोदय विद्यालयों का संचालन नवोदय विद्यालय समिति द्वारा किया जाता है। नवोदय विद्यालय समिति मानव संसाधन विकास मन्त्रालय के अन्तंरगत एक स्वायत्त संगठन है जिसे समिति पंजीकरण अधिनियम (1860–) के अन्तंरगत 28/2/1986 को दिल्ली में पंजीकरण किया गया है।

नवोदय विद्यालय समिति एक कार्यकारिणी समिति के माध्यम से कार्य करती है। यह कार्यकारिणी समिति नवोदय विद्यालय समिति के माध्यम से कार्य करती है। यह कार्यकारिणी समिति नवोदय विद्यालय समिति के विधि–ज्ञापन में निर्धारित उददेश्यों को पूर्ण करने का प्रयास करती हैं। तथा समिति के सभी मामलों और निधियों के प्रबंन्ध के लिए उत्तर दायी होती है। इसे समिति की सभी सम्तियों के प्रयोग करने का अधिकार प्राप्त है। नवोदय विद्यालय समिति तथा उसकी कार्यकारिणी सदस्यों की सूची इस प्रकार हैः–

- मानव संसाधन विकास मंत्री – अध्यक्ष
- राज्यमंत्री (शिक्षा एंव संस्कृति) – उपाध्यक्ष
- अपर सचिव (शिक्षा) – सदस्य

- वित्तीय सलाहकार शिक्षा विभाग – सदस्य
- निदेशक, नवोदय विद्यालय समिति – सदस्य
- आयुक्त, केन्द्रीय विद्यालय संगठन – सदस्य
- अध्यक्ष, केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद – सदस्य
- निदेशक, राष्टीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद – सदस्य
- निदेशक, राष्टीय शैक्षिक योजना प्रशासन संस्थान – सदस्य
- शिक्षा सचिव, असम सरकार – सदस्य
- शिक्षा सचिव, म॰प्र॰ सरकार – सदस्य
- लोक शिक्षण निदेशक, हरियाणा सरकार – सदस्य
- लोक शिक्षण निदेशक, महाराष्ट सरकार – सदस्य
- संयुक्त निदेशक ———, नवोदय विद्यालय समिति – सदस्य

नवोदय विद्यालय समिति के प्रशासनिक ढांचे का कार्यकारी प्रधान निदेशक होता है। जो समिति की कार्यकारिणी समिति द्वारा निर्धारित नीतियों का कार्यान्वयन करता है। मुख्यालय में इस कार्य के संचालन में संयुक्त निदेशक, उपनिदेशक एवं सहायक निदेशक उनकी सहायता करते हैं। क्षेत्रीय स्तर पर उपनिदेशक कं एवं सहायक निदेशक उनकी सहायता करते हैं। सभी प्रकार के कार्यों को पूर्ण करने एवं उन्हें सही अंजाम देने के लिए नवोदय विद्यालयों को आठ क्षेत्रो में बांटा गया है।

जो कि निम्न लिखित हैं –

1 भोपाल

2 चंण्डीगढ़

3 हैदराबाद

4 जयपुर

5 लखन

6 पुणे

7 पटना

8 शिलांग

दाखिला, शिक्षण माध्यम तथा भाषा नीति : –

जवाहर नवोदय विद्यालयों में NCERT द्वारा आयोजित एवं संचालित परिक्षा के आधार पर कक्षा VI में दाखिला दिया जाता है। यह एक ऐसी परीक्षा है जो गैर मौखिक, कक्षा तटस्थ एवं इस प्रकार की होती है कि उससे पर सुनिश्चित किया जा सके कि ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिभाशाली बच्चे प्रतियोगिता में बिना कठिनाई के सफल हो सकें। चूंकि ग्रामीण क्षेत्रों में संचार सुविधाओं का आभाव होता है अतः इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता है और यह सुनिश्चित किया जाता है कि दूर दराज के ग्रामीण बच्चों को निःशुल्कं एवं आसानी से दाखिला दिया जाय।

नवोदय विद्यालय में प्रवेश के लिए परीक्षा में बैठने की पात्रता एवं मापदंड निम्नलिखित है –

1. नवोदय विद्यालय की चयन परीक्षा में बैठने हेतु यह आवश्यक है कि उम्मीदवार ने प्रवेश से पूर्व मान्यता प्राप्त विद्यालय से कक्षा 5 उत्तीर्ण कर ली हो।

2. अभ्यार्थी की आयु प्रवेश के समय 9 वर्ष से 13 वर्ष के मध्य हो।

3. किसी भी स्थिति में अभ्यार्थी को चयन परीक्षा में दूसरीबार बैठने की अनुमति नहीं प्रदान की जाती है।

4. ग्रामीण क्षेत्रों के अभ्यार्थी को कम से कम 3 कक्षाऐं ग्रामीण क्षेत्र से उत्तीर्ण करना अनिवार्य है।

नवोदय विद्यालयों में दाखिल किये गए अधिकांश छात्र अपनी मात्र/क्षेत्रीय भाषा के माध्यम से पढ़कर आये होते हैं, अतः उन्हें कक्षा 8 तक की शिक्षा उसी माध्यम से दी जाती है।। इस अवधि के दौरान भाषा विषय तथा सहमाध्यम, दोनों ही रूपों में हिन्दी तथा अंग्रेजी का गहन शिक्षण प्रदान किया जाता है। इसके पश्चात् सामाजिक अध्ययनों एवं मानविकी विषयों के लिए सभी नवोदय विद्यालयों में परीक्षा का माध्यम हिन्दी है। और गणित तथा विज्ञान के लिए अंग्रेजी।

नवोदय विद्यालयों की योजना में त्रिभाषा सूत्र को लागू करने की व्यवस्था है। हिन्दी भाषी जिलों में पढ़ाई जाने वाली तीसरी भाषा छात्रों के स्थनांतरण से सम्बन्धित है। हिन्दी भाषीक्षेत्रों में नवोदय विद्यालयों में पढ़ाई जाने वाली तीसरी भाषा उन 30 प्रतिशत छात्रों की भाषा है जो गैर हिन्दी भाषी क्षेत्रों से उस विद्यालय में स्थानान्तरित हुए होते हैं।

नवोदय विद्यालय भवन –

जवाहर नवोदय विद्यालयों के भवनों का निर्माण केन्द्र/ राज्य सरकार/सार्वजनिक क्षेत्रों के निकायों के अभिकरणों द्वारा किा जाता है। केन्द्रीय भवन अभियान्त्रिक संगढन के0 लोक निर्माण विभाग को देश भर में निर्माण कार्य करने के लिए प्रमुख अभिकरणें के रूप में नियुक्त किया जाता है। राज्य सरकार द्वारा समिति के नाम आवश्यक भूमि का हस्तान्तरण कर देने के बाद निमार्ण कार्य प्रारम्भ किया जाता है। पहले निर्माण कार्य 3 चरणों में पूरा किया गया – शून्य चरण, प्रथम चरण, तथा द्वितीय चरण पहले की स्वीकृति के अनुसार शून्य चरण में सभागार, रसोई, भोजनालय, कार्यशालाओं के 2 भवन व अस्थाई सौचालयों का निर्माण क़िया जाता है। वर्तमान में केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग ने विद्यालय भवन का एक ऐसा नक्सा विकसित किया है।

जिसके अनुसार प्रारम्भिक चरण में ही कक्षाओं तथा शयन शालाओं का विकास, आवास एवं पुस्तकालय भवन आदि का निर्माण किया जायेगा। पुस्तकालय भवन के लिए अलग से कोई ब्लाक या बिल्डिंग नहीं बनाई जाती

है बल्कि विद्यालय के मुख्य भवन में ही आवश्यकतानुसार लगभग 240 वर्ग फुट का एक हालनुमा कमरा बना दिया जाता है।

जैसा कि सर्वविदित है किसी भी विद्यालय का सबसे महत्तवपूर्ण अंग उसका पुस्तकालय होता है। अतः नवोदय विद्यालय में भी पुस्तकालयों पर ध्यान दिया जाता है। लेकिन यह दुर्भाग्य की बात है कि केन्द्र सरकार नवोदय विद्यालयों में बच्चों की पढाई पुस्तकों वर्दी एवं भोजन आदि पर लाखों रूपये खर्च करती है। परन्तु पुस्तकालय छात्रों को पूर्ण सुविधा उपलब्ध कराने में सक्षम नहीं है।

बजट और लेखा–

नवोदय विद्यालय समिति के कार्यक्रमों और कियाकलापों को सम्पूर्ण वित्तीय सहायता, भारत सरकार, मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा विभाग) से प्राप्त अनुदानो से दी जाती है। इस वर्ष 2001–02 में मंत्रालय ने रू 287.40 करोड़ की राशी (212.63 करोड़ रू योजनालय और 74.77 करोड़ रूपये योजनागत) जारी की। इसके अतिरिक्त 39.52 करोड़ (22.32 करोड़ रू0 योजनागत एवं 17.20 करोड़ रू0 योजनागत) जो 1.4.2000 तक खर्च होने शेष रह गये थे उनको 2001–02 में खर्च करने की अनुमति प्राप्त हो गयी है।

नवोदय विद्यालय पुस्तकालय का स्वरूप :–

नवोदय विद्यालय पुस्तकालय से तात्पर्य ऐसे पुस्तकालय है जहाँ 6 से 16 वर्ष आयु तक के पाठक होते हैं। अतः इनका स्थान विद्यालय के केन्द्र में होता है। जहाँ सभी विद्यार्थी परेशानी या समय वर्वाद आसानी से विद्यालय पुस्तकालय का उपयोग कर सकते हैं। छोटी आयु वर्ग के विद्यार्थियों को देखते हुए पुस्तकालय भवन, फर्नीचर आदि का निर्माण किया जाता है। जिसे हम नीचे दिये निम्न बिन्दुओं द्वारा परिभाषित कर सकते हैं।

स्थान निर्धारण :–

एक उत्तम विद्यालय पुस्तकालय का स्थान निर्धारण इस प्रकार करना चाहीए जिसमें कक्षों की बनावट तथा पठन पाठन की सुबिधाओं का विशेष ध्यान रखना चाहिए। ओर ऐसे स्थान का चयन करना चाहिए जहाँ विद्यालय के किसी भी कोने से सुगमता पूर्वक पहुँचा जा सके। जहाँ विद्यार्थियों को पठन पाठन एवं स्वाध्याय की समुचित सुविधा हो। पुस्तकालय भवन में प्रकाश, विद्युत हवा तथा दृव्य–श्रृव्य पन्नों आदि की भी समुचित व्यवस्था होनी चाहिए।

यदि हम गहनता से विचार करें तो निम्न मुख्य आवश्यकताऐं जो पुस्तकालय में होनी चाहिए इस प्रकार है –

1 जहाँ विद्यालय के प्रत्येक हिस्से से सुगमतापूर्वक पहु चा जा सके।

2 उपयोग की दृष्टि से पूर्णतः सरल हो।

3 पुस्तकालय एक वर्धनशील संस्था है अतः भविष्य में पुस्तकालय में होने वाली वृद्धि को देखते हुए पर्याप्त प्रावधान होना चाहिए।

4 प्राकृतिक प्रकाश प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हो, पुस्तकालय पठन पाठन कक्षों का आकार कम से कम बीस गुना बीस फुट होना चाहिए।

विद्यालय पुस्तकालय के सम्बन्ध में कुछ मानक निर्धारित किये गये है जो कि निम्न प्रकार है।

स्थान निध्यरण को रेखा चित्र के माध्यम से, जहां किसी भी स्थान से आसानी पूर्वक पहुँचा जा सके दर्शाया गया है।
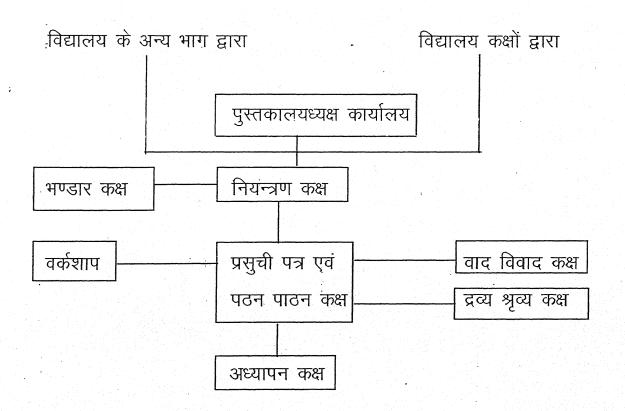
1. विद्यालय कक्षों के हिसाब से पुस्तकालय स्थान का निर्धारण केन्द्र में होना चाहिए ताकि वहाँ पहुँचना सुगम एवं सुविधा पूर्ण हो, तथा अध्यापन कार्य होने वाले भाग की पहुँच में हो।

2. पुस्तकालय ऐसी जगह होना चाहिए जहाँ पाठकों को उचित वातावरण मिल सके।

3. पुस्तकालय भवन की लम्बाई पूरब पश्चिम दिशा में होनी चाहिए।

पुस्तकालय भवन एवं साज सज्जा :–

पुस्तक सग्रह के पूर्ण तथा उचित उपयोग हेतु किी भी बड़े शिक्षण संस्थान में एक पूरे खण्ड की आवश्यकता होती है जिसे पु0 खण्ड कहते हैं। यदि किसी नये शिक्षण संस्थान के निर्माण की योजना बनायी जाय तो उसकी आरम्भ में ही इस प्रकार के खण्ड की योजना बना लेनी चाहिए। पुस्तकालय खण्ड में निम्न चीजे सम्मिलित होनी चाहिए।

1. मुख्य पु0 खण्ड जहाँ पर सामान्य पुस्तकों का संग्रह वे तथा जहाँ पुस्तकालय का अधिकांश ग्रह कार्य किया जाय।

2. पु0 कक्ष का कार्य ग्रह जिसमें उचित मात्रा में अलमारियां दशज तथा भण्डार ग्रह हो तहाँ पर उन पुस्तकों को रख कर जो या तो

उपयोग में निकट भविष्य में लाई जाये या उनकी पुनः जिल्दसाज करवायी जानी चाहिए।

3 एक ऐसा ग्रह भी आवश्यक है जहाँ पु0ध्यक्ष अपने कार्य जैसे प्रसूचिकरण या मरम्मत कार्य इत्यादि चित्र किसी व्यवधान के कर सकते हैं।

4 एक या दो सभा कक्ष जिसमें 6 से 8 लोगों के बैठने की जगह हो जहाँ पर छोटे–छोटे समुदाय संगठित कार्य अथवा वर्तालाप किया जा सके। जो मुख्य पुस्तकालय में विना किसी कार्य में वाधा डाले सम्भव नहीं हैं।

5 किसी भी बड़े शिक्षण संस्थान में अतिरिक्त पाठकों की सुविध हेतु एक पाठन ग्रह आवश्यक है जहाँ पर समाचार पत्र–पत्रिकाऐं तथा लेख इत्यादि पाठन हेतु उपस्थित रहे।

6 एक विशेष ग्रह जहाँ दुर्लभ पुस्तकें जो कभी–कभी उपयोग में आती हैं को रखा जाना चाहिए।

मूलभूत रूप से किसी भी पुस्तकालय को एक पूरी कक्षा के अतिरिक्त उचित संख्या में व्यक्तिगत पाठकों के बैठने की व्यवस्था सुनिश्चित की जानी चाहिए। पुस्तक संग्रह हेतु शिक्षण संस्था में भविष्य में उपयोग में आने वाली पुस्तकों की संख्या का पूर्वानुमान लगाना चाहिए यदि पुस्तकालय में पुस्तकालध्यक्ष के लिए कोई कक्ष नहीं है तो किसी कक्ष का एक भाग उनके कार्य हेतु निर्धारित किया जाना चाहिए यदि भवन जहाँ शिक्षण संस्था खुल

रही है पूर्व में ही स्थापित है तब तो उनके कक्षों की माप बदलना संभव नहीं है इस थ्सिति में उपलब्ध कक्षों के अधिकाधिक उपयोग हेतु उचित व्यवस्था की जानी चाहिए किन्तु यदि पुस्तकालय निर्माणाधीन है तो किसी भी संस्था के पुस्तकालय में जो आवश्यकताऐं होती है उन सबको ध्यान में रख कर है विधि कार्य करवाना उचित होगा।

प्रकाश

पुस्तकालय के दिवारों तथा वहाँ रखी मेजों में उचित प्रकाश आवश्यक है ताकि पठन पाठन आनन्ददायक हो। तथा उचित ध्यान इस ओर भी दिया जाना चाहिए कि जो विद्युत प्रदान बिन्दु ऐसी जगह लगाए जाये कि वह पुस्तकालय की सुन्दरता में बाधक न बने।

भारत विद्युत मानक ब्यूरो द्वारा इस दिशा में दी गयी अनुसंसाऐं निम्न हैं–

1 जब प्राकृतिक प्रकाश प्रदान कराने भी व्यवस्था हो तो चकाचौध करने वाला न हो तथा जब रोशन क्षेत्र पाठन क्षेत्र में कुल योग कम से कम 15 से 20 प्रतिशत तक हो।

2 पुस्तकालय की खिड़कियों की ऊचाँई तथा कमरे की चौड़ाई कम से कम अनुपात में हो।

3 यदि पुस्तकालय की खिड़कियाँ एक ही दीवार में हो तो प्रकाश प्रदायक दीवार से समने वाली दीवार 8मी० से अधिक दूरी न हो।

3 पाठन कक्ष में तीव्र उपयोगी क्षेत्र पाठन कक्ष में कुछ क्षेत्र से 2/2 अनुपात में न हो।

4 यदि पुस्तकालय की चोड़ाई 8मी० से अधिक हो तो दोतरफा प्रकाश की व्यवस्था की जानी चाहिए।

5 खिड़कियों तथा दरवाजों के ऊपर बनाये जाने वाले छजजों की माप कम से कम इतनी होनी चाहिए कि सूर्य का प्रत्यक्ष प्रकाश तथा वर्षा की वोछारें किसी भी द्रष्टि में अन्दर न आ सकें।

6 सूर्य के प्रकाश से अवतरित किरणें यदि किसी भी दिशा से पुस्तकालय के अन्दर आ करके आँखों के सामने पड़ती है। ऐसी दशा में पेड़ पौधों को उचित ऊचाँई के पेड़ पौधों का प्रयोग किया जाना चाहिए।

7 पुस्तकालय के अन्दर एक समानता बनाए रखने हेतु अन्दर की दीवारों तथा खिड़कियों की चोखट का रंग इस प्रकार का होना चाहिए कि जो सूर्य के अन्दर आने वाले प्रकाश से मेल खाते हों।

पुस्तकालय उपस्कर

शिक्षण संस्था की पुस्तकालय में लगाये गये उपस्कर का शिक्षा के स्तर से बहुत निकट संबन्ध होता है अतः बैठने के लिए कुर्सियाँ आरामदायक तथा उचित ऊँचाई की होनी चाहिए। किसी भी पुस्तकालय में यह प्रयास किया जाना चाहिए कि कक्षा जैसा वातावरण न हो इस हेतु समान्य कक्षा में

उपयोग की जानी वाली मेजें तथा अन्य उपस्कर पुस्तकालय में उपयोग नहीं किये जाने चाहिए। समस्त शिक्षण संस्थाओं के पुस्तकालय में एक खुशनुमा माहोल बनाए रखने हेतु इस दिशा में परिपक्व व्यक्तियों की कल्पनाओं की मदद लेनी चाहिए।यह भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि यह सिर्फ भव्य ही न हों बल्कि उपयोगी भी हों। सम्पूर्ण पुस्तकालय में एक ही प्रकार की मेजों का उपयोग नहीं किया जाना चाहिए इसमें विविधता लाने हेतु आयताकार तथा वृत्ताकार मेजों का समागम किया जाना चाहिए। मेजों का माप नियमानुसार 5′ X 3.5″ से बड़ी नहीं होनी चाहिए। इस माप की मेज पर छः पाठको के बैठने की व्यवस्था की जा सकती है। बड़ी मेजे वस्थापित करने में कठिनाई पैदा करती है। पूर्व माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक विद्यालयो में मेजों की ऊँचाई 30 संन्तोषजनक होगी। छोटे विद्यार्थियों हेतु 28, 24 तथा 26 इंच की मेजों का भी उपयोग किया जा सकता है।

अध्याय – चार

नई शिक्षा नीति एवं नवोदय विद्यालय

नई शिक्षा नीति एवं नवोदय विद्यालय

शिक्षा राष्ट्रीय नीति का एक आवश्यक उपकरण है राष्ट्रीय नीति के विकास में शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है यदि कोई देश अपनी राष्ट्रीय नीति लोकतंत्र के रूप में घोषित करता है तो शिक्षा में लोकतन्त्र के अनुरूप उद्देश्यों, पाठ्यक्रमों एवं विधियों में परिवर्तन आवश्यक हो जाता है।

जनतन्त्र और शिक्षा –

हमारा देश 15 अगस्त सन् 1947 को आजाद हुआ और 26 जनवरी सन् 1950 को गणतन्त्र बना। वर्तमान में हमारा अपना संविधान एवं राष्ट्रीय नीतियां हैं। मुदालियर आयोग में जनतन्त्र के सन्दर्भ में शैक्षिक उद्देश्यों पर विस्तार से विचार किया है और जनतंन्त्रात्मक नागरिकता के विकास, नेतृत्व के विकास एवं व्यक्तित्व के विकास पर बल दिया है।

स्वतन्त्र भारत की प्रथम शिक्षा नीति :–

जुलाई 1968 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति की घोषणा की गयी। जिसे स्वतन्त्र भारत की प्रथम शिक्षा नीति कहा जाना चाहिए। कोठारी आयोग में अपने प्रतिवेदन में एक राष्ट्रीय प्रगति को तीव्र करने के लिए सबल, सुनिश्चित एवं सुविचारित शिक्षा नीति की आवश्यकता है। प्रथम शिक्षा नीति के कुछ प्रमुख बिन्दु इस प्रकार है।

1 **निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा** – संविधान की 45वीं नीति निर्देशक धारा की पूर्ति हेतु 14 वर्ष तक की आयु के बालक बालिकाओं की अनिवार्य शिक्षा का उल्लेख राष्ट्रीय नीति में किया गया है।

2 **शिक्षकों की स्थिति, वेतन एवं शिक्षा** – शिक्षको को समाज में सम्मान पूर्ण स्थान दिलाने के लिए शिक्षक की शिक्षा एवं उसके वेतन को उन्नत करने का प्रावधान होना चाहिए।

3 भाषाओं का विकास,

4 शैक्षिक अवसरों की समानता,

5 प्रतिभा की पहचान,

6 कार्यानुभव एवं राष्ट्र सेवा,

7 विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान इत्यादि।

स्वतन्त्र भारत की द्वितीय शिक्षा नीति :–

स्वतन्त्र भारत की प्रथम शिक्षा नीति के पश्चात् सन् 1999 में प्रवर्तित जनता सरकार की शिक्षा नीति को इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जाना चाहिए। यह शिक्षा नीति यह स्वीकार करती है कि सभी को अपनी क्षमता के अनुरूप पूर्ण विकास का अवसर मिलना चाहिए।

इस शिक्षा नीति की मुख्य विशेषताऐं निम्न हैं :–

1 शिक्षा का उद्देश्य – व्यक्ति को सच्ची उन्नति करने योग्य बनाना है तथा साथ ही सामाजिक कल्याण, स्वतंन्त्रता, समानता और सामाजिक न्यायों के प्रति भी सहायक होना चाहिए।

2. शिक्षा को राष्ट्रीय बनाया जाए जिससे प्रत्येक भारतीय चाहे वह किसी भी जाति, धर्म का हो अपनी परम्परा एवं संस्कृति के प्रति गर्व कर सके।

3. चौदह वर्ष तक के सभी बालक, बालिकाओं को निःशुल्क सार्वजनिक अनिवार्य शिक्षा दी जाय।

4. पाठ्यक्रम तथा शिक्षण अवधि को लचीला बनाया जाय।

5. त्रिभाषा सूत्र को अपनाया जाय।

6. इस नीति में 8+2+2 का शैक्षिक ढांचा स्वीकार किया गया है।

7. आन्तरिक मूल्यांकन को अधिकाधिक अपनाया जाय।

8. शिक्षा के सभी स्तरों पर क्षेत्रीय भाषाऐं शिक्षा का माध्यम हों इत्यादि।

स्वतन्त्र भारत की त्रतीय शिक्षा नीति *(नई शिक्षा नीति 1986)* –

जनवरी सन् 1985 में भारत सरकार ने नई शिक्षा नीति के निर्धारण का संकल्प लिया। अगस्त 1985 में "शिक्षा की चुनौती" नामक दस्तावेज प्रस्तुत हुआ जिस पर देश भर में विचार हुआ। सन् 1986 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति घोषित हुई। शिक्षा नीति के दस्तावेजों को निम्न 9 भागों में बांटा गया है।

1. भूमिका,

2. सामान्य मान्यताऐं,

3. शैक्षिक अवसरों की समानता,

4. शैक्षिक प्रक्रिया,

5. विभिन्न स्तरों पर शिक्षा का पुर्नगठन,

6. तकनीकी एवं प्रबन्ध शिक्षा,

7. प्राथमिकता के क्षेत्र,

8. संसाधन एवं पुनरावलोकन,

9. भविष्य।

किसी भी देश की राष्ट्रीय शिक्षा उस देश की आवश्यकताओं, मांगो के अनुकूल तथा राष्ट्र के उद्देश्यों एवं आदर्शो के अनुरूप होती है। यह हमारे सर्वागीण भौतिक एवं आध्यात्मिक विकास का मूल आधार है। भारत में राष्ट्रीय शिक्षा व्यवस्था से तात्पर्य है सभी छात्रों को बिना किसी जाति, धर्म, स्थान अथवा लिंग भेद के एक निश्चित स्तर तक तुलनीय कोटि की शिक्षा प्रदान करना।

चूंकि नई शिक्षा नीति का क्रियान्वयन आरम्भ हो गया है। अतः इसकी प्रमुख विशेषताओं की जानकारी यहाँ देना अत्यन्त आवश्यक है।

नई शिक्षा नीति की प्रमुख विशेषताऐं :-

1 ***शिक्षा का ढ़ाँचा*** – नई शिक्षा व्यवस्था में सारे देश के लिए एक समान शैक्षिक ढ़ांचे की व्यवस्था की गई है। इसे 10+2+3 का शैक्षिक ढ़ांचा कहते हैं।

2 ***राष्ट्रीय पाठ्यक्रम*** – राष्ट्रीय शिक्षा व्यवस्था सम्पूर्ण देश के लिए एक राष्ट्रीय पाठ्यक्रम ढ़ाचे पर आधारित होगी। इसमें एक समान कोर पाठ्यक्रम होगा। इसके अन्तरगत भारतीय स्वतंन्त्रता आन्दोलन का इतिहास, सम्विधान के प्रति कर्तव्य एवं उत्तरदायित्व तथा राष्ट्रीय पहिचान से सम्बन्धित महत्वपूर्ण बातों का समावेश किया गया है। इसके द्वारा छात्रों में न केवल अपने देश की संस्कृति के प्रति चेतना जाग्रत होगी, बरन उसमें राष्ट्रीय एकता का भी विकास होगा।

3 ***शिक्षा में समानता*** – नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति इस बात पर जोर देती है कि शिक्षा सर्वसुलभ करायी जाय। यही कारण है कि महिलाओं, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अल्पसंख्यक, पिछडे वर्ग के लोगों तथा विकलांगों की शिक्षा के लिए इसमें विशेष व्यवस्था की गयी है।

4 ***शिक्षा का लोकव्यापीकरण*** – नई शिक्षा नीति में इसे गम्भीरता से लिया गया है। तथा इस बात का संकल्प लिया गया है कि सन् 1990 तक 6 से 11 वर्ष तथा 1995 तक 11 से 14 वर्ष तक की आयु वर्ग के सभी बच्चों के लिए निःशुल्क अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था कर दी जायगी।

5 *औपचारिकेत्तर शिक्षा* – कक्षा 9 से 14 वर्ष के ऐसे बच्चे जिन्होंने बीच में किसी कारण बस पढ़ाई छोड़ दी या वहाँ शिक्षा का कोई साधन उपलब्ध नहीं था, नई शिक्षा नीति में औपचारिकेत्तर शिक्षा केन्द्रों के माध्यम से शिक्षित किये जायेंगे।

6 *महिला शिक्षा* – नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में महिला शिक्षा को बहुत प्रोत्साहन दिया गया है। विभिन्न स्तरों पर तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा में भी महिलाओं की भागीदारी पर जोर दिया जायगा।

7 *रोजगार परक शिक्षा* – नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में 10+2 स्तर पर कक्षा 11वीं और 12वीं में शिक्षा के व्यवसायीकरण की व्यवस्था है। इसमें उच्चतर माध्यमिक स्तर पर सन् 1990 तक 10 प्रतिशत तथा 1995 तक 20 प्रतिशत छात्रों को व्यावसायिक शिक्षा उपलब्ध करायी जाय।

8 *नवोदय विद्यालय* – नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अन्तरगत नवोदय विद्यालयों की स्थापना एक अभिनव कदम है। इन्हें 'पेस सेटिंग स्कूल' या गति निर्धारक विद्यालय भी कहते हैं। कुछ छात्र ग्रामीण क्षेत्रों में अध्ययनरत रहने तथा आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण उच्चकोटि की शिक्षा से वंचित रह जाते हैं। इन बच्चों के लिए निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था के रूप में नवोदय विद्यालयों की स्थापना की गयी हैं। यह

आवासीय विद्यालय रहेंगे तथा क्रमशः आरम्भ किये जायेंगे। प्रत्येक जिले में एक नवोदय विद्यालय खोलने की शासन की योजना है। इसमें अनुसूचित तथा अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षण की व्यवस्था होगी। साथ ही इसमें 20 प्रतिशत बच्चे एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश में जायेंगे। जो राष्ट्रीय एकता और सदभवना का विकास करने में सहायक होगें।

9 *आपरेशन ब्लैक बोर्ड* – नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में प्राथमिक विद्यालयों को दी जाने वाली सुविधाओं के अन्तरगत ***"आपरेशन ब्लैक बोर्ड"*** एक नये तरह का प्रयोग किया गया है। इसके अन्तरगत प्राथमिक विद्यालयों में कम से कम 2 शिक्षकों एवं उनके प्रशिक्षण की व्यवस्था भी करनी होगी।

10 *संस्कृति पोषण तथा मूल्य शिक्षा* – नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति की यह सम्भवतः सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है जो आज के सन्दर्भ में हमारे छात्रों के लिए एक अनिवार्य आवश्यकता बन गई है। आज जब हमारी नयी पीढ़ी विज्ञान एवं तकनीकी को प्रमुख्ता से अपनाने जा रही है। उसे अपने देश के इतिहास एवं संस्कृति से जोड़े रखना अत्यन्त आवश्यक है।

नई शिक्षा नीति के उद्देश्य :–

दुर्भाग्य ही कहा जाना चाहिए कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के पांच दशक बाद विभिन्न आयोगों के गठित होने के बाद भी भारतीय शिक्षा का स्वरूप निश्चित नहीं हो पाया है। डॉ. राधाकृष्णन की अध्यक्षता में 1948 में विश्व विद्यालय शिक्षा आयोग, डॉ. लक्ष्मण स्वामी मुदालियर की

अध्यक्षता में 1953 में माध्यमिक शिक्षा आयोग तथा 1964–66 में कोठारी शिक्षा आयोग ने अपनी–अपनी संस्तुतियां प्रस्तुत कीं। 1948 में परीक्षा सुधार को तथा 1953 में बहुउद्देश्यीय माध्यमिक शिक्षा को सर्वोच्च महत्व दिया गया। कोठारी शिक्षा आयोग ने शिक्षा के सामान्य स्वरूप के साथ ही शिक्षा की गुणवत्ता पर जोर दिया। इस बीच राष्ट्रीय भावनात्मक एकता समिति, संस्कृत शिक्षा आयोग, ग्रामीण उच्च शिक्षा समिति, कार्यालय भाषा आयोग, पुस्तकालय भाषा, सम्पर्क भाषा आदि मुद्दों पर भिन्न–भिन्न दिशाओं में प्रयास किये गये विभिन्न राज्य सरकारों ने भी अपने स्तर पर प्रयास शुरू किये जिनमें उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा गठित आचार्य नरेन्द्र देव की अध्यक्षता में गठित शिक्षा समिति महत्वपूर्ण है।

20 अप्रैल 1986 को लोक सभा में प्रस्तुत की गयी शिक्षा नीति के निम्नांकित उद्देश्य बतायें गये है।

1 व्यवसाय पर आधारित शिक्षा का विकास,

2 नई एवं परिवर्तित तकनीक के अनुरूप जनशक्ति को प्रशिक्षित करना,

3 निरक्षरता के निवारणार्थ बहुलक्षीय प्रयास।

1 व्यवसाय पर आधारित शिक्षा का विकास – इस उद्देश्य के तहत बालक का आरम्भ से ही रूझान ज्ञात कर, उसको उस धन्धें में ही कुशलता हासिल कराई जाय। सही व्यवसाय का चयन ही बालक को सर्वाधिक सन्तोष एवं सफलता प्रदान करेगा। इस दृष्टि से बालक के जीवन में व्यवसाय चयन का

निर्णय अत्यन्त महत्वपूर्ण घटना है। इसी आधार पर वर्तमान पठ्यक्रम में विज्ञान एवं तकनीक का समावेश किया जाना चाहिए। प्रयत्न किया जाय कि दसवीं कक्षा उत्तीर्ण सभी विद्यार्थी साहित्य या विज्ञान या वाणिज्य विषयों में प्रवेश पाने के लिए उत्सुक न रहें। इन विद्यार्थियों के 50 प्रतिशत भाग को ही इस उदार शिक्षा के पाठ्यक्रमों में प्रवेश दिया जाय तथा शेष 50 प्रतिशत को निश्चित रूप से व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए तैयार किया जाय।

2 *नई एवं परिवर्तित तकनीक के अनुरूप जनशक्ति को प्रशिक्षित करना* – नई शिक्षा नीति में कम्प्यूटरीकरण पर जोर दिया गया है। शिक्षा देने में अर्थात् साक्षरता के विकास में इस तकनीक का भरपूर उपयोग किया जायगा। सेटेलाइट एवं पत्राचार से शिक्षा का और अधिक सीमा तक विकास किया जायेगा। अन्य देशों से प्रतिस्पर्द्धा के लिए उच्च तकनीक तथा कम्प्यूटरीकरण का उपयोग करना होगा। जिससे आने वाली पीढ़ी भी अपने आपको सक्षम बना सके तथा 21वीं सदी के लिए तैयार हो सके।

3 *निरक्षरता के निवारणार्थ बहुलक्षी प्रयास* – नई शिक्षा नीति के अनुसार शिक्षा के प्रचार–प्रसार के लिए हर स्तर पर स्वैक्षिक प्रयासों का स्वागत किया जायगा। निम्न स्तर पर शिक्षा देने वाली संस्थाओं (तकनीकी शिक्षा, चिकित्सा शिक्षा, अभियन्त्रिकी शिक्षा, समाज कार्य शिक्षा) पर सम्बन्धित शिक्षा की भारतीय

परिषद का संस्थान को रोक लगाने के लिए सक्षम बनाया जायगा।

शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का एक सबल घटक है और सामाजिक परिवर्तन में शिक्षा की भूमिका महत्वपूर्ण है। मानवता की रक्षा के लिए नैतिक मूल्यों का विकास परम आवश्यक है। शिक्षा विदों का आग्रह है कि नैतिक शिक्षा सूचनामात्र ही न बन जाय। अतः नैतिक शिक्षा की व्यवस्था अन्य विषयों के माध्यम से, जब और जहाँ सहज ही अवसर प्राप्त हो जाय की जानी चाहिए।

नई शिक्षा नीति में प्रौढ़ शिक्षा पर विशेष जोर दिया गया है। 15 से 35 वर्ष के आयु वर्ग के प्रौढ़ों के लिए साक्षरता कार्यक्रम के साथ–साथ सतत शिक्षा का एक व्यापक कार्यक्रम नई शिक्षा नीति के अन्तरगत निर्धारित किया गया है। इसके अन्तरगत ग्रामीण क्षेत्रों में सतत शिक्षा केन्द्रों की स्थापना नियोक्ताओं द्वारा श्रमिकों की शिक्षा, पुस्तकों तथा पुस्तालयों का विस्तार, रेडियों, दूरदर्शन के माध्यम से शिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया जाय।

नई शिक्षा नीति और ग्रन्थालय :–

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) की घोषणा के साथ ही भारतीय शैक्षणिक विकास के इतिहास में नये आयाम स्थापित करने की जी तोड़ कोशिश की जा रही है। नई शिक्षा व्यवस्था प्रारम्भ करने के पीछे भारत सरकार का प्रयास है कि सम्पूर्ण देश में शिक्षा में व्याप्त विसंगतियों में

एकरूपता आए और यह एक रूपता शिक्षा में क्रान्ति जाने में सहायक सिद्ध हो सके।

पाठ्यक्रमों में परिवर्तन शिक्षा में व्यवसायीकरण, औद्योगिक एवं तकनीकी शिक्षा की व्यवस्था, दूरस्थ शिक्षा, निरक्षरों के लिए सतत शिक्षा के खुले अवसर, दूरदर्शन व दूरसंचार, आडियो एवं वीडियो द्वारा सभी लोगों को शिक्षित करने का कार्यक्रम 'शिक्षा की चुनौती' में शामिल है। इस व्यापक कार्यक्रम में प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च एवं सतत् शिक्षा देने तक उन तमाम शैक्षणिक सुविधाओं की व्यवस्था का प्रबन्ध है जो ब्लैक बोर्ड आपरेशन से लेकर घर–घर तक विभिन्न माध्यमों से पाठ्य सामग्री पहुँचाने की बात से ताल्लुक रखती है।

ग्रन्थों पर पत्र–पत्रिकाओं के अध्ययन की सीधी सुविधा अथवा वाचनालय व ग्रन्थालयों का सीधा तालमेल, नई शिक्षा पद्यति में शिक्षार्थियों के साथ रखा गया हो, ऐसा महसूस नहीं होता। पूर्व से चली आ रही शिक्षा प्रणालियों में आयोग की अनुशंसा के बाबजूद ग्रन्थालय के विकास पर ध्यान नहीं दिया गया।

नई शिक्षा नीति विद्यालय भवनों, शिक्षकों, नये विषयों के खोलने तथा कम्प्यूटर से सम्बद्ध करने आदि कार्यक्रमों को चलाने की बात तो करती है, पर उन लोगों के लिए, उन छात्रों के लिए जो शिक्षा की बुनियादी तालीम हासिल कर रहे है उन्हें जीवन–जगत, विज्ञान–जगत के ताजा घटनाक्रमों, राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय हलचलों एवं सामान्य व विशिष्ट ज्ञान को विकसित करने की कोई बात करते नजर नहीं आते।

जहाँ एक ओर एकीक्रत पाठ्यक्रम, शिक्षा में समान अवसर, आर्थिक एवं सामाजिक विषमता का अन्त, आदर्श विद्यालय की स्थापना एवं निरक्षरता निवारण हेतु खुले विश्वविद्यालयों की स्थापना नई शिक्षा का उद्देश्य है। तब ज्ञान विज्ञान में श्रेष्ठता लाने हेतु जो कुछ पाठ्यक्रम आधारित कक्षा में पढ़ाया जा रहा है, कक्षाओं में लिखाया जा रहा है वह परीक्षा में उत्तीर्ण होने के उद्देश्य से ठीक है, परन्तु ज्ञान पाने की दृष्टि से प्र्याप्त नहीं है। उन्हें कक्षाओं से निकाल कर ग्रन्थालय कक्षों तक विषय के गहन अध्ययन हेतु लाया जाना चाहिए। एक ही विषय की अनेक पुस्तकों को ग्रन्थालय में देखने, पढ़ने व उनके बारे में परामर्श करने में जो भी ग्रहण किया जाता है। उसमें स्थायित्व आता है, अतः छात्रों को ज्ञान जगत के विषयों को पढ़ने का अवसर भी उसी प्रकार दिया जाना चाहिए जिस प्रकार वह देश की अनेक बोली, भाषा, धर्म व संस्कृति से जुड़ रहा है। यही उसका सांस्कृतिक परिवेश निर्मित होगा।

इन्हीं महत्वपूर्ण मुद्दों के साथ नई शिक्षा नीति के स्वरूप एवं प्रणालियों में तकनीकी परिवर्तन की दृष्टि से डॉ. सुभाष चन्द्र वर्मा ने सुझाव दिया है कि प्राथमिक विद्यालय जाने वाले बच्चे जितने समय अपनी कक्षा में समय व्यतीत करते हैं उसकी बजाय उन्हें कम से कम आधा समय ग्रन्थालयों में व्यतीत करने के लिए अनुमति दी जानी चाहिए।

यह इस लिए भी जरूरी है कि बच्चों को स्वतन्त्र सोच एवं उन्मुक्त अध्ययन की प्रवृत्ति विकसित करने के लिए उन्हें ग्रन्थालयों के संसर्ग में लाना अत्यन्त आवश्यक है। जिस प्रकार छात्रों के शारीरिक एवं मानसिक विकास के लिए माँ का पौष्टिक दूध आवश्यक है उसी प्रकार विद्यालय के बच्चों के वौद्धिक विकास के लिए ग्रंथों में संग्रहित पाठ्य सामग्री का अध्ययन करने के लिए ग्रन्थालयों का उपयोग अति आवश्यक है।

यह भी अति आवश्यक है कि अन्य सुविधाओं के साथ अध्ययन के सुअवसर विद्यार्थियों को दिये जायें, उनमें ग्रन्थलय भी एक प्रमुख हिस्सा होगा। वैज्ञानिक सूचना एवं प्रौद्योगिकी की नवीनतम जानकारी हेतु हम यदि विद्यालयों में कम्प्यूटर व आडियों एवं वीडियो कैसेट आदि की व्यवस्था कर रहे है। तब ग्रन्थालयों को भी ज्ञान की सामग्री से अद्यतन व आधुनिक बनाना नई शिक्षा नीति में जरूरी है। डा0 आर0के0 पोद्दार के अनुसार हर जिले में एक माडल स्कूल बनाने के विचार छोड़ कर विना भेद भाव किये हर स्कूल से किताब, पुस्तकालय, प्रयोगशाला और खेलों की आवश्यक सुविधाऐं जुटाई जायें।

शिक्षा में चुनौती अथवा ज्ञान पाने के लिए नई शिक्षा नीति में ग्रन्थालयों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कुछ सुझाव दिये गये हैं। ताकि ग्रन्थालय विद्यार्थियों के सम्पूर्ण विकास में मददगार साबित हो सकें।

1. शिक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, व्यापार आदि के विकास सम्बन्धी सूचना पाने के लिए ग्रन्थालयों का आधुनिकीकरण करना होगा।

2. कला, संगीत, साहित्य, धर्म एवं संस्कृति के विश्लेषण हेतु ग्रन्थालयों में सन्दर्भ ग्रन्थों व कक्षों का निर्माण होना चाहिए।

3. स्कूली बच्चों के समय में कम से कम आधा समय ग्रन्थालय परामर्श के लिए दिया जाय।

4. ग्रन्थालयों को वैज्ञानिक आधार देने के लिए तकनीकी सहायकों की मदद ली जाय।

5. ग्रन्थालय चूंकि शिक्षा के सामुदायिक केन्द्र होते हैं अतः ग्रन्थालयों को अपनी पूर्ण क्षमता व साधन – सुविधाओं के साथ सेवाऐं प्रदान की जानी चाहिए।

6. बिना ग्रन्थालयों के शिक्षा अधूरी है, अध्ययन अपूर्ण है, और ज्ञानार्जन असम्भव है। अतः जीवन के शैक्षणिक दौर में ग्रन्थों व ग्रन्थालयों का वैज्ञानिक विकास ही उच्च शिक्षा में गुणात्मक विकास ला सकता है ग्रन्थालयों पर ध्यान न दिया जाना विद्यार्थियों को अंधेरे में रखने जैसा होगा।

नई शिक्षा नीति का ग्रन्थालयों पर प्रभाव :–

भारत सरकार ने मई 1986 को नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति की घोषणा की थी जो कि एक प्रकार से वर्तमान स्थितियों में सभी पहलुओं से सम्बन्धित रही है। इस शिक्षा नीति में दूरस्थ शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा एवं स्वायत्तशासी महाविद्यालयों की पद्यति के अनुसरण करने पर अधिक जोर

दिया गया है। इस नीति में एक नवीन शिक्षा व्यवस्था पर व्यापक रूप से विचार कर क्रियान्वयन करने पर जोर दिया गया था, अतः ग्रन्थालयों की स्थिति पर अधिक ध्यान नहीं दिया जा सका। इस राष्ट्रीय नीति में एक संक्षिप्त संस्तुति की गयी है – पुस्तकों के विकास के साथ ही साथ पूरे राष्ट्र में कार्यरत ग्रन्थालयों के उन्नयन एवं विकास तथा नवीन ग्रन्थालयों की स्थापना के आन्दोलन को राष्ट्रीय स्तर पर प्रारम्भ किया जायगा। सभी शिक्षा संस्थानों में ग्रन्थालय सुविधा को उपलब्ध कराने का प्रावधान किया जायगा। और ग्रन्थालियों के स्थान एवं पद को भी समुन्नत किया जायगा।

यद्यपि इस राष्ट्रीय शिक्षा नीति में ग्रन्थालयों को शिक्षण संस्थाओं का महत्वपूर्ण अंग माना जाने पर भी विशेष ग्रन्थालय एवं सूचना प्रणाली नीति का उल्लेख नहीं किया गया, तथापि इसके क्रियान्वयन एवं परिपालन कार्यक्रमों के परिप्रेक्ष्य में शिक्षण संस्थाओं में ग्रन्थालयों के विकास के कुछ पक्षों पर ज़ोर दिया गया है।

प्रमुख समितियों एवं आयोगों की ग्रन्थालय विकास एवं स्थापना की संस्तुतियाँ :–

ग्रन्थालयों के विकास तथा उनकी उपयोगिता बढ़ाने के दृष्टिकोण से समय–समय पर शासन द्वारा अनेक स्तरों पर तदर्थ समितियों का गठन किया जाता रहा है जिनका लक्ष्य पूर्णतः प्रकाश डालकर सुझाव एवं संस्तुतियां करना रहा है, जिससे इस दिशा में समुचित कदम उठाया जा सके। ऐसी समितियों ने तत्कालीन ग्रन्थालय प्रणालियों की समीक्षा वर्तमान स्थितियों एवं आगामी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए पूर्व की कमियों एवं उनके सुधारों के परिप्रेक्ष्य में अनेक सार्थक सुझाव एवं संस्तुतियां

प्रस्तुत की है। शासन द्वारा सिद्धान्तिक रूप से उन समितियों के सुझावों एवं संस्तुतियों को मान्य भी किया है। लेकिन इन समितियों की भूमिका मात्र परामर्शदायी होने के कारण उनके सुझावों को शासन द्वारा क्रियान्वित करने की दिशा में अधिक ध्यान नहीं दिया। तथापि ऐसी समितियों ने ग्रन्थालय आन्दोलन तथा उनकी सेवाओं की उपादेयता की समस्याओं की ओर शासन तथा नियोजकों का ध्यान आकर्षित किया है। और आवश्यक क़दम उठाने हेतु दिशा भी प्रदान की है। अतः ऐसी समितियों एवं आयोगों की संस्तुतियों, सुझावों एवं ग्रन्थालयों की वृहद समीक्षा का अवलोकन करना अति आवश्यक प्रतीत होता है। कुछ महत्वपूर्ण समितियो एवं आयोगों के योगदान का उल्लेख यहाँ संक्षेप में करना उचित होगा।

शैक्षिक ग्रन्थालय तथा इनकी समितियां एवं आयोग :–

भारत में सेकेण्ड्री स्कूलों/उच्च माध्यमिक स्कूलों में ग्रन्थालयों की ओर ब्रिटिश शासनकाल में किसी प्रकार का ध्यान नहीं दिया गया था जब कि ग्रन्थालयों की उपयोगिता से लोग सुपरिचित थे। स्वतन्त्रता के पश्चात् भारत में सर्वप्रथम इस दिशा में ग्रन्थालयों का स्कूलों में क्या स्थान होना चाहिए उसको सुनिश्चित करने में शासन का ध्यान आकर्षित हुआ जिसे सेकेण्ड्री एजूकेशन कमीशन (Secondry Education Commission October 1952-June 1953) के अन्तरगत निर्धारण किया गया है। इस आयोग के अध्यक्ष विख्यात शिक्षाविद और चिकित्सा वैज्ञानिक मद्रास विश्वविद्यालय के तत्कालीन कुलपति डा0 ए0 लक्ष्मण स्वामी मुदालियर थे।

ब्रिटिश कालीन भारत के कुछ शिक्षा आयोगों में भी ग्रन्थालयों की स्थिति पर प्रकाश डाला गया है और उन्हें विकसित करने पर जोर दिया गया है। इनमें से कुछ प्रमुख निम्नांकित हैं –

1 *एजूकेशन कमीशन* :– ब्रिटिश शासन काल में 1857 में विश्वविद्यालयों की स्थापना के पश्चात सर्वप्रथम उच्च शिक्षा के क्षेत्र में सुधार लाने की दृष्टि से आवश्यक कदम उठाने के लिए संस्तुति एवं सुझाव प्रस्तुत करने के लिए तत्कालीन गवर्नर जनरल एवं वाइसराय लार्ड रिपन (Lord Ripon) ने 3 जनवरी 1882 को इस शिक्षा आयोग का गठन किया था। जिसका अध्यक्ष हन्टर (W.W.Hunter) को नियुक्त किया गया था। इस आयोग में 21 सदस्यों को पामित किया गया था।

इस आयोग ने तत्कालीन सेकेण्ड्री स्कूलों और कालेज के ग्रन्थालयों की स्थिति को इस आयोग के प्रतिवेदन में अशोचनीय अवस्था में दर्शाया गया है। और इस दिशा में आवश्यक कदम उठाने मात्र का सुझाव दिया गया है इसे हंटर कमीशन के नाम से भी जाना जाता है। लेकिन इसका क्षेत्र ग्रन्थालयों का नहीं था।

2 *इण्डियन यूनिवर्सिटी कमीशन* :– इसे रैले कमीशन के नाम से भी जाना जाता है। इस आयोग का गठन 27 जनवरी 1902 को तत्कालीन वाइसराय एवं गवर्नर जनरल लार्ड करजन ने किया था, जिसका अध्यक्ष रैले (Sir Thomas Raleigh) को नियुक्त किया गया था। इस आयोग का उद्देश्य

विश्वविद्यालयी शिक्षा में सुधार लाने एवं उन्हें विकसित करने के सुझावों एवं संस्तुतियों को प्रस्तुत करना था। जिसके परिणाम स्वरूप 1904 में इण्डियन यूनीवर्सिटी एक्ट पारित किया गया था। इस आयोग में कालेजों और विश्वविद्यालयों में ग्रन्थालयों के उत्थान की दृष्टि से सुधार लाने के लिए सन्दर्भ ग्रन्थालयों की पद्यति अपनाने पर अधिक जोर दिया गया था।

3 *सैडलर कमीशन* :— इसे कलकत्ता यूनिवर्सिटी कमीशन (Calcutta University Commission 1917-1919) भी कहते हैं। इस आयोग का अध्यक्ष ब्रिटेन के यूनीवर्सिटी आफ लीड्स के तत्कालीन कुलपति डा0 एम0ई सैडलर (Dr. M.E.Sadler) सचिव जी0 एण्डरसन, (G.Anderson) ब्रिटिश कालीन शिक्षा विभाग के सहायक सचिव थे। न्यायमूर्ति सर आंशुतोष मुखर्जी (कुलपति कलकत्ता विश्वविद्यालय) तथा मोहमडन एग्लो ओरेन्टियल कालेज, अलीगढ़ (वर्तमान में अलीगढ़ मुस्लिम यूनीवर्सिटी) के गणित के प्रोफेसर डा0 जियाउद्दीन अहमद भी इस आयोग के भारतीय सदस्य थे। इस आयोग में ग्रन्थालयों को समुन्नत बनाने और शैक्षणिक ग्रन्थालयों को शिक्षा एवं अनुसंधान के एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में मान्य किया गया है जिसका प्रत्येक शैक्षिक संस्थओं में होना आवश्यक माना गया है।

4 *सेकेण्ड्री एजूकेशन कमीशन* :— (Secondary Education Commission : 1952- 1953, chairman Dr. A.L. Mudaliar) स्कूलों में ग्रन्थालयों के योगदान एवं महत्व पर

सर्वप्रथम प्रकाश डालने का श्रेय सेकेण्ड्री एजूकेशन कमीशन को है, जिसका गठन 1952 में किया गया था और जिसके अध्यक्ष विश्वविख्यात शिक्षाविद एवं चिकित्सक डा0 ए0लक्ष्मण स्वामी मुदालियर थे। डा0 मुदालियर 25 वर्षों तक मद्रास विश्वविद्यालय के कुलपति भी रहे थे। इस आयोग ने स्कूलों एवं सेकेण्ड्री स्कूलों के ग्रन्थालयों की सोचनीय स्थित का उल्लेख किया है। इसने छात्रों में अध्ययन की अभिरूचि जाग्रत करने के प्रयास पर अधिक जोर दिया है और स्कूलों में उत्तम प्रकार के ग्रन्थालयों की स्थापना किया जाना अति आवश्यक बताया है। छात्रों को ग्रन्थालय का उपयोग करने में प्रोत्साहन प्रदान करने के लिए प्रभावशील एवं प्रज्ञापूर्ण ग्रन्थालय सेवा का प्रावधान किये जाने पर अधिक जोर दिया है। छात्रों में व्यक्तिगत कार्यो, सामूहिक परियोजनाओं के निष्पादन एवं पूर्ति, शैक्षणिक अभिरूचियों तथा पाठ्यक्रमों से सम्बन्धित अन्य क्रिया कलापों के निष्पादन हेतु सम्बृद्धशाली और सक्रीय ग्रन्थालय की बड़ी ही आवश्यकता है जिसका प्रावधान किया जाना चाहिए।

इस आयोग द्वारा यह भी जोर दार संस्तुति की गयी कि प्रत्येक सेकेण्ड्री स्कूल में एक केन्द्रीय ग्रन्थालय की स्थापना अवश्य की जानी चाहिए। जिनका संचालन एवं व्यवस्था प्रशिक्षित एवं योग्य ग्रन्थालयी के द्वारा की जानी चाहिए।

इस आयोग ने इस प्रकार का भी सुझाव दिया कि छोटे–छोटे स्थानों पर स्कूल ग्रन्थालयों की स्थापना करना

अति मितव्ययी सिद्ध होगा और ऐसे ग्रन्थालय सार्वजनिक ग्रन्थालय का भी कार्य करेंगे जिससे स्थानीय लोगों को सार्वजनिक सेवा प्राप्त हो सके।

5 *विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग :–* (University Education Commission December 1948 to August 1949 : Chairman :Dr. S.Radhakrishnan) विश्वविद्यालयी प्ररिप्रेक्ष्य में शैक्षिक ग्रन्थालयों की दृष्टि से यूनिवर्सिटी एजूकेशन कमीशन 1948–49 जिसके अध्यक्ष डा0 एस0 राधाकृष्णन रहे हैं, ने शैक्षिक प्रणाली एवं वातावरण में ग्रन्थालयों की भूमिका एवं महत्व पर सविस्तार विशेष रूप से प्रकाश डाला है। इस आयोग ने स्नातक उपाधि को त्रिवर्षीय करने की सिफरिस की। इस आयोग ने विश्वविद्यालयी ग्रन्थालयों को विश्वविद्यालय का ह्रदय कहा है। इस आयोग ने इस तथ्य को अत्यन्त महत्वपूर्ण माना है कि ज्ञान/सूचना की प्राप्ति और खोज करने के लिए ग्रन्थालय का उपयोग करने की प्रविधियों और श्रोतों तथा उपकरणों को किस प्रकार उपयोग में लाया जाता है इसकी जानकारी अति आवश्यक है।

6 *एजूकेशन कमीशन : एजूकेशन एण्ड नेशनल डेवलपमेन्ट –* (Education Commission : Education and National Development : 1964-66 : Chairman Dr. D.S.Kolhari) इसे कोठारी कमीशन के नाम से जाना जाता है। इस आयोग में भी उच्च शिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में ग्रन्थालय की भूमिका एवं योगदान पर प्रकाश डाला गया है।

विश्वविद्यालयी एवं महाविद्यालयी ग्रन्थालयों के उन्नयन एवं सुधार के लिए इस शिक्षा आयोग में ग्यारह महत्वपूर्ण एवं उपयोगी सुझाव तथा संस्तुतियां प्रस्तुत की गयी हैं।

7 *विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ग्रन्थालय समिति : रंगानाथन कमेटी* – (UGC Library Committee University and College Library : Chairman Dr. S.R. Ranganathan) शैक्षिक ग्रन्थालयों के परिप्रेक्ष्य में सबसे अधिक पहरपूर्ण, विस्त्रत एवं महत्वपूर्ण विश्वविद्यालयी एवं महाविद्यालयी ग्रन्थालयों से सम्बन्धित प्रलेख विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ग्रन्थालय समिति का प्रतिवेदन है जिसके अध्यक्ष डा0 एस0आर0 रंगनाथन स्वयं थे।

इस प्रतिवेदन में सर्वप्रथम ग्रन्थालयों में कर्मियों से सम्बिन्धित "कार्मिक सूत्र" को भी स्पष्ट किया गया है। यह कार्मिक सूत्र ग्रन्थालयों के कर्मियों के कार्यों तथा ग्रन्थाालयों के आकार तथा संकलन आदि को दृष्टिगत रखते हुए प्रतिपादित किया गया था।

नवोदय विद्यालय के ग्रन्थालयों की कार्यप्रणाली :–

विद्यालय ग्रन्थालय से तात्पर्य, जहाँ पढ़ने वाले पाठक विद्यार्थी होते है जिनकी आयु सामान्यतः 6 से 16 वर्ष के मध्य होती है तथा जो कक्षा 6 से लेकर कक्षा 12 तक के विद्यार्थी होते है। यह सभी विद्यार्थी ग्रन्थालय की दृष्टिकोण से नवागन्तुक होते हैं। जिनमें अपने विषयों को

चुनन, पाठ्य सामग्री को ढूंढने तथा उसका उपयोग करने का ज्ञान नहीं होता है। अतः एक कुशल ग्रन्थालयी का यह उत्तरदायित्व बनता है कि वह इस तरह आने वाले नवागन्तुको की सुख सुविधओं, उनके स्तर के अनुसार पाठ्य सामग्री, एवं फर्नीचर आदि की व्यवस्था सुनिश्चित कराये तथा नवागुन्तकों में पठन पाठन की प्रवृत्ति को जाग्रत करने के हर सम्भव प्रयास करे।

विद्यालय पुस्तकालय में पुस्तकालय का उपयोग करने वाले विद्यार्थी चूंकि वालक होते हैं अतः उनकी सुविधानुसार पुस्तकालय का समय सुवह 8 बजे से 12 बजे तक सायं 1:30 बजे से 4 बजे तक का रखा जाता है। नवोदय विद्यालय पुस्तकालयों में भी इन सभी बातों का विशेष ध्यान रखा जाता है। फर्नीचर, पुस्त्कालय भवन, पाठ्य सामग्री, हवा एवं पानी की व्यवस्था, तथा पत्र–पत्रिकाओं आदि का चयन विद्यार्थियों को ध्यान में रख कर किया जाता है तथा साथ में नवोदय विद्यालय पुस्तकालध्यक्ष द्वारा ग्रन्थालय के उपयोग, पाठ्य सामग्री का चयन आदि का प्रशिक्षण पूर्व में ही विद्यार्थियों को कराया जाता है।

नवोदय विद्यालय ग्रन्थालयों की सेवाऐं :–

नवोदय विद्यालय ग्रन्थालय द्वारा विद्यार्थियों को उनकी आवश्यकतानुसार वे सभी सेवाऐं प्रदान की जाती है, जो विद्यालय प्रशासन द्वारा विद्यालय पुस्तकालयों को संसाधन उपलब्ध कराये जाते हैं। नवोदय विद्यालय ग्रन्थालय द्वारा पाठकों को दी जाने वाली कुछ प्रमुख सेवाऐं निम्नांकित हैं :–

1 पाठ्य सामग्री के आदान प्रदान की सेवा।

2 पत्र–पत्रिकाओं एवं समाार पत्र आदि की व्यवस्था करना।

3 नवागुन्तकों हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम।

4 छाया प्रति सेवा।

5 सन्दर्भ सेवा आदि।

नवोदय विद्यालय ग्रन्थालियों का वेतनमान :–

नयी शिक्षा नीति 1986 के अनुसार नवोदय विद्यालय ग्रन्थालयियों को प्रशिक्षित स्नातक शिक्षकों के समकक्ष रख गया है। वर्तमान आयोग के अनुसार नवोदय विद्यालय ग्रन्थालयियों को वेतनमान 5500–125–8000 की श्रेणी में रखा गया है। चूंकि सभी नवोदय विद्यालय ग्रामीण आंचलों में, शहर से काफी दूर होते है अतः शिक्षकों एवं अन्य कर्मचारियों को निःशुल्क आवास सुविधा उपलब्ध है। अतः ग्रन्थालयी को भी निःशुल्क आवास सुविधा प्रदान की जाती है।

यह दुर्भाग्य की बात है कि एक तरफ नवोदय विद्यालय में प्रशिक्षित ग्रन्थालयियों की ही नियुक्ति का प्रावधान नयी शिक्षा नीति में किया गया है। तथा विद्यालयों में ग्रन्थालयों की अनिवार्यता पर भी समुचित ध्यान दिया है लेकिन विद्यालय ग्रन्थालयियों को उचित वेतनमान की व्यवस्था नहीं की गयी है। जिसके परिणाम स्वरूप या तो नवोदय विद्यालय ग्रन्थालयों में प्रशिक्षित ग्रन्थालयी जाते नहीं है या फिर कुछ समय काट कर अन्य किसी अच्छी संस्था में नियुक्ति प्राप्त कर चले जाते हैं जिससे नवोदय विद्यालय ग्रन्थालयों में समुचित विकास की धारा अवरूध हो जाती है।

अध्याय–पाँच

नवोदय ग्रन्थालयों का विवेचनात्मक अध्ययन

नवोदय ग्रन्थालयों का विवेचनात्मक अध्ययन

वर्तमान समय में मानव संसाधन विकास मत्रालय के आधीन कार्यरत जवाहर नवोदय विद्यालय समिति द्वारा पूरे भारत वर्ष के विभिन्न राज्यों के अनेकों जिला मुख्यालयों में लगभग 423 विद्यालय स्थापित किये जा चुके हैं। चूंकि यह विद्यालय केन्द्र सरकार द्वारा चलाये जा रहे हैं जिनका मुख्य उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले उन बच्चों को सम्पूर्ण शिक्षा प्रदान करना है, जो निर्धन एवं गरीब हैं। सम्पूर्ण भारत वर्ष में संचालित सभी जवाहरण नवोदय विद्यालय एक ही शिक्षा पद्यति, केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद दिल्ली द्वारा संचालित किये जाते हैं। इन सभी विद्यालयों में एक ही शिक्षा पद्यति होने के कारण विद्यालयों का पाठ्यक्रम, प्रवेश परीक्षा पद्यति, शिक्षण एवं प्रशिक्षण, उनकी योग्यता, विद्यार्थियों हेतु पुस्तकालय सुविधा, वार्षिक वजट तथा नियम एवं कानून सभी विद्यालयों में एक समान रूप से अपनाये जाते हैं। इस लिए इन सभी विद्यालयों में चाहे वह उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, पंजाब, दिल्ली तमिलनाडु, बिहार या किसी अन्य राज्य में स्थापित हैं, सभी में एक ही प्रकार की व्यवस्था लागू होती है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को पूरा करने के लिए उत्तर प्रदेश का चुनाव करने के पीछे मुख्य कारण एक तो उत्तर प्रदशे का शिक्षा के सम्बन्ध में अति

पिछड़ा होना तथा दूसरा उत्तर प्रदेश में अन्य राज्यों की अपेक्षा अधिक संख्या में जवाहर नवोदय विद्यालयों का स्थापित होना रहा है। चूंकि उत्तर प्रदेश में वर्तमान 423 नवोदय विद्यालय स्थापित हो चुके हैं। अतः शोध कार्य को पूर्ण करने के लिए इन सभी जवाहर नवोदय विद्यालयों का सर्वेक्षण शोधार्थी द्वारा प्रश्नावलियां भेज कर एवं विद्यालयों का भौतिक अवलोकन करने एवं विद्यालय कर्मचारियों, शिक्षकों एवं छात्रों से वार्ता करके जो आंकडे एकत्रित किये उन्हें इस अध्याय के अर्न्तरगत विश्लेषित किया गया है। अध्ययन में नवोदय विद्यालय पुस्तकालयों के पुस्तकालयध्यक्षों द्वारा प्रपत आँकड़े जो कि पुस्तकालय के सम्बन्ध में दिये गये हैं तथा उपयोगकर्ताओं द्वारा भरी गयी प्रश्नावली के आंकड़ों के एकत्रित कर उनका अलग–अलग दृष्टि कोणों से निरीक्षण एवं परीक्षण किया गया है।

सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश में स्थित जवाहर नवोदय विद्यालय पुसतकालयों के सर्वेक्षण से प्राप्त प्रश्नावलियों एवं उपयोग कर्ताओं द्वारा प्राप्त प्रश्नावलियों के उपरान्त जिन 15 विद्यालयों के पुस्तकालयों द्वारा अधिकतम आंकडे उपलब्ध कराये गये उन सभी 15 विद्यालयों का प्रस्तुत शोध प्रबन्ध पूरा करने हेतु चयन किया गया तथा उत्तर प्रदेश के समस्त नवोदय विद्यालय में पढ़ने वाले छात्रों द्वारा जिन प्रश्नावलियों में अधिकतम जानकारी एवं अपने सुझाव उपलब्ध कराये गये एसी 690 प्रश्नावलियों को आंकड़ों के विश्लेषण हेतु सम्मिलित किया गया है।

इस अध्याय के अन्तर्रगत पुस्तकालय सर्वेक्षण एवं उपयोगकर्ता दोनें से प्राप्त आंकड़ों का बारीकी से निरीक्षण एवं विश्लेषण कर पुस्तकालयों एवं समस्त उपयोग कर्ताओं की समस्याओं को ज्ञात करने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तुत अध्ययन हेतु सर्वेक्षण के उपरान्त जिन 15 नवोदय विद्यालय पुस्तकालयों का चयन किया गया है वह इस प्रकार हैं–

- जवाहर नवोदय विद्यालय फर्रूखाबाद
- जवाहर नवोदय विद्यालय मैनपुरी
- जवाहर नवोदय विद्यालय आगरा
- जवाहर नवोदय विद्यालय झांसी
- जवाहर नवोदय विद्यालय मथुरा
- जवाहर नवोदय विद्यालय कानपुर
- जवाहर नवोदय विद्यालय एटा
- जवाहर नवोदय विद्यालय मेरठ
- जवाहर नवोदय विद्यालय शाहजहाँपुर
- जवाहर नवोदय विद्यालय मिर्जापुर
- जवाहर नवोदय विद्यालय गोण्डा
- जवाहर नवोदय विद्यालय अलीगढ़
- जवाहर नवोदय विद्यालय बरेली
- जवाहर नवोदय विद्यालय मुजफ्फर नगर
- जवाहर नवोदय विद्यालय महोवा

तालिका 01

(सदस्यता)

क्रम सख्या	विद्यालय का नाम	शिक्षक	विद्यार्थी	प्रशासनिक कर्मचारी	अन्य	योग
1	ज0न0वि0 फर्रूखाबाद	24	440	07	05	476
2	ज0न0वि0 मैनपुरी	28	380	03	06	471
3	ज0न0वि0 आगरा	35	420	06	11	472
4	ज0न0वि0 झाँसी	28	480	02	06	516
5	ज0न0वि0 मथुरा	32	450	07	08	497
6	ज0न0वि0 कानपुर	32	480	06	08	526
7	ज0न0वि0 एटा	31	480	05	09	525
8	ज0न0वि0 मेरठ	32	521	10	08	571
9	ज0न0वि0 शाहजहाँपुर	27	390	03	07	427
10	ज0न0वि0 मिर्जापुर	31	420	05	08	464
11	ज0न0वि0 गोण्डा	24	340	04	03	371
12	ज0न0वि0 अलीगढ़	30	440	07	09	486
13	ज0न0वि0 बरेली	24	440	05	06	475
14	ज0न0वि0 मुजफ्फर नगर	29	480	04	10	523
15	ज0न0वि0 महोवा	34	340	16	04	394

उपर्युक्त तालिका के विश्लेषण के उपरान्त यह ज्ञात होता है कि सभी नवोदय विद्यालय के उपयोगकर्ताओं में छात्र, शिक्षक विद्यालय कर्मचारियों एवं अन्य लोगों के अन्तरगत इन उपयोगकर्ताओं को सम्मिलित किया गया है जो कभी कभी विद्यालय ग्रन्थालय का उपयोग करते है। इनमें प्रायः विद्यालय की प्रशासनिक समिति के सदस्यों के पुत्र –पुत्रियां व गावँ जहाँ विद्यालय स्थित है के स्थानीय उपयोग कर्ताओं को सम्मिलित किया गया है। तालिका से स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है

कि नवोदय विद्यालय मेरठ में सबसे अधिक 571 उपयोग कर्ता हैं जबकि सबसे कम नवोदय विद्यालय महोवा में हैं। यदि तालिका का मूल्यांकन किया जाता तो सबसे अधिक शिक्षक जो पुस्तकालय के दैनिक उपयोगकर्ता हैं, नवोदय विद्यालय आगरा में हैं। लेकिन छात्रों की संख्या सबसे अधिक नवोदय विद्यालय मुजफ्फर नगर, कानपुर, मेरठ एवं एटा में है। यह इस तथ्य को प्रदर्शित करता है उपरोक्त नवोदय विद्यालयों में शिक्षकों की संख्या कम है, जबकि छात्रों की अधिक। अतः छात्र शिक्षक का अनुपात किसी दृष्टिकोण से तर्क संगत प्रतीत नहीं होता है।

सबसे अधिक प्रशासनिक कर्मचारी नवोदय विद्यालय महोवा में हैं, इसके उपरान्त मेरठ, मथुरा एवं फर्रूखाबाद में हैं। जब कि नवोदय विद्यालय सरसोल, सहारनपुर, गोण्ड़ा, मुजफ्फरनगर आदि में प्रशासनिक कर्मचारियों की संख्या नगण्य है। अतः यह भी इस तथ्य को प्रदर्शित करता है कि नवोदय विद्यालय संगठन की नीति छात्र शिक्षक व कर्मचारियों का असन्तुलन उत्पन्न करती है।

तालिका 02

(संग्रह)

क्रम सख्या	विद्यालय का नाम	पुस्तकें	संदर्भ पुस्तकें	पत्र–पत्रिकाऐं	अमुदित सामग्री	अन्य	योग
1	ज0न0वि0 फर्रूखाबाद	5210	167	15	250	–	5642
2	ज0न0वि0 मैनपुरी	4970	130	10	–	25	5135
3	ज0न0वि0 आगरा	5800	287	18	600	–	6705
4	ज0न0वि0 झाँसी	5382	–	12	110	–	5504
5	ज0न0वि0 मथुरा	8430	–	05	–	–	8435
6	ज0न0वि0 कानपुर	6260	200	08	–	–	6468
7	ज0न0वि0 एटा	4870	–	05	–	–	4875
8	ज0न0वि0 मेरठ	6260	230	15	331	–	6836
9	ज0न0वि0 शाहजहाँपुर	4750	85	11	229	–	5075
10	ज0न0वि0 मिर्जापुर	5200	200	10	75	200	5685
11	ज0न0वि0 गोण्डा	4200	–	08	–	105	4313
12	ज0न0वि0 अलीगढ़	6250	410	14	230	–	6904
13	ज0न0वि0 बरेली	5300	160	06	50	–	5516
14	ज0न0वि0 मुजफ्फर नगर	6000	250	08	230	100	6588
15	ज0न0वि0 महोवा	5665	300	14	250	15	6244

उपर्युक्त तालिका से यह दृष्टिगोचर होता है कि विभिन्न नवोदय विद्यालयों में संग्रह की स्थिति क्या है अध्ययन में यह पाया गया कि लगभग समस्त नवोदय विद्यालयों के पुस्तकालयों के संग्रह की नीति प्राचार्य एवं शिक्षकों के इर्दगिर्दही घूमती है। पुस्तकालयध्यक्ष की भूमिका पुस्तकालय अर्जन में नगण्य है तालिका में संन्दर्भ पुस्तकों के अन्तरगत, शब्द कोष, विश्वकोष, जीवनी, हस्त पुस्तिका आदि को सम्मिलित किया गया है। पत्रिकाओं के अन्तरगत वह पत्र –पत्रिकाऐं ली गयी है जो विद्यालय में नियमित आती हैं। जिनमें प्रमुख रूप से चंम्पक, नन्दन, चाचा चौधरी,

प्रतियोगिता दर्पण, इण्डिया टुडे, स्पोर्टस स्टार, आदि प्रमुख हैं। अमुद्रित सामग्री में मानचित्र, ग्लोव, समाचार पत्र, चार्ट, रेखा चित्र, इत्यादि को सम्मिलित किया गया है। जब कि अन्य में द्रष्ट ग्रव्य, वीडियो कैसेट्स, सी०डी०, डी०वी०डी०, प्रतिवेदन तथा विभिन्न विद्यालयों की वार्षिक आदि को सम्मिलित किया गया है।

तालिका के अवलोकन से यह प्रदर्शित होता है कि सबसे अधिक संग्रह नवोदय विद्यालय अलीगढ़, आगरा, एवं मेरठ के विद्यालयों में हैं। जबकि सबसे कम नवोदय विद्यालय गोण्डा तथा एटा में है। सबसे अधिक सन्दर्भ पुस्तकें नवोदय विद्यालय अलीगढ़, महोवा, आगरा में हैं। तथा सबसे कम शाहजहाँपुर, बरेली एवं मैनपुरी में हैं। सबसे अधिक पत्रिकाऐं आगरा, मुजफ्फरनगर एवं महोवा में आतीं हैं। अध्ययन के समय यह दृष्टिगोचर हुआ कि नवोदय विद्यालय सरसोल, शाहजहाँपुर एवं बरेली की स्थापना विगत वर्षों में ही हुई है। अतः विद्यालयों में सन्दर्भ ग्रन्थो एवं पत्र –पत्रिकाओं का आभाव है।

तालिका 03

(संग्रह में वृद्धि)

क्रम सख्या	विद्यालय का नाम	1996–97	1997–98	1998–99	1999–2000	2000–2001	योग
1	ज0न0वि0 फर्रुखाबाद	260	400	340	280	265	1545
2	ज0न0वि0 मैनपुरी	235	275	180	320	240	1250
3	ज0न0वि0 आगरा	600	260	310	190	280	1640
4	ज0न0वि0 झाँसी	175	253	390	274	319	1411
5	ज0न0वि0 मथुरा	432	332	350	330	—	1414
6	ज0न0वि0 कानपुर	160	230	240	320	270	1220
7	ज0न0वि0 एटा	224	98	328	620	—	1270
8	ज0न0वि0 मेरठ	70	190	160	480	260	1160
9	ज0न0वि0 शाहजहाँपुर	325	189	200	270	378	1362
10	ज0न0वि0 मिर्जापुर	255	300	275	285	260	1375
11	ज0न0वि0 गोण्डा	160	240	265	315	285	1265
12	ज0न0वि0 अलीगढ़	540	290	380	360	265	1835
13	ज0न0वि0 बरेली	280	260	300	275	230	1345
14	ज0न0वि0 मुजफ्फर नगर	390	210	260	345	230	1435
15	ज0न0वि0 महोवा	230	210	280	275	200	1195

उपरोक्त तालिका के विश्लेषण से यह स्पष्ट हो रहा है कि सर्वेक्षण किये गये नवोदय विद्यालयों में प्रतिवर्ष अवाप्ति की जाने वाली पुस्तकों की स्थिति क्या है। उपर्युक्त तालिका में वर्ष 1996 से लेकर वर्ष 2001 तक के आंकडों को वर्ष वार दर्शाया गया है। इसके अन्तरगत साधारण पाढय पुस्तकों, सन्दर्भ ग्रन्थ एवं अन्य पाढय सामग्री को सम्मिलित किया गया है।

तालिका के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि सर्वेक्षण किये गये समस्त नवोदय विद्यालयों में प्रतिवर्ष कय की जाने वाली पुस्तकों की संख्या काफी कम है जिसका मुख्य कारण पुस्तक चयन नीति है जो विद्यालय प्राचार्य एवं शिक्षकों तक सीमित

रहती है जिसमें पुस्तकालयध्यक्ष की भूमिका को काफी हद तक नजरंदाज किया जाता है। तथा इसके अतिरिक्त अन्य कारण मानव संसाधन विकास मंन्त्रालय द्वारा विद्यालयों को अनुदान दिये जाने वाले धन में से पुस्तकालयों हेतु कुल धन का

2 से 5 प्रतिशत जो कि लगभग 15 से 20 हजार के मध्य होता है पुस्तकालयों के समुचित विकास हेतु पर्याप्त नहीं है।

यदि समस्त नवोदय विद्यालयों द्वारा कय की जाने वाली पुस्तकों की वर्ष वार स्थिति पर नजर डाले तो यह तथ्य उभर कर सामने आता है कि नवोदय विद्यालय फर्रूखाबाद में सार्वाधिक पुस्तकें वर्ष 1997–98 कय की गयी जब कि सबसे कम पुस्तकों का कय वर्ष 1996–97 में हुआ है।

नवोदय विद्यालय मैनपुरी सर्वाधिक पुस्तकों का कय वर्ष 1999–00 में जो कि 320 हैं तथा सबसे कम 1998–99 हुआ जो कि मात्र 180 पुस्तकों तक ही सीमित है।

इसी प्रकार यदि अन्य सभी विद्यालयों पर नजर डाली जाये तो प्रति वर्ष पुस्तकों की संख्या या तो घट रही है या बढ़ रही है। जिससे यह स्पष्ट होता है कि पुस्तकालयों को उनके सतत विकास हेतु निश्चित अनुपात में पर्याप्त धन उपलब्ध नहीं कराया जाता है। यदि 5 वर्ष के औषत पुस्तकों के कय पर गौर किया जाय तो सर्वाधिक कय नवोदय विद्यालय अलीगढ़, आगरा एवं फर्रूखाबाद में हुआ है। जो 1835 से 1545 पुस्तकों के मध्य हैं। जब कि सबसे कम औषत नवोदय विद्यालय महोवा, मेरठ एवं मैनपुरी का रहा है जो कि 1250 से 1160 के मध्य है।

तालिका 04

(प्रति उपयोगकर्ता पुस्तकों की संख्या)

क्रम सख्या	विद्यालय का नाम	उपयोगकर्ताओं की संख्या	कुल संग्रह	प्रति उपयोगकर्ता पुस्तक की संख्या
1	ज0न0वि0 फर्रूखाबाद	476	5210	10.94
2	ज0न0वि0 मैनपुरी	417	4970	11.91
3	ज0न0वि0 आगरा	472	5800	12.28
4	ज0न0वि0 झाँसी	516	5382	10.21
5	ज0न0वि0 मथुरा	497	8430	16.96
6	ज0न0वि0 कानपुर	526	6468	12.29
7	ज0न0वि0 एटा	525	4870	9.27
8	ज0न0वि0 मेरठ	571	6260	10.96
9	ज0न0वि0 शाहजहाँपुर	427	4750	11.12
10	ज0न0वि0 मिर्जापुर	464	5200	11.20
11	ज0न0वि0 गोण्डा	371	4200	11.32
12	ज0न0वि0 अलीगढ़	486	6250	12.86
13	ज0न0वि0 बरेली	475	5516	11.61
14	ज0न0वि0 मुजफ्फर नगर	523	6588	12.59
15	ज0न0वि0 महोवा	394	5665	14.37

उपर्युक्त तालिका का मूल्यांकन करने पर यह स्पष्ट होता है कि समस्त जवाहर नवोदय विद्यालयों में उपयोग कर्ताओं हेतु पुस्तकालय द्वारा दी जाने वाली प्रति उपयोग कर्ता पुस्तकों की स्थिति क्या है। उपर्युक्त तालिका में सम्बन्धित विद्यालय का कुल संग्रह एवं कुल उपयोग कर्ताओं की स्थिति को स्पष्ट किया गया है। तथा प्राप्त आंकडों का विश्लेषण कर प्रति उपयोग कर्ता उसके उपयोग हेतु पुस्तकों की संख्या की गणना की गयी है।

उपर्युक्त तालिका का अध्ययन करने पर यह साफ पता चलता है कि सभी नवोदय विद्यालयों में प्रति उपयोग कर्ता उपयोग हेतु संग्रहित पुस्तकों की संख्या

काफी कम है। यदि सर्वेक्षण किये गये समस्त विद्यालयों में उनके उपयोग कर्ताओं पर दृष्टि डाली जाये तो सर्वाधिक उपयोग कर्ता नवोदय विद्यालय मेरठ, कानपुर, एटा एवं सरसोल है। जबकि सबसे कम उपयोग कर्ता 371 नवोदय विद्यालय गोण्ड़ा में हैं। तथा साथ ही यदि विद्यालयों के पुस्तकालयों के संग्रह पर दृष्टि डाली जाये तो सर्वाधिक संग्रह जवाहर नवोदय विद्यालय मथुरा, मुजफ्फरनगर एवं कानपुर में है। तथा सबसे कम संग्रह नवोदय विद्यालय गोण्ड़ा का हैं। जिसका प्रमुख कारण कुछ विद्यालयों की स्थापना विगत कुछ वर्षो में ही हुई है हो सकता है।

यदि तालिका में दिये गये समस्त आंकड़ों का विश्लेषण किया जाय तो स्पष्ट कहा जा सकता है कि सर्वाधिक प्रति उपयोग कर्ता संग्रह नवोदय विद्यालय मथुरा का है। जिसका प्रमुख कारण संग्रह के अनुपात में उपयोग कर्ताओं का कम होता है। तालिका द्वारा प्रदर्शित आंकडा 16.96 पुस्तक प्रति उपयोग कर्ता सभी नवोदय विद्यालयों में सर्वाधिक है, परन्तु यह संख्या भी मानकों के अनुरूप नहीं हैं। सबसे कम पुस्तकों का प्रति उपयोग कर्ता 9.27 नवोदय विद्यालय एटा का है जिसका कारण संग्रह के अनुपात में उपयोग कर्ताओं का अधिक होना प्रतीत होता है।

उपर्युक्त तालिका के अवलोकन से यह भी स्पष्ट होता है कि लगभग सभी विद्यालयों में प्रति व्यक्ति पुस्तकों की संग्रह की स्थित एक जैसी ही है।

तालिका 05

(बजट)

क्रम सख्या	विद्यालय का नाम	वर्तमान वर्ष का वजट	वर्तमान वर्ष में उपयोगकर्ताओं की संख्या	प्रति उपयोगकर्ता व्यय
1	ज0न0वि0 फर्रूखाबाद	18000	476	37.81
2	ज0न0वि0 मैनपुरी	18000	417	43.16
3	ज0न0वि0 आगरा	14000	472	29.66
4	ज0न0वि0 झाँसी	12000	516	23.25
5	ज0न0वि0 मथुरा	24000	497	48.28
6	ज0न0वि0 कानपुर	20000	526	38.02
7	ज0न0वि0 एटा	16000	525	30.47
8	ज0न0वि0 मेरठ	20000	571	35.02
9	ज0न0वि0 शाहजहाँपुर	16000	427	37.47
10	ज0न0वि0 मिर्जापुर	25000	464	53.87
11	ज0न0वि0 गोण्डा	17000	372	45.82
12	ज0न0वि0 अलीगढ़	16000	486	32.92
13	ज0न0वि0 बरेली	18000	475	37.89
14	ज0न0वि0 मुजफ्फर नगर	20000	523	38.24
15	ज0न0वि0 महोवा	22000	394	55.83

उपर्युक्त तालिका के अन्तरगत मानवसंसाधन विकास मंत्रालय एवं नवोदय विद्यालय समिति द्वारा प्राप्त अनुदान का प्रति उपयोग कर्ता होने वाले व्यय का आंकलन किया गया है। उपर्युक्त तालिका में सर्वेक्षण करते समय चालू वित्तवर्ष में प्राप्त अनुदान तथा उपयोग कर्ताओं की संख्या को आधार माना गया है।

यदि उपर्युक्त तालिका का अवलोकन करें तो ज्ञात होता है कि प्रति उपयोग कर्ता व्यय सर्वाधिक महोवा में 55.83 प्रतिशत, मिर्जापुर 53.89 प्रतिशत तथा मथुरा में

48.28 प्रतिशत है। जिसका प्रमुख कारण नवोदय विद्यालय महोवा तथा मिर्जापुर का नवनिर्मित होना हो सकता है तथा दूसरा कारण विद्यालयों को स्थापित करने के लिए अन्य विद्यालयों की तुलना में अधिक धन प्राप्त होना हो सकता है। तथा नवोदय विद्यालय मथुरा का प्रमुख कारण धन की तुलना में विद्यार्थियों का कम होना दृष्टिगोचर हो रहा है। तथा प्रति उपयोग कर्ता व्यय सबसे कम नवोदय विद्यालय कानपुर में 23.25 प्रतिशत तथा नवोदय विद्यालय एटा में 30.47 प्रतिशत है। जिसका प्रमुख कारण विद्यालय पुस्तकालय के उपयोग कर्ताओं की तुलना में बजट का काफी कम होना दृष्टिगोचर हो रहा है।

उपर्युक्त तालिका से यह भी स्पष्ट हो रहा है कि विद्यालय पुस्तकालयों को प्राप्त होने वाला धन उनके उपयोग कर्ताओं की तुलना में काफी कम है जो विद्यालय पुस्तकालय के विकास एवं प्रसार हेतु पर्याप्त नहीं है।

तालिका 06

(पुस्तक चयन प्रणाली)

क्रम सख्या	विद्यालय का नाम	प्राशासन	पुस्तकालाध्यक्ष तथा स्टाफ	शिक्षकगढ़	शिक्षक, पुस्तकालाध्यक्ष व उपयोगकर्ता
1	ज0न0वि0 फर्रूखाबाद	हाँ	नहीं	नहीं	नहीं
2	ज0न0वि0 मैनपुरी	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं
3	ज0न0वि0 आगरा	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं
4	ज0न0वि0 झाँसी	हाँ	नहीं	नहीं	नहीं
5	ज0न0वि0 मथुरा	हाँ	नहीं	नहीं	हाँ
6	ज0न0वि0 कानपुर	हाँ	हाँ	हाँ	नहीं
7	ज0न0वि0 एटा	हाँ	नहीं	नहीं	नहीं
8	ज0न0वि0 मेरठ	हाँ	हाँ	हाँ	नहीं
9	ज0न0वि0 शाहजहाँपुर	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं
10	ज0न0वि0 मिर्जापुर	हाँ	हाँ	हाँ	नहीं
11	ज0न0वि0 गोण्डा	हाँ	नहीं	हाँ	हाँ
12	ज0न0वि0 अलीगढ़	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं
13	ज0न0वि0 बरेली	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं
14	ज0न0वि0 मुजफ्फर नगर	हाँ	नहीं	नहीं	नहीं
15	ज0न0वि0 महोवा	हाँ	हाँ	हाँ	नहीं

उपर्युक्त तालिका के अन्तरगत सर्वेक्षण से प्राप्त आंकडों को जो कि पुस्तकालय द्वारा पुस्तक चयन की स्थिति को स्पष्ट करते हैं दर्शाया गया है। किसी भी पुस्तकालय का सबसे महत्वपूर्ण कार्य पुस्तक चयन है। पुस्तकालय विज्ञान का प्रथम सूत्र पुस्तकें उपयोग के लिए है का सही अनुपालन तभी हो सकता है जब पुस्तकालय के पास एक उच्च कोटि की पुस्तक चयन समिति हो जिसके अन्तरगत सम्बन्धित विषय के व्याख्याता, विद्यालय प्राचार्य, पुस्तकालयध्यक्ष तथा उपयोगकर्ता

को सम्मिलित किया गया हो। यदि उपर्युक्त तालिका का अवलोकन किया जाय तो यह कहा जा सकता हैकि नवोदय विद्यालय फर्रूखाबाद, कानपुर, मथुरा, सरसोल तथा एटा में पुस्तक चयन कार्य सम्बन्धित विषय के प्राध्यापकों एवं उपयोग कर्ताओं द्वारा किया जाता हैजब कि नवोदय विद्यालय मैनपुरी, आगरा, शाहजहाँपुर, गोण्डा, अलीगढ़ तथा बरेली आदि नवोदय विद्यालयों में पुस्तक चयन कर्ता सम्बन्धित विषय के प्राध्यापकों द्वारा किया जाता है जिसमे उपयोग कर्ताओं का भी सहयोग लिया जाता है।

उसके अतिरिक्त यदि उपर्युक्त तालिका पर दृष्टि डाली जाये तो यह पता चलता है कि नवोदय विद्यालय मेरठ, मिर्जापुर तथा महोवा में पुस्तकालय हेतु पुस्तकालयध्यक्ष का भी सहयोग लिया जाता है जब कि लगभग सभी विद्यालयों में पुस्तकचयन प्रक्रिया में विद्यालय के प्रशासनिक कर्मचारियों की कोई भूमिका नहीं होती है।

तालिका 07

(पुस्तकालय हेतु बजट निर्धारण का कार्य)

क्रम सख्या	विद्यालय का नाम	प्रधानाचार्य	पुस्तकालय समिति	पुस्तकाध्यक्ष	अन्य
1	ज0न0वि0 फर्रूखाबाद	नहीं	हाँ	नहीं	नहीं
2	ज0न0वि0 मैनपुरी	नहीं	हाँ	नहीं	नहीं
3	ज0न0वि0 आगरा	नहीं	हाँ	नहीं	नहीं
4	ज0न0वि0 झाँसी	नही	हाँ	नहीं	नहीं
5	ज0न0वि0 मथुरा	नहीं	हाँ	नहीं	नहीं
6	ज0न0वि0 कानपुर	नहीं	हाँ	नहीं	नहीं
7	ज0न0वि0 एटा	हाँ	हाँ	नहीं	नहीं
8	ज0न0वि0 मेरठ	नहीं	हाँ	नहीं	नहीं
9	ज0न0वि0 शाहजहाँपुर	नहीं	हाँ	हाँ	नहीं
10	ज0न0वि0 मिर्जापुर	नहीं	हाँ	नहीं	नहीं
11	ज0न0वि0 गोण्डा	नहीं	हाँ	नहीं	नहीं
12	ज0न0वि0 अलीगढ़	हाँ	हाँ	नहीं	नहीं
13	ज0न0वि0 बरेली	नहीं	हाँ	नहीं	नहीं
14	ज0न0वि0 मुजफ्फर नगर	नहीं	हाँ	नहीं	नहीं
15	ज0न0वि0 महोवा	हाँ	हाँ	नहीं	नहीं

उपर्युक्त तालिका के अन्तरगत पुस्तकालय हेतु धन आवंतन से सम्बन्धित आंकडों का विश्लेषण किया गया है। जिसके अन्तरगत विद्यालय प्राचार्य, पुस्तकालय समिति, पुस्तकालय भवन तथा अन्य की भूमिकाओं को सम्मिलित किया गया है।

उपर्युक्त सम्पूर्ण तालिका पर यदि नजर डाली जाये तो यह ज्ञात है लगभग समस्त विद्यालयों में पुस्तकालय हेतु धन आवंटन के कार्य में पुस्तकालय समिति की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है। जबकि नवोदय विद्यालय एटा तथा महोवा में उक्त कार्य में विद्यालय प्राचार्य भी सम्मिलित होते है। जबकि नवोदय विद्यालय शाहजहाँपुर में

आंकडे यह दर्शाते हैं के पुस्तकालय हेतु धन आवंटन के सम्बन्ध में पुस्तकसलयध्यक्ष का भी सहयोग लिया जाता है।

तालिका 08

(पुस्तकालय कर्मचारियों हेतु शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रम)

क्रम सख्या	विद्यालय का नाम	हाँ	नहीं
1	ज0न0वि0 फर्रूखाबाद	हाँ	नहीं
2	ज0न0वि0 मैनपुरी	नहीं	हाँ
3	ज0न0वि0 आगरा	हाँ	नहीं
4	ज0न0वि0 झाँसी	नहीं	हाँ
5	ज0न0वि0 मथुरा	हाँ	नहीं
6	ज0न0वि0 कानपुर	नहीं	हाँ
7	ज0न0वि0 एटा	नहीं	हाँ
8	ज0न0वि0 मेरठ	नहीं	हाँ
9	ज0न0वि0 शाहजहाँपुर	नहीं	हाँ
10	ज0न0वि0 मिर्जापुर	नहीं	हाँ
11	ज0न0वि0 गोण्डा	नहीं	हाँ
12	ज0न0वि0 अलीगढ़	हाँ	नहीं
13	ज0न0वि0 बरेली	नहीं	हाँ
14	ज0न0वि0 मुजफ्फर नगर	नहीं	हाँ
15	ज0न0वि0 महोवा	नहीं	हाँ

उपर्युक्त तालिका में सर्वेक्षण से प्राप्त आकडों द्वारा सभी नवोदय विद्यालयों में पुस्तकालयध्यक्ष एवं पुस्तकाय कर्मचारियों हेतु आवश्यक शिक्षण एवं प्रशिक्षण की स्थिति को जानने का प्रयास किया गया है। सूचना विज्ञान के क्षेत्र में हो रहे कमिक विकास के दृष्टि कोण से आवश्यक हो गया है कि समस्त विद्यालयों के पुस्तकालय

कर्मचारियों को सूचना क्षेत्र में होने वाले परिवर्तनों से अपने को अद्यतन रखना चाहिए। वर्तमान समय में पुस्तकालयों का तात्पर्य केवल पुस्तकों के संग्रह से नहीं रह गया है वरन आज पुस्तकालयों में विभिन्न सूचना तकनीकियों का प्रयोग उपयोगकर्ताओं को कम से कम समय में अधिक से अधिक जानकारी प्रदान करने के लिए किया जाता है जिनमें सी0 डी0 रॉम, मैगनेटिक टेप, आनलाइन सेवा तथा इन्टरनेट प्रमुख है। अतः नित नयी ताकनीकों को पुस्तकालय में प्रयोग करने तथा उनके बारे में सम्पूर्ण जानकारी से अवगत रहने के लिए पुस्तकालय कर्मचारियों हेतु शिक्षण एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम अति आवश्यक है।

उपर्युक्त तालिका का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि उपर्युक्त समस्त विद्यालयों में पुस्तकालय कर्मचारियों हेतु शिक्षण प्रशिक्षण का कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। उपर्युक्त तालिका के अवलोकन से यह भी ज्ञात होता है कि नवोदय विद्यालय मैनपुरी, शाहजहाँपुर, गोण्डा एवं बरेली में कर्मचारियों हेतु शिक्षण एवं प्रशिक्षण की व्यवस्था नहीं है जिसका कारण उपर्युक्त विद्यालयों में धन का अभाव या कर्मचारियों का कम होना दृष्टिगोचर होता है।

तालिका 09
(पुस्तकालय कर्मचारियों द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाऐं तथा कार्य)

क्रम सख्या	विद्यालय का नाम	पुस्तक अवाप्ति	सूचीकरण एवं वर्गीकरण	आदान प्रदान	पुस्तकालय सांख्यिकी	सन्दर्भ सेवा	अन्य संवाऐं
1	ज0न0वि0 फर्रूखाबाद	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ	नहीं	हाँ
2	ज0न0वि0 मैनपुरी	हाँ	नहीं	हाँ	हाँ	नहीं	नहीं
3	ज0न0वि0 आगरा	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ	नहीं	हाँ
4	ज0न0वि0 झाँसी	हाँ	नहीं	नहीं	नहीं	नहीं	नहीं
5	ज0न0वि0 मथुरा	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ	नहीं	नहीं
6	ज0न0वि0 कानपुर	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ	नहीं	हाँ
7	ज0न0वि0 एटा	हाँ	नहीं	हाँ	हाँ	नहीं	हाँ
8	ज0न0वि0 मेरठ	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ	नहीं	हाँ
9	ज0न0वि0 शाहजहाँपुर	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ	नहीं	नहीं
10	ज0न0वि0 मिर्जापुर	हाँ	नहीं	हाँ	हाँ	नहीं	नहीं
11	ज0न0वि0 गोण्डा	हाँ	नहीं	हाँ	हाँ	नहीं	नहीं
12	ज0न0वि0 अलीगढ़	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ	नहीं	हाँ
13	ज0न0वि0 बरेली	हाँ	नहीं	हाँ	हाँ	नहीं	नहीं
14	ज0न0वि0 मुजफ्फर नगर	हाँ	नहीं	हाँ	हाँ	नहीं	नहीं
15	ज0न0वि0 महोवा	हाँ	नहीं	हाँ	हाँ	नहीं	हाँ

उपर्युक्त तालिका के अन्तरगत पुस्तकालय के अन्तरगत होने वाले समस्त तकनीकी कार्य एवं सेवाओं का सर्वेक्षण से प्राप्त आँकडों के आधार पर अध्ययन किया गया है। जिसके अन्तरगत पुस्तकालय, संग्रह, वर्गीकरण–प्रसूचीकरण, पुस्तक आदान प्रदान, पुस्तकालय सांख्यिकी तथा सन्दर्भ सेवा एवं अन्य सभी प्रकार की पुस्तकालय द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाओं का अध्ययन कियय गया है।

उपर्युक्त तालिका पर दृष्टिपात करने पर यह स्पष्ट होता है कि लगभग सभी विद्यालय पुस्तकालयों में पुस्तक कय एवं संग्रह का कार्य नियमित रूप से किया जाता है। जब कि नवोदय विद्यालय फर्रूखाबाद, आगरा, मथुरा, कानपुर, मेरठ, शाहजहाँपुर, अलीगढ़ के पुस्तकालयों पुस्तक वर्गीकरण एवं सूचीकरण का कार्य पूर्ण

है तथा नवोदय विद्यालय मैनपुरी, एटा, मिर्जापुर, गोण्डा, बरेली, मुजफ्फरनगर तथा महोवा के पुस्तकालयों में कोई तकनीकी कार्य नहीं किया गया है। जिसका प्रमुख कारण पुस्तकालय कर्मचारियों का पूर्ण प्रशिक्षित न होना हैं। क्यों कि नवोदष विद्यालय पुस्तकालयों में पुस्तकालयध्यक्ष हेतु न्यूनतम योग्यता पुस्तकालय विज्ञान में डिप्लोमा होता है। जो कि तकनीकी कार्य जैसे–वर्गीकरण तथा सूचीकरण का कार्य कुशलतापूर्वक करने के लिए पर्याप्त नहीं है।

उपर्युक्त तालिका अध्ययन करने के उपरान्त यह स्पष्ट होता है कि लगभग सभी विद्यालयों में पुस्तक आदान प्रदान का कार्य नियमित किया जा रहा है। परन्तु सर्वेक्षण करते समय मौखिक रूप से यह तथ्य भी निकल कर सामने आया कि सभी नवोदय विद्यालय पुस्तकालयों में आदान प्रदान की विधियां अलग–अलग हैं तथा उपयोगकर्ताओं को प्रदान की जाने वाली पुस्तकों की संख्या भी अलग अलग हैं।

उपर्युक्त तालिका से यह भी पता चलता है कि लगभग समस्त पुस्तकसलयों में सांख्यिकी तैयार की जाती है। जिसका प्रमुख कारण नवोदय विद्यालय समिति द्वारा समय समय पर किया जाने वाला सर्वेक्षण हो सकता है। जब कि किसी भी विद्यालय पुस्तकालय में कोई भी संन्दर्भ सेवा की विधियों का प्रयोग नहीं किया जाता है केवल उपयोग कर्ताओं को पुस्तकसलय के संन्दर्भ में मौखिक जानकारी ही पुस्तकालयध्यक्ष द्वारा प्रदान की जाती है।

तालिका के विश्लेषण से यह भी ज्ञात होता है कि नवोदय विद्यालय फर्रूखाबाद, आगरा, कानपुर, एटा, मेरठ, अलीगढ़, तथा महोवा में प्रतिलिपिकरण एवं अन्य प्रकार की सेवाऐं भी उपयोग कर्ताओं को पुस्तकालय द्वारा प्रदान की जाती है जब कि अन्य सभी विद्यालयों में इन सेवाओं का अभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है।

तालिका 10

(प्रति वर्ष प्रति उपयोगकर्ता संग्रह में वृद्धि)

क्रम सख्या	विद्यालय का नाम	संग्रह में वृद्धि	उपयोगकर्ताओं की संख्या	प्रति उपयोगकर्ता प्रति वर्ष वृद्धि
1	ज0न0वि0 फर्रूखाबाद	260	476	0.54
2	ज0न0वि0 मैनपुरी	235	417	0.56
3	ज0न0वि0 आगरा	600	472	1.27
4	ज0न0वि0 झाँसी	175	516	0.33
5	ज0न0वि0 मथुरा	432	497	0.86
6	ज0न0वि0 कानपुर	160	526	0.30
7	ज0न0वि0 एटा	224	525	0.42
8	ज0न0वि0 मेरठ	70	571	0.12
9	ज0न0वि0 शाहजहाँपुर	325	427	0.76
10	ज0न0वि0 मिर्जापुर	255	664	0.38
11	ज0न0वि0 गोण्डा	160	371	0.43
12	ज0न0वि0 अलीगढ़	540	486	1.11
13	ज0न0वि0 बरेली	280	475	0.58
14	ज0न0वि0 मुजफ्फर नगर	390	523	0.74
15	ज0न0वि0 महोवा	230	394	0.58

सर्वेक्षण करते समय विगत पांच वर्षों के पुस्तक अवाप्ति के सम्बन्ध में विभिन्न विद्यालय पुस्तकालयों के आंकडें प्राप्त किये गये जो वर्ष 1996 से 2001 के मध्य की स्थिति को दर्शाते हैं। विभिन्न विद्यालयों से प्राप्त पांच वर्ष के आंकडों में से वर्ष 1996–97 के आंकडों का उपर्युक्त तालिका में विश्लेषण किया गया है। यह आंकडें वर्ष 1996–97 में प्रति उपयोगकर्ता पुस्तकों में होने वाली वृद्धि को प्रदर्शित करते हैं।

यदि उपर्युक्त तालिका पर दृष्टि डाली जाय तो यह स्पष्ट होता है कि वर्ष 1996–97 में सर्वाधिक 600 पुस्तकों का क्रय नवोदय विद्यालय आगरा में हुआ है

जबकि उक्त विद्यालय पुस्तकालय के उपयोग कर्ताओं की संख्या 472 है। यदि प्रति उपयोगकर्ता पुस्तकों की वृद्धि को देखा जाय तो यह 1.27 पुस्तक प्रति उपयोगकर्ता आती है। जो सर्वेक्षण किये गये सभी नवोदय विद्यालयों में सर्वाधिक है। उसके उपरान्त प्रति उपयोगकर्ता पुस्तकों में वृद्धि नवोदय विद्यालय अलीगढ़ तथा नवोदय विद्यालय मथुरा में क्रमशः 1.11 तथा 0.86 प्रति उपयोगकर्ता रही है। जबकि सबसे कम पुस्तकों में वृद्धि नवोदय विद्यालय मेरठ में रही जो कि मात्र 70 पुस्तकों तक ही सीमित थी जब कि यहाँ उपयोगकर्ताओं की संख्या 571 है जो मिर्जापुर के बाद सर्वाधिक है। उक्त विद्यालय में पुस्तकों की वृद्धि दर मात्र 0.12 प्रति उपयोगकर्ता रही । इसके अतिरिक्त नवोदय विद्यालय मिर्जापुर, कानपुर तथा सरसोल की भी स्थिति पुस्तकों की वृद्धि के सम्बन्ध में काफी दयनीय रही। उपर्युक्त तालिका के विश्लेषण से एवं सर्वेक्षण करते समय हुए मौखिक वार्तालाप से यह स्पष्ट होता है कि पुस्तक चयन समिति में पुस्तकालयध्यक्ष एवं अन्य उपयोगकर्ताओं की सीमित भागीदारी होती है। जिसका स्पष्ट प्रभाव पुस्तक उपर्युक्त तालिका में देखा जा सकता है।

तालिका 11
(5 वर्ष में प्रति उपयोगकर्ता पुस्तकों की औसत वृद्धि)

क्रम सख्या	विद्यालय का नाम	पांच वर्ष में कुल वृद्धि	उपयोगकर्ताओं की संख्या	औसत वृद्धि
1	ज0न0वि0 फर्रूखाबाद	1545	476	0.64
2	ज0न0वि0 मैनपुरी	1250	417	0.59
3	ज0न0वि0 आगरा	1640	472	0.69
4	ज0न0वि0 झाँसी	1411	516	0.54
5	ज0न0वि0 मथुरा	1414	497	0.56
6	ज0न0वि0 कानपुर	1220	526	0.46
7	ज0न0वि0 एटा	1270	525	0.48
8	ज0न0वि0 मेरठ	460	571	0.40
9	ज0न0वि0 शाहजहाँपुर	1362	427	0.63
10	ज0न0वि0 मिर्जापुर	1375	664	0.41
11	ज0न0वि0 गोण्डा	1265	371	0.68
12	ज0न0वि0 अलीगढ़	1835	486	0.76
13	ज0न0वि0 बरेली	1345	475	0.56
14	ज0न0वि0 मुजफ्फर नगर	1435	523	0.54
15	ज0न0वि0 महोवा	1195	394	0.60

उपर्युक्त तालिका के माध्यम से सभी नवोदय विद्यालयों में विगत पांच वर्षों में होने वाली औषत खरीद एवं उनको उपयोग करने वाले उपयोगकर्ताओं तथा प्रति उपयोगकर्ता पुस्तकों के औषत क्रय सम्बन्धी आंकडों का विश्लेषण किया गया है।

यदि उपर्युक्त तालिका पर दृष्टि डाली जाय तो पांच में सर्वाधिक प्रति उपयोगकर्ता पुस्तकों का क्रय नवोदय विद्यालय अलीगढ़ में जो कि 0.76 रहा है। तथा सबसे कम औषत क्रय नवोदय विद्यालय मेरठ, मिर्जापुर तथा कानपुर का क्रमशः 0.40, 0.41 तथा 0.46 प्रति उपयोगकर्ता है।

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि किसी भी नवोदय विद्यालय में विभिन्न शिक्षा समितियों द्वारा दी गयी अनुसंसाओं का पूर्णतः पालन नहीं किया जाता है। जिसका एक प्रमुख कारण अन्य विभागों पर तथा विद्यार्थियों के भोजन एवं वर्दी आदि पर होने वाले व्यय की तुलना में पुस्तकालयों पर नाम मात्र का ही व्यय किया जाता है।

तालिका 12

(वर्गानुसार सर्वेक्षण में भाग लेने वाले उपयोगकर्ता)

क्र. सं.	विद्यालय का नाम	कक्षा 6–8	%	कक्षा 9–10	%	कक्षा 11–12	%	योग
1.	ज0 न0 वि0 फर्रुखाबाद	16	32	22	44	12	24	50
2.	ज0 न0 वि0 मैनपुरी	12	27	16	34	16	36	44
3.	ज0 न0 वि0 आगरा	20	33	20	33	20	33	60
4.	ज0 न0 वि0 झांसी	12	33	10	28	14	39	36
5.	ज0 न0 वि0 मथुरा	04	12	18	47	16	42	38
6.	ज0 न0 वि0 कानपुर	08	18	24	55	12	27	44
7.	ज0 न0 वि0 एटा	16	31	18	35	18	35	52
8.	ज0 न0 वि0 मेरठ	24	37	20	31	20	31	64
9.	ज0 न0 वि0 शाहजहाँपुर	12	33	12	35	12	33	36
10.	ज0 न0 वि0 मिर्जापुर	10	24	16	38	16	38	42
11.	ज0 न0 वि0 गोण्डा	10	27	10	27	16	44	36
12.	ज0 न0 वि0 अलीगढ़	14	27	20	38	18	35	52
13.	ज0 न0 वि0 बरेली	10	25	18	45	12	30	40
14.	ज0 न0 वि0 मुजफ्फरनगर	16	30	14	27	22	42	52
15.	ज0 न0 वि0 महोवा	12	27	12	27	20	45	44
		196	28	**250**	36	**244**	35	**690**

उपर्युक्त तालिका के अन्तरगत सर्वेक्षण के समय अलग–अलग विद्यालयों में जिन विद्यार्थियों से विद्यालय पुस्तकालय द्वारा दी जाने वाली सेवाओं, सुख सुविधाओं आदि के बारे में प्रश्नावली भरवायी गयी है उसका सम्पूर्ण विवरण दर्शाया गया है। सर्वेक्षण के समय इस बात का खास ध्यान रखा गया कि विद्यार्थियों का कोई भी वर्ग प्रतिनिधित्व करने से छूट न जाय। इस लिए सम्पूर्ण विद्यालयों में जिनमें मुख्यता तीन वर्ग पूर्व माध्यमिक, माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक होते हैं, के सभी वर्गो में से कुछ विद्यार्थियों को सर्वेक्षण में सामिल किया गया है। सर्वेक्षण में विभिन्न विद्यालयों से सम्बन्धित 690 छात्रों को सामिल किया गया है। जवाहर नवोदय विद्यालय मेरठ में सर्वाधिक 64 छात्रों ने सर्वेक्षण में भाग लिया जबकि सबसे कम छात्र 36 जो कि नवोदय विद्यालय झांसी, गोण्डा तथा शाहजहाँनपुर में सम्मिलि हुए। विभिन्न विद्यालयों में कुल मिलाकर पूर्व माध्यमिक वर्ग में 196 छात्र, माध्यमिक वर्ग में 250 तथा उच्च माध्यमिक वर्ग में 244 छात्रों को सर्वेक्षण में सम्मिलित कर उनके पुस्तकालयों के सन्दर्भ में विचारों, अवधारणाओं एवं उनके द्वारा प्रदान की जाने वाली संसतुतियों को एकत्रित एवं विश्लेषि किया गया है, ताकि पुसतकालयों की वास्तविक स्थिति को सामने लाया जाय एवं पुस्तकालयों द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाओं, संकलन एवं सुविाओं में पाठकों की सुविधानुसार क्या–क्या परिवर्तन एवं संसोधन आवश्यक हैं को स्पष्ट किया जा सके।

तालिका 13

उपयोग की अवधि (कक्षा 6 से 8 वर्ग)

क्र. सं.	विद्यालय का नाम	6 माह से कम	%	6 माह से 1 वर्ष	%	1–2 वर्ष	%	2–3 वर्ष	%	3–4 वर्ष	%	योग
1.	ज0 न0 वि0 फर्रूखाबाद	00	0	04	25	04	25	08	50	00	0	16
2.	ज0 न0 वि0 मैनपुरी	00	0	04	33	06	50	02	17	00	0	12
3.	ज0 न0 वि0 आगरा	04	20	08	40	08	40	00	0	00	0	20
4.	ज0 न0 वि0 झांसी	02	17	02	17	06	50	02	17	00	0	12
5.	ज0 न0 वि0 मथुरा	00	0	00	0	04	100	00	0	00	0	04
6.	ज0 न0 वि0 कानपुर	00	0	04	50	00	0	04	50	00	0	08
7.	ज0 न0 वि0 एटा	04	25	04	25	08	50	00	0	00	0	16
8.	ज0 न0 वि0 मेरठ	00	0	08	33	10	42	06	25	00	0	24
9.	ज0 न0 वि0 शाहजहाँपुर	02	17	00	0	08	67	02	17	00	0	12
10.	ज0 न0 वि0 मिर्जापुर	04	40	06	60	00	0	00	0	00	0	10
11.	ज0 न0 वि0 गोण्डा	00	0	06	60	02	20	02	20	00	0	10
12.	ज0 न0 वि0 अलीगढ़	00	0	04	29	08	57	02	14	00	0	14
13.	ज0 न0 वि0 बरेली	02	20	04	40	04	40	00	0	00	0	10
14.	ज0 न0 वि0 मुजफ्फरनगर	04	25	08	50	00	0	04	25	00	0	16
15.	ज0 न0 वि0 महोवा	00	0	02	17	02	17	08	67	00	0	12
		22	11	**64**	33	**70**	36	**40**	20	**00**	0	**196**

उपर्युक्त तालिका के अर्न्तरगत सर्वेक्षण में सम्मिलित किये गये सभी जवाहर नवोदय विद्यालयों में पाठकों द्वारा विद्यालय पुस्तकालय के उपयोग की अवधि को दर्शाया गया है। उपर्युक्त तालिका के अन्तरगत किये गये आंकणों के विश्लेषण का मुख्य उद्देश्य यह ज्ञात करना है कि कक्षा 6–8 के विद्यार्थी जो सर्वेक्षण में भाग ले रहे हैं उनके द्वारा विद्यालय पुस्तकालय की उपयोग करने की अवधि क्या है। स्पष्टतः जिस उपयोग कर्ता की पुस्तकालय के उपयोग की अवधि जितनी अधिक होगी वह पुस्तकालय के संकलन एवं सेवाओं आदि के बारे में अपने विचारों एवं सुझावों को स्पष्ट करने में उतना ही सक्षम होगा। यदि उपर्युक्त तालिका पर एक दृष्टि डालें तो ज्ञात होत है कि पूर्व माध्यमिक वर्ग के छात्रों जिनकी पुस्तकों के स्वाध्याय के प्रति रूचि कम होती है द्वारा पुसतकालय के उपयोग की अवधि काफी कम है। चूंकि सभी जवाहर नवोदय विद्यालयों में प्रवेश कक्षा 6 से ही किया जाता है और विद्यार्थियों को अपने पाठयकम से सम्बन्धित पुस्तकों की आवश्यकता काफी कम पड़ती है क्योंकि अधिकतर पाठ्यकम शिक्षकों द्वारा ही पूरा करा दिया जाता है। इस वर्ग के छात्रों का पुस्तकालय में केवल कहानी एवं बाल साहित्य को पढ़कर अपना मनोरंजन करना ही एक मात्र उद्देश्य होता है।

कक्षा 6–8 वर्ग के जिन 196 छात्रों को सर्वेक्षण में सम्मिलित किया गया है उनमें से मात्र 20 प्रतिशत छात्र ऐसे हैं जिनके द्वारा विद्यालय पुस्तकालयों का उपयोग करने की अवधि 2 से 3 वर्ष के मध्य है। जो कि कुल छात्रों का मात्र 20

प्रतिशत है। इसी प्रकार 35 प्रतिशत छात्र ऐसे हैं जिनकी पुस्तकालय उपयोग की अवधि 1 से 2 वर्ष के मध्य है। सर्वेक्षण में सम्मिलित 33 प्रतिशत छात्रों के उपयोग की अवधि 6 माह से 1 वर्ष के मध्य है तथा 11 प्रतिशत छात्र ऐसे भी पाये जिन्होंने मात्र 6 माह पूर्व ही विद्यालय पुस्तकालय का उपयोग प्रारम्भ किया है। इतनी कम अवधि का मुख्य कारण कुछ विद्यार्थियों का किसी अन्य विद्यालयों से स्थानान्तरित होकर आना या कक्षा 6 में कुछ माह पूर्व प्रवेश होना हो सकता है।

तालिका 14

उपयोग की अवधि (कक्षा 9 से 10 वर्ग)

क्र. सं.	विद्यालय का नाम	6 माह से कम	%	6 माह से 1 वर्ष	%	1–2 वर्ष	%	2–3 वर्ष	%	3–5 वर्ष	%	योग
1.	ज0 न0 वि0 फर्रूखाबाद	00	0	04	18	10	45	08	36	00	0	22
2.	ज0 न0 वि0 मैनपुरी	02	13	06	37	08	50	00	0	00	0	16
3.	ज0 न0 वि0 आगरा	00	0	08	40	06	30	06	30	00	0	20
4.	ज0 न0 वि0 झांसी	00	0	04	40	00	00	06	60	00	0	10
5.	ज0 न0 वि0 मथुरा	04	22	04	22	10	56	00	0	00	0	18
6.	ज0 न0 वि0 कानपुर	04	16	10	41	06	25	04	16	00	0	24
7.	ज0 न0 वि0 एटा	00	0	02	11	08	44	08	44	00	0	18
8.	ज0 न0 वि0 मेरठ	00	0	12	60	04	20	04	20	00	0	20
9.	ज0 न0 वि0 शाहजहाँपुर	00	0	04	33	02	16	06	50	00	0	12
10.	ज0 न0 वि0 मिर्जापुर	02	13	06	37	06	37	02	13	00	0	16
11.	ज0 न0 वि0 गोण्डा	00	0	00	00	06	60	04	40	00	0	10
12.	ज0 न0 वि0 अलीगढ़	04	20	06	30	04	20	06	30	00	0	20
13.	ज0 न0 वि0 बरेली	04	22	04	22	04	22	06	34	00	0	18
14.	ज0 न0 वि0 मुजफ्फरनगर	00	0	02	14	08	57	04	28	00	0	14
15.	ज0 न0 वि0 महोवा	00	0	04	35	06	50	02	16	00	0	12
		20	8	76	30	88	35	66	26	00	0	250

उपर्युक्त तालिका के अर्न्तरगत कक्षा 9–10 वर्ग के 250 छात्रों को सम्मिलित किया गया है। वैसे तो सभी विद्यालयों मं बच्चों को पुस्तकालय के उपयोग एवं पाठ्य सामग्री के अध्ययन के लिए प्रोत्साहित किया जाता है लेकिन छोटे बच्चों में पुस्तकालय के उपयोग एवं उपयोग से होने वाले लाभ (बौद्धिक विकास) के बारे में पर्यापत ज्ञान नहीं होता है जिसके कारण उनमें पुस्तकालय के प्रति रूचि का सर्वथा अभाव रहता है। परन्तु जब हम कक्षा 9 तथा 10 के विद्यार्थियों के बारे में बात करते हैं तो यह ज्ञात होता है कि जब विद्यार्थी कक्षा 0 एवं कक्षा 10 में आ जाता है तो वह अपना अच्छा बुरा समझने लगता है तथा कक्षा में अध्यापकों द्वारा पाठ्यक्रम से सम्बन्धित कुछ प्रश्न छात्रों को स्वतः हल करने के लिए दिये जाते हैं ताकि उनके बौद्धिक विकास एवं ज्ञान को बढ़ाया जा सके। अतः इस वर्ग के विद्यार्थियों द्वारा अपनी समस्या के समाधान एवं हल को खोजने के लिए अतिरिक्त पाठ्य सामग्री की आवश्यकता पड़ती है जिसका एक मात्र हल विद्यालय पुस्तकालय है।

उपर्युक्त तालिका में विद्यार्थियों अथवा उपयोग कर्ताओं द्वारा यह ज्ञात करने का प्रयास किया गया है कि विद्यार्थियों द्वारा पुस्तकालय के उपयोग की अवधि क्या है। यदि सम्पूर्ण तालिका पर दृष्टि डाली जाय तो ज्ञात होता है कि अधिकतर 35 प्रतिशत छात्रों द्वारा पुस्तकालय उपयोग की अवधि 1 से 2 वर्ष के मध्य है। केवल 20 प्रतिशत छात्र ही ऐसे थे जिनकी पुस्तकालय उपयोग कि अवधि 2 वर्ष से अधिक पायी गयी। सर्वेक्षण में सम्मिलित इस वर्ग के छात्रों में 8 प्रतिशत छात्रों की संख्या ऐसी भी थी जिनकी उपयोग की अवधि 6 या 6 माह से कम थी। जबकि लगभग 30 प्रतिशत छात्रों द्वारा पुस्तकालयों के उपयोग की अवधि लगभग एक वर्ष के आस पास थी।

तालिका 15

उपयोग की अवधि (कक्षा 11 से 12 वर्ग)

क्र. सं.	विद्यालय का नाम	6 माह से 1 वर्ष	%	1–2 वर्ष	%	2–5 वर्ष	%	5 वर्ष से अधिक	%	योग
1.	ज0 न0 वि0 फर्रूखाबाद	00	0	04	33	02	17	06	50	12
2.	ज0 न0 वि0 मैनपुरी	00	0	02	13	04	25	10	62	16
3.	ज0 न0 वि0 आगरा	02	10	02	10	10	50	06	30	20
4.	ज0 न0 वि0 झांसी	00	0	00	0	10	71	04	29	14
5.	ज0 न0 वि0 मथुरा	00	0	04	32	04	25	08	50	16
6.	ज0 न0 वि0 कानपुर	00	0	04	33	06	50	02	17	12
7.	ज0 न0 वि0 एटा	00	0	06	35	06	33	06	33	18
8.	ज0 न0 वि0 मेरठ	00	0	04	20	06	30	10	50	20
9.	ज0 न0 वि0 शाहजहाँपुर	00	0	02	17	06	50	04	33	12
10.	ज0 न0 वि0 मिर्जापुर	00	0	02	12	08	50	06	38	16
11.	ज0 न0 वि0 गोण्डा	02	13	04	20	06	39	04	26	16
12.	ज0 न0 वि0 अलीगढ़	00	0	06	33	04	22	08	45	18
13.	ज0 न0 वि0 बरेली	00	0	02	17	04	33	06	50	12
14.	ज0 न0 वि0 मुजफ्फरनगर	00	0	08	36	06	27	08	37	22
15.	ज0 न0 वि0 महोवा	00	0	04	20	10	50	06	30	20
		04	1.5	**54**	20	**92**	35	**94**	36	**244**

उपर्युक्त तालिका में कक्षा 11 से 12 वर्ग के 244 छात्रों द्वारा पुस्तकालय के उपयोग की स्थिति को दर्शाया गया है। कक्षा 11 से 12 वर्ग के आयु के छात्रों में उम्र के साथ–साथ परिपक्वता भी आ जाती है। जिसके परिणाम स्वरूप उक्त पाठ्क अपने दृष्टिकोण को स्पष्ट करने में अधि सक्षम होते हैं।

यदि उपर्युक्त तालिका पर दृष्टि डाली जाय तो ज्ञात होता है कि उस वर्ग के अधिकतर विद्यार्थी लगभग 92 प्रतिशत विद्यालय पुस्तकालयों का उपयोग 5 या 5 वर्ष से अधिक समय से कर रहे हैं। मात्र 11 प्रतिशत छात्र ही ऐसे हैं जिनकी उपुस्तकालय उपयोग की अवधि 1 वर्ष या उससे कम थी जिसका कारण कुछ विद्यार्थियों का अन्य विद्यालयों से स्थानान्तरित होकर आना भी हो सकता है।

तालिका 16

(पाठकों की राय)

क्र. सं.	विद्यालय का नाम	अति उत्तम	%	उत्तम	%	संतोष जनक	%	अच्छी नहीं	%	अस्पष्ट	%	योग
1.	ज0 न0 वि0 फर्रुखाबाद	10	20	16	32	20	40	04	8	00	0	50
2.	ज0 न0 वि0 मैनपुरी	06	14	10	20	28	23	00	0	00	0	44
3.	ज0 न0 वि0 आगरा	16	27	20	33	24	40	00	0	00	0	60
4.	ज0 न0 वि0 झांसी	08	22	12	33	14	39	02	6	00	0	36
5.	ज0 न0 वि0 मथुरा	08	21	08	21	22	58	00	0	00	0	38
6.	ज0 न0 वि0 कानपुर	04	09	28	64	12	27	00	0	00	0	44
7.	ज0 न0 वि0 एटा	06	11	06	11	40	66	00	0	00	0	52
8.	ज0 न0 वि0 मेरठ	14	22	20	31	28	44	02	3	00	0	64
9.	ज0 न0 वि0 शाहजहाँपुर	06	17	14	29	16	44	00	0	00	0	36
10.	ज0 न0 वि0 मिर्जापुर	08	20	20	47	10	23	00	0	04	9	42
11.	ज0 न0 वि0 गोण्डा	02	05	14	39	08	22	10	28	02	5	36
12.	ज0 न0 वि0 अलीगढ़	02	04	16	31	28	54	06	12	00	0	52
13.	ज0 न0 वि0 बरेली	06	15	10	25	24	60	00	0	00	0	40
14.	ज0 न0 वि0 मुजफ्फरनगर	10	19	10	19	26	50	06	12	00	0	52
15.	ज0 न0 वि0 महोवा	06	14	18	40	20	45	00	0	00	0	44
		112	16	222	32	320	46	30	5	06	1	690

उपर्युक्त तालिका में प्रश्नावली में पाठकों द्वारा पुस्तकालय सेवा के सन्दर्भ में जो जानकारी दी गयी उसे विश्लेषित कर यह निष्कर्षित करने का प्रयास किया गया है कि जवाहर नवोदय विद्यालय पुस्तकालयों द्वारा दी जाने सेवाओं से पाठक कितना सन्तुष्ट है तथा सेवाओं में कितनें सुधार की आवश्यकता है यह भी निष्कर्षित करने का प्रयास किया गया है।

सर्वेक्षण में कुल 690 विद्यार्थियों की प्रश्नावली के माध्यम से अलग–अलग विद्यालय पुस्तकालय द्वारा प्रदान की जाने वाली विभिन्न प्रकार की पाठक आधारित सेवाओं को जानने का प्रयास किया गया है। सर्वेक्षण से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर हम कह सकते हैं कि सर्वाधिक 46 प्रतिशत लगभग 320 छात्रों द्वारा पुस्तकालय सेवाओं को मात्र काम चलाऊ ही बताया है। जिससे स्पष्ट होता है कि उपयोग कर्ता पुस्तकालय सेवाओं से पूर्ण संतुष्ट नहीं है। सर्वेक्षण में 32 प्रतिश छात्रों द्वारा पुस्तकालय द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाओं पर संतोष जाहिर किया है। जबकि मात्र 16 प्रतिशत छात्रों द्वारा ही नवोदय विद्यालय ग्रन्थालयों द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाओं की सराहना की गयी है। सर्वेक्षण में 5 प्रतिशत छात्र जो कि लगभग 30 हैं ने विद्यालय ग्रन्थालयों द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवओं को काफी निम्न स्तर का होना बताया है। सर्वेक्षण में 1 प्रतिश छात्र ऐसे भी थे जिन्होंने उपर्युक्त सन्दर्भ में अपनी स्पष्ट नहीं की।

यदि कुल मिलाकर सम्पूर्ण तालिका के अन्तर्रगत आंकड़ों के विश्लेषण पर नजर डाले तो हम कह सकते हैं कि नवादय विद्यालय ग्रन्थालयों द्वारा प्रदत्त सेवाऐं पाठकों को पूर्ण संतुष्ट करने के लिए पर्याप्त नहीं है।

तालिका 17

(भौतिक सुख सुविधायें)

क्र. सं.	विद्यालय का नाम	अति उत्तम	%	उत्तम	%	संतोष जनक	%	अच्छी नहीं	%	अस्पष्ट	%	योग
1.	ज0 न0 वि0 फर्रूखाबाद	06	12	10	20	34	68	00	04	00	0	50
2.	ज0 न0 वि0 मैनपुरी	00	0	06	14	20	45	18	41	00	0	44
3.	ज0 न0 वि0 आगरा	08	13	06	10	26	43	20	33	00	0	60
4.	ज0 न0 वि0 झांसी	00	0	02	6	14	39	16	44	04	11	36
5.	ज0 न0 वि0 मथुरा	02	5	10	26	06	16	18	47	00	0	38
6.	ज0 न0 वि0 कानपुर	04	9	08	18	24	55	08	18	00	0	44
7.	ज0 न0 वि0 एटा	00	0	04	8	22	42	24	46	02	4	52
8.	ज0 न0 वि0 मेरठ	06	9	06	9	28	44	20	31	04	6	64
9.	ज0 न0 वि0 शाहजहाँपुर	00	0	08	22	18	50	10	28	00	0	36
10.	ज0 न0 वि0 मिर्जापुर	00	0	08	19	12	29	20	48	02	5	42
11.	ज0 न0 वि0 गोण्डा	02	5	12	33	14	39	08	22	00	0	36
12.	ज0 न0 वि0 अलीगढ़	04	8	10	19	16	31	20	38	02	4	52
13.	ज0 न0 वि0 बरेली	00	0	12	30	16	40	12	30	00	0	40
14.	ज0 न0 वि0 मुजफ्फरनगर	08	15	14	27	18	35	12	23	00	0	52
15.	ज0 न0 वि0 महोवा	04	9	10	23	22	50	08	18	00	0	44
		44	6	126	18	290	42	214	31	14	2	690

उपर्युक्त तालिका के अन्तर्रगत जवाहर नवोदय विद्यालय ग्रन्थालयों द्वारा प्रदान की जाने वाली भौतिक सुख सुविधाओं के बारे में अध्ययन किया गया है। सर्वेक्षण में 690 छात्रों द्वारा प्रश्नावली के माध्यम से प्रदान किये गये आँकड़ों का विश्लेषण किया गया है। आंकड़ों के विश्लेषण के उपरान्त जो तथ्य सामने अभर कर आये वह इस प्रकार हैं। सर्वेक्षण में सर्वाधिक 42 प्रतिशत लगभग 290 छात्रों द्वारा पुस्तकालयों द्वारा प्रदान की जाने वाली भौतिक सुख सुविधाओं को काम चलाऊ बताया है। जबकि इसके ठीक विपरीत 31 प्रतिशत लगभग 214 छात्रों ने काफी खराब एवं अपर्याप्त बताया है। जिससे स्पष्ट होता है कि पुस्तकालयों में पाठकों हेतु पर्याप्त एवं सुख सुविधाओं की तरह जवाहर नवोदय विद्यालय समिति एवं विद्यालय प्रशासन द्वारा अधिक ध्यान नहीं दिया जा रहा है जो कि खेद का विषय है। नवोदय विद्यालय पुस्तकालयों में आवश्यक सुविधाओं की कमी के कारण पाठकों का रूझान पुस्तकालयों की तरफ कम होना स्वाभाविक है जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव पाठकों की बौद्धिक क्षमता एवं उनके सम्पूर्ण मानिसक विकास पर पड़ सकता है। सर्वेक्षण में मात्र 18 प्रतिशत लगभग 126 छात्रों द्वारा पुस्तकालयों द्वारा प्रदान की जाने वाली सुविधाओं पर अपनी संतुष्टि जाहिर की है। तथा 6 प्रतिशत लगभग 44 छात्रों द्वारा अपनी संतुष्टि जाहिर की है। सर्वेक्ष्ज्ञण में भाग लेने वाले 2 प्रतिशत छात्रों ने इस सम्बन्ध में अपनी कोई राय जाहिर नहीं की है।

यदि उपर्युक्त तालिका के सम्पूर्ण विश्लेषण पर गौर किया जाय तो यह स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है कि जवाहर नवोदय विद्यालयों में पुस्तकालयों को भौतिक सुख सुविधाओं से सुसज्जित करने पर पर्याप्त ध्यान देने की आवश्यकता है। क्योंकि पुस्तकालय को किसी भी शिक्षण संस्थान के हृदय की संज्ञा दी गयी है। अतः पुस्तकालयों को ऐसे आधुनिक संसाधनों से सुसज्जित किया जाना चाहिए जो पाठकों को अपनी ओर आकर्षित करने में सक्षम हों।

तालिका 18

(पाठ्य पुस्तक एवं सन्दर्भ ग्रन्थ)

क्र. सं.	विद्यालय का नाम	अति उत्तम	%	उत्तम	%	संतोष जनक	%	अच्छी नहीं	%	अस्पष्ट	%	योग
1.	ज0 न0 वि0 फर्रुखाबाद	00	0	10	20	30	60	10	20	00	0	50
2.	ज0 न0 वि0 मैनपुरी	04	7	16	30	24	44	10	19	00	0	44
3.	ज0 न0 वि0 आगरा	08	13	18	30	32	53	02	3	00	0	60
4.	ज0 न0 वि0 झांसी	02	6	10	28	14	59	10	27	00	0	36
5.	ज0 न0 वि0 मथुरा	00	0	12	31	24	63	02	5	00	0	38
6.	ज0 न0 वि0 कानपुर	04	9	10	23	22	50	06	14	00	0	44
7.	ज0 न0 वि0 एटा	04	8	08	15	16	31	16	31	04	7	52
8.	ज0 न0 वि0 मेरठ	12	19	14	22	18	28	20	31	00	0	64
9.	ज0 न0 वि0 शाहजहाँपुर	00	0	08	22	16	44	12	34	00	0	36
10.	ज0 न0 वि0 मिर्जापुर	04	10	04	10	12	29	14	33	08	19	42
11.	ज0 न0 वि0 गोण्डा	00	0	04	11	20	56	12	33	00	0	36
12.	ज0 न0 वि0 अलीगढ़	06	12	16	31	28	54	02	4	00	0	52
13.	ज0 न0 वि0 बरेली	06	15	16	40	10	25	04	10	04	10	40
14.	ज0 न0 वि0 मुजफ्फरनगर	02	4	14	27	36	69	00	0	00	0	52
15.	ज0 न0 वि0 महोवा	06	14	12	27	20	45	06	14	00	0	44
		58	8	**172**	25	**334**	47	**128**	18	**16**	2	**690**

उपर्युक्त तालिका के अन्तर्रगत उपयोग कर्ताओं को जवाहर नवोदय विद्यालय पुस्तकालयों द्वारा प्रदान की जाने वाली पाठ्य पुस्तकें एवं सन्दर्भ ग्रन्थों जैसे–पाठ्यक्रम से सम्बन्धित पुस्तके, कहानियाँ, बालकथाऐं, नाटक, शब्द कोष, विश्वकोष आदि की उपलब्धता के बारे में सर्वेक्षण से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण किया गया है। तथा उक्त आंकड़ों के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया गया है कि किसी भी ग्रन्थालय में पाठकों हेतु जो सबसे आवश्यक वस्तु है वह है पुस्तकें एवं अन्य पाठ्य सामग्री की स्थिति क्या है।

यदि उपरोक्त तालिका पर दृष्टि डाली जाय तो यह स्पष्ट होता है कि 47 प्रतिशत लगभग 334 उपयोगकर्ता में पाठ्य सामग्री को कामचलाऊ बताया है तथा 18 प्रतिशत छात्रों ने पुस्तकालय द्वारा संग्रहित पाठ्य सामग्री को काफी निम्न स्तर का बताया है। जिसका प्रमुख कारण या तो पुस्तकों का पुराना होना या फिर संग्रह की कमी ही प्रतीत होता है। सर्वेक्षण से प्राप्त परिणामों से यह भी पता चल रहा है कि 25 प्रतिशत उपयोग कर्ता पाठ्य सामग्री के संग्रहंण एवं वितरण से सन्तुष्ट हैं सर्वेक्ष्ज्ञण से प्राप्त कुल 8 प्रतिशत उपयोग कर्ता ऐसे हैं जिन्होंने उपयोग कर्ताओं ने अपनी राय स्पष्ट नहीं की है।

तालिका के सम्पूर्ण अवलोकन के पश्चात हम कह सकते हैं कि नवोदय विद्यालय समिति द्वारा संचालित सभी विद्यालय सम्प्रेषण की स्थिति सन्तोष जनक नहीं है। उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि विद्यालय सन्तोष जनक नहीं है। उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि विद्यालय समिति द्वारा पुस्तकालयों को जो धन उपलब्ध कराया जाता है वह पुस्तकालयों से सर्वांगीण विकास हेतु पर्याप्त नहीं है।

तालिका 19

(पत्र–पत्रिकाऐं एवं अन्य पाठ्य सामग्री)

क्र. सं.	विद्यालय का नाम	अति उत्तम	%	उत्तम	%	संतोष जनक	%	अच्छी नहीं	%	अस्पष्ट	%	योग
1.	ज0 न0 वि0 फर्रूखाबाद	04	8	20	40	18	36	04	8	04	8	50
2.	ज0 न0 वि0 मैनपुरी	08	18	22	50	12	27	02	4	00	0	44
3.	ज0 न0 वि0 आगरा	08	13	16	27	28	47	08	13	00	0	60
4.	ज0 न0 वि0 झांसी	02	6	06	16	18	50	04	11	06	16	36
5.	ज0 न0 वि0 मथुरा	00	0	08	21	18	47	12	31	00	0	38
6.	ज0 न0 वि0 कानपुर	08	18	16	36	20	45	00	0	00	0	44
7.	ज0 न0 वि0 एटा	04	7	24	46	16	30	08	15	00	0	52
8.	ज0 न0 वि0 मेरठ	14	21	26	40	14	21	04	6	06	9	64
9.	ज0 न0 वि0 शाहजहाँपुर	02	6	08	22	20	55	06	16	00	0	36
10.	ज0 न0 वि0 मिर्जापुर	00	0	06	14	20	48	16	38	00	0	42
11.	ज0 न0 वि0 गोण्डा	06	17	10	28	12	33	08	22	00	0	36
12.	ज0 न0 वि0 अलीगढ़	04	8	14	27	28	54	06	12	00	0	52
13.	ज0 न0 वि0 बरेली	02	5	16	40	20	50	00	00	02	5	40
14.	ज0 न0 वि0 मुजफ्फरनगर	10	19	14	27	18	35	10	19	00	0	52
15.	ज0 न0 वि0 महोवा	06	14	18	41	20	45	00	00	00	0	44
		78	11	**224**	33	**282**	41	**88**	13	**18**	2	**690**

उपर्युक्त तालिका में सर्वेक्षण से प्राप्त पत्र–पत्रिकाओं एवं अन्य पाठ्य सामग्री से सम्बन्धित आंकड़ों को दर्शाया गया है। तालिका द्वारा विश्लेषित आंकड़ों के माध्यम से यह ज्ञात करने का प्रयास किया गया है कि पुस्तकालय द्वारा पाठ्कों के बौद्धिक एवं सर्वांगीण विकास में सहाय पत्र–पत्रिकाओं एवं अन्य पाठ्य सामग्री की स्थिति क्या है। यह सर्वविदित तथ्य है कि नवादित पाठकों को पत्र–पत्रिकाऐं ही पुस्तकालय की तरफ आकर्षित करने में सहायक सिद्ध होती है। जो आगे चल कर किसी के भी व्यक्तित्व के विकास में सहायक सिद्ध होती है।

यदि सम्पूर्ण तालिका में विश्लेषित आंकड़ों पर नजर डाली जाय तो ज्ञात होता है कि सर्वेक्षण में भाग लेने वाले 690 उपयोग कर्ताओं में से सर्वाधिक 41 प्रतिशत लगभग 282 छात्रों द्वारा पत्र–पत्रिकाओं की स्थिति को मात्र काम चलाऊ ही बताया है। 33 प्रतिशत लगभग 224 छात्रों के विचार से पुस्तकालयों में अवाप्त की जाने वाली पत्र–पत्रिकाओं की स्थिति सन्तोष जनक है। जिसका कारण उन छात्रों के विचार हो सकता है जो किसी महानगर के आसपास स्थिति विद्यालयों में पढ़ते हो। सर्वेक्षण में 13 प्रतिशत लगभग 88 छात्रों द्वारा क्रय की जाने वाली पत्र–पत्रिकाओं की स्थिति को अपर्याप्त बताया है। जबकि 2 प्रतिशत लगभग 18 उपयोग कर्ताओं ने इस सम्बन्ध में कोई स्पष्ट राय व्यक्त नहीं की है।

यदि सम्पूर्ण स्थिति पर एक नजर डाली जाय तो स्पष्ट होता है कि उपर्युक्त विषय में काफी सुधार एवं ध्यान देने की आवश्यकता है।

तालिका 20

पुस्तकालय उपयोग का उद्देश्य

क्र. सं.	विद्यालय का नाम	दैनिक क्रियाकलाप	%	स्वाध्याय	%	निर्देशित पाठ्यक्रम	%	अच्छी नहीं	%	योग
1.	ज0 न0 वि0 फर्रूखाबाद	32	64	38	76	44	88	22	44	50
2.	ज0 न0 वि0 मैनपुरी	38	86	36	82	42	95	20	45	44
3.	ज0 न0 वि0 आगरा	58	97	48	80	56	93	44	73	60
4.	ज0 न0 वि0 झांसी	36	100	32	89	36	100	14	39	36
5.	ज0 न0 वि0 मथुरा	36	95	22	58	38	100	28	74	38
6.	ज0 न0 वि0 कानपुर	38	86	34	77	42	95	16	36	44
7.	ज0 न0 वि0 एटा	50	96	50	96	52	100	42	81	52
8.	ज0 न0 वि0 मेरठ	58	91	54	84	60	94	28	44	64
9.	ज0 न0 वि0 शाहजहाँपुर	32	89	20	56	36	100	28	78	36
10.	ज0 न0 वि0 मिर्जापुर	42	100	38	90	42	100	32	76	42
11.	ज0 न0 वि0 गोण्डा	36	100	20	56	38	100	18	50	36
12.	ज0 न0 वि0 अलीगढ़	52	100	38	72	48	92	30	58	52
13.	ज0 न0 वि0 बरेली	40	100	22	55	40	100	16	40	40
14.	ज0 न0 वि0 मुजफ्फरनगर	46	88	42	81	50	96	40	77	52
15.	ज0 न0 वि0 महोवा	44	100	38	86	44	100	32	73	44
		638	92	532	77	668	97	410	59	690

इस तालिका के अर्न्तरगत उपयोग कर्ताओं द्वारा पुस्तकालय को क्यों उपयोग किया जाता है, उनका उद्देश्य क्या है तथा पुस्तकालय उपयोग कर्ताओं को आकर्षित करने में कितना सक्षम है आदि के बारे में जानने का प्रयास किया गया है। पुस्तकालय एक ऐसी संस्था होती है जिसके हानि तथा लाभ का आंकलन उसमें संग्रहित पाठ्य सामग्री के उपयोग एवं पुस्तकालय द्वारा प्रदान की ज़ाने वाली सेवाओं के आधार पर किया जाता है। यदि पुस्तकालय पाठकों की सभी अभिगमों को पूर्ण करने में सक्षम है तो कहा जा सकता है कि पुस्तकालय लाभ की स्थिति में है यदि ऐसा करने में वह सक्षम नहीं है तो हम उसे एक उत्तम पुस्तकालय की संज्ञा नहीं दे सकते हैं।

उपर्युक्त तालिका के अर्न्तरगत प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण के उपरान्त ज्ञात होता है कि 97 प्रतिशत यानी कि 690 में 668 उपयोग कर्ताओं का कहना हैं कि कक्षा में पढ़ाये जाने वाले पाठ्य कम से सम्बन्धि कुछ प्रश्नों के उत्तर खोजनें तथा परीक्षा की तैयारी हेतु पाठ्य पुस्तकें लेने के लिए ही पुस्तकालय में जाते हैं ताकि वह परीक्षा में सफलता प्राप्त करने के लिए आवश्यक पाठ्य सामग्री जुटा सकें। सर्वेक्षण में सम्मिलित 690 उपयोग कर्ताओं में से 532 अर्थात 77 प्रतिशत का यह मानना है कि वह पुस्तकालय का उपयोग परीक्षा के लिए संग्रहित पाठ्य सामग्री के अलावा स्व–अध्ययन हेतु भी पुस्तकालय का उपयोग करते हैं। चूंकि सभी नवोदय विद्यालय माध्यमिक स्तर के होते हैं तथा उनमें से सम्बन्धित सभी छात्रों का

पुस्तकालय जाना आवश्यक है इसी सन्दर्भ में 92 प्रतिशत लगभग 638 छात्रों का मानना है दैनिक क्रिया कलापों के तहत ही वह विद्यालय पुस्तकलाय का उपयोग करते हैं। सर्वेक्षण में मात्र 59 प्रतिशत अर्थात 410 उपयोग कर्ताओं का मानना है कि वह दैनिक क्रिया कलापों के अतिरिक्त अन्य जैसे– प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारी से सम्बन्धित पाठ्य सामग्री की खोज एवं अपने देश तथा दुनिया से अद्यटन बनाये रखने हेतु पुस्तकालय का उपयोग करते हैं।

यदि उपर्युक्त सम्पूर्ण तथ्यों पर नजर डालें तो हम कह सकते हैं कि नवोदय विद्यालय के समस्त छात्रों में पुस्तकालय के उपयोग हेतु रूचि का अभाव है जिसका मुख्य कारण पुस्तकालय द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाओं का अभाव तथा उपयोग कर्ताओं में पुस्तकालय के सम्बन्ध में पर्याप्त जानकारी न होना प्रतीत होता है।

तालिका 21

(संकलित पुस्तकों की उपयोगिता)

क्र. सं.	विद्यालय का नाम	90% से अधिक	%	90% से कम	%	75% से कम	%	50% से कम	%	25% से कम	%	योग
1.	ज0 न0 वि0 फर्रूखाबाद	08	16	06	12	28	56	08	16	00	0	50
2.	ज0 न0 वि0 मैनपुरी	12	27	08	18	20	45	04	9	00	0	44
3.	ज0 न0 वि0 आगरा	22	37	24	40	14	23	00	0	00	0	60
4.	ज0 न0 वि0 झांसी	06	17	08	22	12	33	08	22	02	6	36
5.	ज0 न0 वि0 मथुरा	08	21	12	32	14	37	04	11	00	0	38
6.	ज0 न0 वि0 कानपुर	14	32	28	64	02	5	00	0	00	0	44
7.	ज0 न0 वि0 एटा	02	4	36	69	12	23	02	4	00	0	52
8.	ज0 न0 वि0 मेरठ	10	16	40	63	10	16	04	6	00	0	64
9.	ज0 न0 वि0 शाहजहाँपुर	08	22	06	17	22	61	00	0	00	0	36
10.	ज0 न0 वि0 मिर्जापुर	14	33	18	43	10	24	00	0	00	0	42
11.	ज0 न0 वि0 गोण्डा	06	17	08	22	10	28	12	33	00	0	36
12.	ज0 न0 वि0 अलीगढ़	12	23	10	19	16	31	10	19	04	8	52
13.	ज0 न0 वि0 बरेली	10	25	18	45	12	30	00	0	00	0	40
14.	ज0 न0 वि0 मुजफ्फरनगर	18	35	20	38	14	27	00	0	00	0	52
15.	ज0 न0 वि0 महोवा	12	27	14	32	16	37	02	5	00	0	44
		162	23	**256**	37	**212**	31	**54**	8	**06**	1	**690**

उपर्युक्त तालिका के अन्तर्रगत संकलित पाठ्य सामग्री के उपयोग को छात्रों के सम्बन्ध में विश्लेषित एवं निष्कर्षित करने का प्रयास किया गया है। इस तालिका के अन्तर्रगत पुस्तकालय में संग्रहित पाठ्य सामग्री की उनके लिए क्या उपयोगिता है का अध्ययन किया गया है। क्योंकि किसी श्री पुस्तकालय में पाठ्य सामग्री का संग्रहण एवं संरक्षण उपयोग कर्ताओं द्वारा उसकी उपयोगिता के आधार पर किया जाता है ताकि धन एवं श्रम दोनों की हानि को बचाया जा सके एवं पाठ्य सामग्री का सम्पूर्ण उपयोग हो सके।

तालिका के आधार पर सर्वेक्षण से प्राप्त आंकड़ों पर यदि दृष्टिपात किया जाय तो ज्ञात होता है। विभिन्न नवोदय विद्यालय ग्रन्थालयों में संग्रहित पाठ्य सामग्री का पूर्ण उपयोग हो रहा है ऐसा केवल 23 प्रतिशत छात्रों का ही मानना है। 37 प्रतिशत छात्रों का गत है कि कुल संग्रहित पाठ्य सामग्री में से 90 प्रतिशत से भी कम ही उपयोग करने लायक है। वहीं 31 प्रतिशत छात्रों का मत है कि संग्रहित पाठ्य सामग्री का 75 प्रतिशत से कम ही भाग उपयोग में लाने योग्य है। साथ ही 8 प्रतिशत छात्रों का मत है कि पुस्तकालयों द्वारा प्रदान की जाने वाली 50 प्रतिशत से भी कम ही पाठ्य सामग्री उपयोग करने लायक है।

यदि उपर्युक्त तथ्यों का अवलोकन किया जाय तो यह स्पष्ट होता है क पाठकों की आवश्यकतानुसार किसी भी विद्यालय में पाठ्य सामग्री उपलब्ध नहीं है। जिसका प्रमुख कारण धनाभाव के कारण नवीन एवं पाठ्कों की आवश्यकता के अनुरूप पाठ्य सामग्री का कय न किया जाना प्रतीत होता है।

अध्याय –छः

निष्कर्ष एवं उपसंहार

निष्कर्ष एवं उपसंहार

प्रस्तुत अध्ययन नवोदय विद्यालय गन्थालयों एवं सेवाओं का अध्ययन करने के उपरान्त निम्नांकित निष्कर्ष प्रस्तुत किये गये हैं। ये निष्कर्ष नवोदय विद्यालय ग्रन्थालयों के लिए एक सामान्य रूप से एवं उत्तर प्रदेश के नवोदय विद्यालयों के लिए विशेष रूप से निष्कर्षित हैं दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि निम्नांकित निष्कर्षों के द्वारा उत्तर प्रदेश के वोदय विद्यालय ग्रन्थालयों की वास्तविक स्थिति को स्पष्ट किया जा सकता है। चुकिं नवोदय विद्यालय ग्रन्थालय भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा नियोजित योजनाओं एवं नीतियों के तहत संचालित होते हैं अतः प्रस्तुत चित्रण भारत वर्ष के किसी भी प्राप्त में स्थित नवोदय विद्यालय की स्थिति का दर्पण है। साथ ही नई शिक्षा नीति के तहत स्थापित कोई भी अन्य ग्रन्थालय जो स्कूल शिक्षा से सम्बन्धित है की स्थिति का भी चित्रण करता है। जैसे केन्द्रीय विद्यालय पुस्तकालय, बाल भारती विद्यालय पुस्तकालय, सरस्वती शिशु मन्दिर पुस्तकालय, दयानन्द विद्यालय समिति द्वारा संचालित विद्यालय पुस्तकालयों के लिए भी वर्तमान शोध प्रबन्ध उपयोगी हो सकता है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के निष्कर्ष निम्नलिखित हैं :–

1. पिछले अध्याय में विवेचन के उपरान्त यह निष्कर्ष निकलता है कि नवोदय विद्यालय के विभिन्न शिक्षण संस्थानों में मुदालियर आयोग एवं अन्य शिक्षा समितियों की अनुसंसा के अनुरूप शिक्षकों एवं प्रशासनिक कर्मचारियों की नियुक्ति नहीं की गयी। है। जो कि किसी भी विद्यालय के सफल संचालन में बाधा उत्पन्न करती है। विभिन्न विद्यालयों का निरीक्षण करते समय विभिन्न प्रशासनिक अधिकारियों से हुए वार्तालाप एवं साक्षातकार के आधार पर भी यह दृष्टिगोचर हुआ कि संगठन के विभिन्न दूरस्थ ग्रामीण इलाकों में स्थित हैं। अतः केन्द्रीय विद्यालय एवं अन्य शिक्षण संस्थानों से स्थानान्तरित होने वाले शिक्षकों की रूचि विद्यालयों में ठहरने की नहीं पायी गयी।

2. किसी भी ग्रन्थालय के सफल संचालन हेतु सबसे प्रथम एवं महत्वपूर्ण कार्य पाठ्य सामग्री के चयन का होता है। उत्तम पाठ्य सामग्री का संग्रहण एवं संरक्षण ही किसी भी पुस्तकालय को श्रेष्ठ सिद्ध करने में सहायक होता है। परन्तु यदि विगत अध्याय के आधार पर देखा जाय तो स्पष्ट होता है कि अधिकतर नवोदय विद्यालय प्रन्थालयों में पाठ्य सामग्री के चयन का कार्य प्राचार्य एवं शिक्षकों द्वारा ही सम्पन्न किया जाता है। माध्यमिक शिक्षा आयोग एवं अन्य पुस्तकालय से सम्बन्धि आयोगों एवं समितियों की

सिफारिसों पर गौर किया जाय तो ज्ञात होता है कि पाठ्य सामग्री चयन जैसे महत्वपूर्ण कार्य में पुस्तकालयध्यक्ष एवं उपयोग कर्ताओं की भूमिका को अधि महत्व प्रदान किया जाना चाहिए।

जब कि सर्वेक्षण में पाया गया कि नवोदय विद्यालय समिति द्वारा संचालित लगभग सभी विद्यालय ग्रन्थालयों में उपयोगकर्ताओं एवं पुस्तकालयध्यक्ष की भूमिका नगण्य के बराबर है। जो कि पुस्तकालय एवं छात्रों के बौद्धिक एवं शैक्षणिक विकास की दृष्टि से उचित नहीं है।

3. विगत अध्याय के विश्लेषण के उपरान्त यह भी ज्ञात होता है। नवोदय विद्यालय ग्रन्थालयों में प्रतिवर्ष कय की जाने वाली पाठ्य सामग्री उपयोग कर्ताओं की दृष्टिकोण से पर्याप्त नहीं है। तालिका में दिये गये पांचवर्ष के आंकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि प्रतिवर्ष कय की जाने वाली पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं एवं अन्य पाठ्य सामग्री की वृद्धि दर काफी कम है। जोकि किसी भी पुस्तकालय के उद्देश्यों को पूरा करने एवं ग्रन्थालयों द्वारा प्रदान की जाने वाली संवाओं हेतु पर्याप्त नहीं है।

उपर्युक्त कारणों के पीछे विद्यालयों ग्रन्थालयों हेतु प्रदान की जाने वाली अनुदान राशि प्रमुख कारण हो सकती है ऐसा प्रतीत होता है। क्योंकि पुस्तकालयों हेतु मानव संसाधन विकास मंत्रालय एवं नवोदय

विद्यालय समिति द्वारा विद्यालयों हेतु आवंटित कुल धन राशि का केवल 2 से 3 प्रतिशत होकि लगभग 15 से 20 हजार के मध्य आता है, ही प्राप्त हो पाता है। इतनी छोटी राशि किसी भी विद्यालय पुस्तकालय के रखरखाव एवं समुचित विकास हेतु पर्याप्त नहीं प्रतीत होती है।

4. विगत अध्याय को अवलोकन करने के उपरान्त यह भी निष्कर्ष निकलता है। कि नवोदय विद्यालय समिति द्वारा संचालित समस्त विद्यालयों के ग्रन्थालयों में प्रयाप्त एवं मानकों के अनुरूप संग्रह नहीं है, क्योंकि आंकड़ों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि पुस्तकों संग्रह 7.42 पुस्तक प्रति उपयोग कर्ता से 16.96 पुस्तक प्रति उपयोग कर्ता के मध्य है जो भारतीय मानक ब्यूरो द्वारा प्रदत्त मानकों से काफी निम्न स्तर पर है जब कि माध्यमिक स्तर तक छात्रों को लगभग 6 से 10 विषयों का अध्ययन करना पड़ता है। अतः विद्यार्थियों को काफी अधिक संख्या में पाठ्य सामग्री की आवश्यकता है, चूंकि सभी नवोदय विद्यालय आवासीय एवं ग्रामीण क्षेत्रों में होते हैं तथा छात्रों को वर्दी, भोजन, आवास एवं समस्त पाठ्य समग्री को उपलब्ध कराने का दायित्व नवोदय विद्यालय समिति एवं मानव संसाधन विकास मंत्रालय का ही होता है। अतः पाठकों को विद्यालय पुस्तकालय में संग्रहित पाठ्य सामग्री पर ही

निर्भर रहना पड़ता है।

यदि उपर्युक्त तथ्यों पर ध्यान दिया जाय तो स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि नवोदय विद्यालय ग्रन्थालयों में संग्रहित पाठ्य सामग्री उपयोग कर्ताओं की अभिगम को पूर्ण करने हेतु पर्याप्त नहीं है।

5. विगत अध्याय के अध्ययन एवं विश्लेषण के उपरान्त यह भी निष्कर्ष निकलता है कि नवोदय विद्यालय समिति द्वारा संचालित लगभग समस्त विद्यालय ग्रन्थालयों में सरकार द्वारा व्यय किया जाने वाला धन प्रति उपयोग कर्ता लगभग नगण्य है। विगत अध्याय के विवेचन से स्पष्ट होता है कि ग्रन्थालयों पर किया जाने वाला व्यय प्रति उपयोग कर्ता 23 रूपये 25 पैसे से लेकर अधिकतम 55 रूपये 83 पैसे के मध्य है। यदि नवोदय विद्यालय समिति द्वारा अन्य मदों जैसे—वर्दी, भोजन, खेलकूद एवं मनोरंजन आदि पर व्यय किये जाने वाले धन की तुलना पुस्तकालय पर व्यय किये जाने वाले धन से की जाय तो काफी चौंकाने वारले तथ्य सामने आते हैं। सर्वेक्षण के समय विद्यालय प्राचार्य, शिक्षकों एवं अन्य कर्मचारियों के मौखिक साक्षातकार के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि प्रति छात्र वर्दीपर लगभग 400 रूपये प्रतिवर्ष, भोजन पर लगभग 7,600 रूपये प्रतिवर्ष एवं खेलकूद आदि पर भी 100 से 150 रूपये प्रतिवर्ष व्यय किये ज़ाते हैं।

उपर्युक्त आंकड़ों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि नवोदय विद्यालय ग्रन्थालयों पर भारत सरकार एवं नवोदय विद्यालय समिति द्वारा पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जाता है जो कि काफी चिन्ता का विषय है। ग्रन्थालयों का समुचित विकास किये बिना छात्र एवं छात्राओं के मानसिक एवं बौद्धिक विकास की कल्पना करना सम्भव नहीं है।

6. विगत अध्याय के विवेचन से यह भी दृष्टिगोचर होता है कि लगभग समस्त नवोदय विद्यालय ग्रन्थालयों में पुस्तक चयन की भूमिका विद्यालय प्रचार्यों एवं प्रशासनिक अधिकारियों के इर्दगिर्द ही घूमती है। उपरोक्त कार्य में पुस्तकालयध्यक्ष एवं उपयोग कर्ताओं की कहीं कोई भूमिका है ऐसा प्रतीत नहीं होता है। किसी भी नवोदय विद्यालय ग्रन्थालय में कोई भी पुस्तक चयन समिति अस्तित्व में हो ऐसा प्रतीत नहीं होता है। किसी भी विद्यालय पुस्तकालय की पुस्तक चयन समिति में विद्यालय प्राचार्य, प्रशासनिक अधिकारियों, संबन्धित विषयों के विशेषज्ञों, पुस्तकालयध्यक्ष एवं उपयोग कर्ताओं को सम्मिलित किया जाता है जब कि नवोदय विद्यालय पुस्तकालयों में इस प्रकार की समिति कहीं भी अस्तित्व में हो ऐसा ज्ञात नहीं हो सका।

7. विगत अध्याय के विवेचन के आधार पर यह भी निष्कर्ष निकलता है

कि नवोदय विद्यालय समिति द्वारा संचालित लगभग समस्त विद्यालय पुस्तकालयों में कार्यरत पुतस्तकालयध्यक्ष एवं अन्य कर्मचारियों हेतु शिक्षण एवं प्रशिक्षण की ओर न तो पर्याप्त ध्यान दिया जाता है और नही पुसतकालय कर्मचारी इस कार्य में अधिक रूचि रखते हैं। जब कि सूचना एवं प्रौद्योगिकी के इस युग में समस्त विद्यालय पुस्तकालय कर्मचारियों को अपने आप को नवीन जानकारियों एवं खोजों आदि से अद्यटन रखना अति आवश्यक हो गया है क्योंकि आज के सूचना एवं प्रौद्योगिकी के इस युग में पुसतकालय का स्वरूप बड़ी ही तीव्र गति से बदल रहा है। जहॉ एक ओर आज से कुछ वर्ष पहले तक पुस्तकालय में केवल पुस्तकों, सन्दर्भ ग्रन्थों एवं पत्र–पत्रिकाओं आदि का ही संग्रह एवं संरक्षण किया जाता था वहीं आज के युग में पुस्तकों का स्थान, सी0 डी0, वीडियों–आडियों कैसेट्स, डी0 वी0 डी0 आदि ने ले लिया है। अतः उपर्युक्त अमुद्रित पाठ्य सामग्री का संग्रह एवं संरक्षण उनसे सम्बन्धित प्रशिक्षण के बिना संभव नहीं है।

विगत अध्याय के अवलोकन एवं विभिन्न नवोदय विद्यालय ग्रन्थालयों में कार्यरत कर्मचारियों के मौखिक साक्षात कार से यह निष्कर्ष निकलकर आया कि विद्यालयों के पास कर्मचारियों हेतु प्रशिक्षण के लिए आवश्यक धन उपलब्ध न होने के कारण उन्हें पर्याप्त प्रशिक्षण प्रापत नहीं हो पाता है। जैसा कि पीछे

भी स्पष्ट किया जा चुका है कि विद्यालय ग्रन्थालयों पर अन्य विभागों की तुलना में काफी कम धन व्यय किया जाता है। अतः कर्मचारियों को समुचित शिक्षण एवं प्रशिक्षण प्राप्त न हो पाने के पीछे एक प्रमुख कारण धन की कमी भी प्रतीत होता है।

8. विगत अध्याय के विवेचन के उपरान्त यह भी निष्कर्ष निकलता है कि लगभग समस्त नवोदय विद्यालय ग्रन्थालयों में पाठ्य सामग्री का संग्रहण एवं संरक्षण तो किया जाता है। लेकिन उनका रख–रखाव तकनीकी रूप से नहीं किया जाता है क्योंकि सर्वेक्षण करते समय यह पाया गया कि अधिकतर विद्यालय पुस्तकालयों में रख–रखाव में प्रयुक्ति की जाने वाली विधियों जैसे– पुस्तक वर्गीकरण एवं सूचीकरण आदि कार्य पूर्ण नहीं है। जिसका परिणाम स्वरूप उपयोग कर्ताओं को अपनी रूचि एवं आवश्यकता की पाठ्य सामग्री को खोजनें एवं प्राप्त करने में काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

   जब उपर्युक्त तकनीकी कार्यों के पूर्ण न होने के कारण को जानने का प्रयास किया गया तो यह तथ्य उभर कर सामनें आया कि अधिकतर विद्यालयों में पुस्तकालयध्यक्ष पूर्ण प्रशिक्षित नहीं है। जिसका प्रमुख कारण नवोदय विद्यालय ग्रन्थालयों हेतु ग्रन्थालयी की न्यूनतम योग्यता पुस्तकालय विज्ञान में डिप्लोमा नवोदय

विद्यालय समिति द्वारा रखना प्रतीत होता है। यदि पुस्तकालय विज्ञान डिप्लोमा के पाठ्यक्रम पर दृष्टि डाली जाय तो यह स्पष्ट होता है कि तकनीकी कार्य जैसे–पुस्तक वर्गीकरण एवं सूचीकरण जैसे कार्यों को सम्पादित करने हेतु उक्त पाठ्यक्रम पर्याप्त नहीं है।

यदि पुस्तकालय द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाओं पर भी एक दृष्टि डाली जाय तो यह निष्कर्ष निकल कर सामने आता है कि विद्यालय पुस्तकालय में आने वाले छात्रों को कभी–कभी उनके द्वारा पूछे गये प्रश्नों का उत्तर जो कि अधिक तर पुस्तकालय के उपयोग से सम्बन्धि होते हैं, पुस्तकालयध्यक्ष द्वारा मौखिक रूप से ही बता दिये जाते हैं, जब कि कभी–कभी पाठकों द्वारा पूछे गये प्रश्नों का उत्तर दिया भी नहीं जाता है तथा उन्हें डाँट कर शानत रहने को कह दिया जाता है। जिसके परिणाम स्वरूप विद्यार्थियों में पुस्तकालय की ओर पर्याप्त रूचि न होना भी सर्वेक्षण के समय ज्ञात हुआ।

प्रत्यक्ष रूप से लगभग समस्त विद्यालय पुस्तकालयों का प्रत्यक्ष रूप से अवलोकन पर ज्ञात हुआ कि कुछ पुस्तकालयों को छोड़ कर लगभग सभी पुस्तकालयों में पाठक दीक्षा, सन्दर्भ सेवा, प्रतिलिपिकरण सेवा एवं अन्य सभी प्रकार की सेवायें जो पुस्तकालयों द्वारा उपयोग कर्ताओं को प्रदान की जानी चाहिए,

उनका सर्वथा अभाव है।

9. विगत अध्याय के विश्लेषण एवं अवलोकन के उपरान्त यह भी निष्कर्ष निकलता है कि लगभग सभी नवोदय विद्यालय पुस्तकालयों में प्रति वर्ष पाठ्य सामग्री का कय तो किया जाता है। परन्तु यदि प्रतिवर्ष कय की जाने वाली पुस्तकों की उपयोग कर्ताओं से तुलना की जाय तो ज्ञात होता है कि प्रति उपयोग कर्ता के हिसाव से प्रतिवर्ष वर्ष कय की जानें वाली पुस्तकों की संख्या 0.12 पुस्तक प्रति उपयोगकर्ता से अधिकतम 1.27 पुस्तक प्रति उपयोग कर्ता के बीच ही कय की जाती है जो कि अपर्याप्त ही नहीं वरन विभिन्न आयोगों एवं समितियों द्वारा प्रदत्त मानकों से काफी कम है। जिसका प्रभाव प्रत्यक्ष रूप से पाठकों पर ही पड़ता है। उपर्युक्त तथ्यों से यह स्पष्ट होता है कि प्रतिवर्ष पुस्तकों की वृद्धि दर का अनुपात उनके उपयोग कताओं की तुलना में बिल्कुल नगण्य है।

मुख्य निष्कर्ष

1. अधिकतर जवाहर नवोदय विद्यालय पुस्कालयों में पुस्तकालयध्यक्षों की नियुक्ति वर्ष 1990–1993 के मध्य हुई है जो कि लगभग 62.5 प्रतिशत है, 25 प्रतिशत नियुक्तियां वर्ष 1994–97 के मध्य हुई हैं जबकि मात्र 12.5 प्रतिशत नियुक्तियां ही विद्यालयों की स्थापना के समय वर्ष 1986–88 के मध्य हुई थी। प्रारम्भिक नियुक्तियों की तुलना में वर्ष 1990–93 में जहाँ 62.5 प्रतिशत की वृद्धि हुई वहीं वर्ष 1994–97 के मध्य 25 प्रतिशत की कमी आयी।

2. जवाहर नवोदय विद्यालयों में 75 प्रतिशत पुस्तकालयध्यक्ष स्थाई है जबकि 20.83 प्रतिशत प्रशिक्षण काल एवं 4.16 प्रतिशत पुस्तकालयध्यक्ष प्रतिनियुक्ति पर कार्यरत हैं।

3. अन्य स्थानों पर अथवा अन्य संस्थानों पर कार्य करने के लिए लगभग 62.5 प्रतिशत पुरूतकालयध्यक्ष या तो आवेदन दे रखे हैं या फिर उनके वुलावा पत्र आ चुके हैं।

4. कुछ ही पुस्तकालय व्यावसायिक संगठन जैसे – I.L.A., IASLIC अथवा संस्थाओं से आजीवन या अल्पकालीन सदस्य के रूप में जुडे हैं।

5. कुछ ही पुस्तकालयाध्यक्षों में शैक्षणिक विकास एवं उत्थान से सम्बन्धित कार्यक्रमों जैसे – संगोष्ठियों तथा सभाओं आदि में भाग लेते हैं जबकि अधिकतर पुस्तकालयध्यक्षों की उन सब में कुछ रूचि नहीं दिखाई पड़ती।

जवाहर नवोदय विद्यालय ग्रन्थालयों की स्थिति

1. लगभग सभी जवाहर नवोदय विद्यालय ग्रन्थालय एक हाल में स्थित हैं जो कि प्रशासनिक भवन में केन्द्रीय स्थान पर स्थित हैं। पुस्त्कों को रखने एवं पठनपाठन कार्य हेतु उसी हाल में व्यवस्था है। और यह स्पष्ट हो रहा है कि समस्त पुस्तकालय से सम्बन्धित कार्य एक ही हाल में सम्पन्न किये जाते हैं अध्ययन, तकनीकी कार्य एवं पुस्तकालयध्यक्ष के बैठने के लिए अलग से कोई व्यवस्था नहीं है।

2. अधिकतर नवोदय विद्यालय पुसतकालयों में भौतिक सुख सुविधाओं का अभाव है। जबकि सभी पुस्तकालयों में हवा एवं प्रोश की समुचित व्यवस्था है। सभी विद्यालय पुस्तकालयों में लगभग 40 पाठकों को बैठाने की ही व्यवस्था है। तथा शिक्षक एवं अन्य कर्मचारियों के बैठने हेतु वही पर एक अलग मेज की व्यवस्था की गयी है। परन्तु नवनिर्मित भवनों में भी उपयोगकर्ताओं हेतु भौतिक सुख सुविधाओं पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जाता है।

3. अधिकतर नवोदय विद्यालय पुस्तकालयों में उपयोगकर्ताओं की संख्या 400 से 600 के मध्य है। जबकि कुछ ही विद्यालय पुस्तकालय ऐसे हैं जहाँ पर पाठकों की संख्या 100 से 400 के मध्य पायी गयी।

4. अधिकतर नवोदय विद्यालय पुस्तकालय लगभग आठ घण्टे जब तक कक्षाऐं चलती है तब तक ही खुलते हैं जिनमें जलपान एवं भोजन का समय जो कि 2 घण्टे का होता है शामिल है। कुछ ही विद्यालयों में पुस्तकालयों को शाम के समय खोला जाता है, वह भी जब परीक्षा का समय निकट होता है तब। तथा दसवीं एवं वारहवीं कक्षाओं की बोर्ड परीक्षा के समय विद्यार्थियों की विशेष मांग पर छुट्टियों पर रविवार के दिन पुस्तकालयों को खोला जाता है।

पाठ्य सामग्री का संग्रहण एवं उनकी तकनीकी प्रक्रिया

1. सभी नवोदय विद्यालय पुस्तकालयों में पाठ्य पुस्तकें (जो सी0वी0एस0सी0 के पाठ्यक्रम पर आधरित है तथा जिन्हें एन0सी0ई0आर0टी0 द्वारा प्रकाशित किया जाता है) का क्रय केन्द्रीय रूप से नवोदय विद्यालय समिति के क्षेत्रीय कार्यालयों द्वारा किया जाता है। तथा आवश्यकतानुसार सभी विद्यालयो में इन्हें वितरित करा दिया जाता है। सामान्य एवं सप्दर्भ ग्रन्थ तथा कुछ नीन प्रकाशित पुस्तकों क्रय सभी नोदय विद्यालयों द्वारा स्वंय ही किया जाता है। लगभग सभी नवोदय विद्यालय पुस्तकालयों में पुस्तक संग्रह 3000 से 5000 के मध्य ही है, कुछ ही बहुत पुराने विद्यालय हैं जहाँ पर संग्रह 6000 या उससे अधिक है। लगभग सभी नवोदय विद्यालयों में अमुद्रित पाठ्य सामग्री जैसे –

डी0वी0डी0, सी0डी0, दृब्य श्रृव्य, टी0वी0, कम्प्यूटर आदि का पूर्णतः अभाव दिखाई दे रहा है।

2. लगभग सभी विद्यालय पुस्तकालयहिन्दी तथा अंग्रेजी दोनों भाषाओं के समाचार पत्र एवं पत्रिकाऐं मांगते हैं। लेकिन उपयोगकर्ताओं की दृष्टिकोण से वह भी पर्याप्त नहीं हैं।

3. हिन्दी में प्रकाशित दैनिक जागरण तथा राष्टीय सहारा एवं कुछ प्रसिद्व पत्रिकाऐं पुस्तकालयों द्वारा क्रय की जाती है। तथा अंग्रेजी में प्रकाशित टाइम्स आफ इण्डिया एवं हिन्दुस्तान टाइम्स समाचार पत्र छात्रों द्वारा अधिक पसन्द किये जाते हैं।

4. प्रतियोगिता दर्पण, इण्डिया टुडे पत्रिकाऐं लगभग सभी विद्यालय ग्रन्थालयों में छात्रों एवं शिक्षकों की पहली पसंद होती है।

5. लगभग सभी नवोदय विद्यालय ग्रन्थालयों में आवश्यक सन्दर्भ ग्रन्थ जैसे – इनसाइक्लोपीडिया, शब्दकोश, डाइरेक्टी, वार्षिकी तथा कुछ नवीन विषयों पर आधारित हिन्दी अथवा अंग्रेजी में प्रकाशित पुस्तकें नवोदय विद्यालय समिति के क्षेत्रीय कार्यालय अथवा मुख्यालय द्वारा क्रय कर सभी विद्यालय पुस्तकालयों हेतु वितरित की जाती हैं।

6. अभिलेखों की तकनीकी प्रक्रिया के तहत दशमलव वर्गीकरण पद्यति तथा एन्ग्लो अमेरिकन कैटालागिंग रूल्स–2 का उपयोग

किया जाता है। तथा केवल 50 प्रतिशत पुस्तकालय ही तकनीकी प्रक्रिया को पूर्ण रूप से कर रहे हैं।

पुस्तकालय सेवाऐं

1. लगभग समस्त नवोदय विद्यालय पुस्तकालयों में एक निश्चित कार्यक्रम के तहत सभी कक्षाओं के छात्रों हेतु पुस्तकालय उपयोग का समय निर्धारित किया गया है। पुस्तक आदान–प्रदान, सन्दर्भ सेवा, समाचार पत्रों को पढ़ने की सुविधा तथा अन्य आवश्यक सेवाऐं पुस्तकालयों द्वारा प्रदान की जाती है।

2. पुस्तकालय उपयोगकर्ताओं की आवश्यकतानुसार आदान–प्रदान सेवा, पाठक शिक्षा तथा अन्य पुस्तकालय से सम्बन्धित निर्देश समय–समय पर उपयोगकर्ताओं के दिये जाते हैं।

3. सभी पुस्तकालयों में बन्द कक्ष प्रणाली को लागू किया गया है जिसमें पुस्तकों को बन्द अलमारी में ताला लगा कर रखा जाता है। सन्दर्भ ग्रन्थों का उपयोग, उपयोगकर्ताओं को दिये गये पुस्तकालय सदस्यता कार्डों पर किया जाता है तथा सामान्य पुस्तकों के सम्बन्ध में नवोदय विद्यालय पुस्तकालयों द्वारा बनाये गये नियमों को लागू किया जाता है।

4. लगभग समस्त नवोदय विद्यालय ग्रन्थालयों में छात्रों को दो कार्ड तथा शिक्षकों के लिए पांच कार्ड जारी किये जाते हैं जिन पर वह

पुस्तकों को प्राप्त कर सकते हैं। कुछ नवोदय विद्यालय ग्रन्थालयों में उपयोगकर्ताओं की आवश्यकतानुसार उनके द्वारा पढ़ने अथवा पढ़ाये जाने वाले विषयों के आधार पर पुस्तकें प्रदान की जाती हैं।

5. जवाहर नवोदय विद्यालय के लगभग 41.66 प्रतिशत (10) पुस्तकालयों में ब्राउन प्रणाली तथा 6.66 प्रतिशत (4) पुस्तकालयों में न्यूयार्क प्रणाली का उपयोग पुस्तक आदान–प्रदान हेतु किया जाता है। बचे हुए समस्त विद्यालय ग्रन्थालयों में पुस्तकों एवं पत्र–पत्रिकाओं हेतु अलग–अलग रजिस्टर प्रणाली को अपनाया जा रहा है। शिक्षकों के लिए भी रजिस्टर प्रणाली का ही उपयोग किया जाता है।

6. बहुत से नवोदय विद्यालय पुस्तकालयों में पुस्तकालयध्यक्षों द्वारा छात्रों को आवश्यक सहायता तथा प्रोजेक्ट रिपोर्ट तैयार करने एवं अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं आदि की तैयारी करने में छात्रों की मदद करते हैं।

7. कुछ नवोदय विद्यालय ग्रन्थालयों में उपयोगकर्ताओं द्वारा मांगे जाने पर तुरन्त सन्दर्भ सेवा एवे अल्पकालिक सन्दर्भ सेवा भी प्रदान की जाती है।

8. कुछ विद्यालय पुस्तकालयों को छोड़ कर अधिकतर पुस्तकालयों में पुस्तक प्रदर्शनी, सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता, निबन्ध प्रतियोगिता आदि का आयोजन सम्बन्धित विद्यालय में किया जाता है।

पुस्तकालय भवन एवं उपस्कर

पुस्तक संग्रह का सम्पूर्ण एवं सही उपयोग हो सके इसके लिए अवश्यक है कि पुस्तकालय हेतु एक अलग खण्ड , या एक बडे हालनुमा कमरे की व्यवस्था हो। यदि कोई विद्यालय भवन निर्माणाधीन है तो उसके पुस्तकालय हेतु निम्न तथ्यों को ध्यान में रखते हुए भवन का निर्माण करना चाहिए।

1. मुख्य पुस्तकालय, जहाँ पुस्तकों का सामान्य संग्रह रखना है में पर्याप्त स्थान छोडना चाहिए।

2. पुस्तकालयध्यक्ष कार्य कक्ष ,जिसमें कपवोर्डस ,निधानियां तथा पर्याप्त स्थान होना चाहिए, जहाँ वह पुस्तकों को उपयोग हेतु ,या उन पुस्तकों को जिनकी मरम्मत आदि का कार्य होना है ,रख सके।

3. एक या एक से अधिक सभा कक्ष ,जहाँ 6 से 8 लोग एक छोटे ग्रुप में बैठ कर किसी कार्य को सम्पन्न कर सकें।

4. एक बडा अध्ययन कक्ष ,जहाँ पर समाचार पत्र ,पत्रिकाऐं आदि को रखा जा सके एवं विद्यार्थी उनका सुगमतापूर्वक अध्ययन कर सकें।

5. एक भण्डारण कक्ष ,जहाँ पुस्तकों का नियमित एवं सुरक्षित भण्डारण किया जा सके।

कक्ष का आकार एवं बैठने की व्यवस्था

किसी भी विद्यालय के अध्ययन ,कक्ष का आकार उस विद्यालय के आकार एवं विद्यार्थियों की संख्या पर निर्भर करता है।

विद्यालय पुस्तकालय की योजना बनाते समय किन किन नियमों का पालन करना चाहिए इसकी संस्तुति भारतीय मानक ब्यूरों द्वारा निम्न प्रकार दी गयी है।

पुस्तकों की संख्या	5,000–30,000
अवाप्त की जानें वाली पत्र – पत्रिकाओं की संख्या	20–30
विद्यार्थिया के बैठने हेतु कुर्सियों की संख्या	40– 120
कर्मचारियों की संख्या	2 – 3

पुस्तकालय के मुख्य कक्ष को भण्डारण क्षक्ष एवं सन्दर्भ कक्ष दोनों ही रूपों में उपयोग किया जा सकता है।

पुस्तकालय के विभिन्न कक्षों हेतु भारतीय मानक ब्यूरो की संस्तुतियां निम्न प्रकार है।

पुस्तक भण्डार कक्ष	45 वर्ग मी0
कार्यशाला	45 वर्ग मी0

वाद विवाद कक्ष	2 वर्ग मी0 प्रति व्यक्ति
पुस्तकालय अध्ययन कक्ष	1.5 वर्ग मी0 प्रति व्यक्ति (बैठने हेतु)
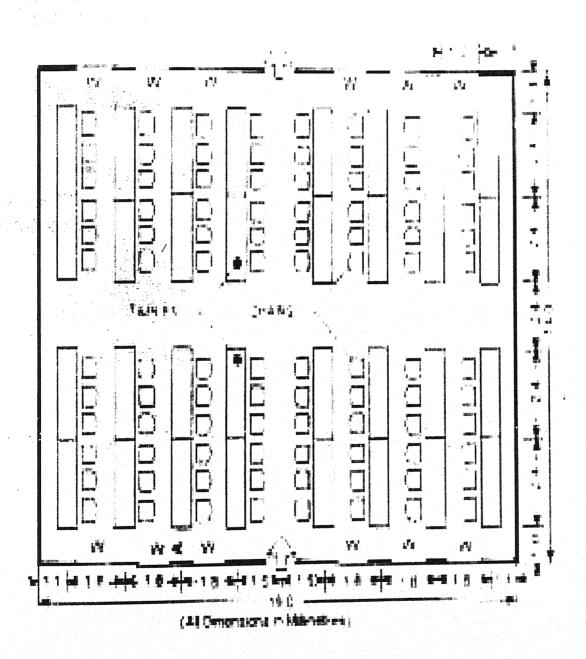
यदि अध्ययन कक्ष तथा भण्डारण कक्ष एक ही हो तो उनके लिए आवश्यक क्षेत्रफल निम्न प्रकार होना चाहिए।

पुस्तक भण्डार 25 – 30

पुस्तकालय उपस्कर

किसी विद्यालय पुस्तकालय का उपस्कर पाठक एवं उसकी शैक्षिक क्षमता को काफी नजदीक लाने की कोशिश करता है। इस लिए कुर्सियां आरामदेय एवं उचित अनुपात की ऊँचाई की होनी चाहिए। पुस्तकालय फर्नीचर का आकार प्रकार ,बनावट एवं साज सज्जा ,पठन कक्षों के फर्नीचर से बिल्कुल अलग होनी चाहिए। मेंजो का आकार एक जैसा नहीं होना चाहिए। मेंजों को गोलाकार एवं आयताकार दोनो तरह का होना चाहिए तथा मेंजों की लम्बाई इस प्रकार होनी चाहिए कि 6 पाठक आराम से बैठ सकें।

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को ध्यान में रखते हुए भारतीय मानक ब्यूरों के अनुसार मेंजों की लम्बाई 5 3 फुट के आकार की होनी चाहिए। तथा अधिकतम ऊँचाई 30 इन्च से अधिक नहीं होनी चाहिए।

भारतीय मानक ब्यूरो द्वारा मेंजों की लम्बाई ,चौडाई तथा ऊँचाई को निम्नांकित चित्र द्वारा प्रदर्शित किया गया है।
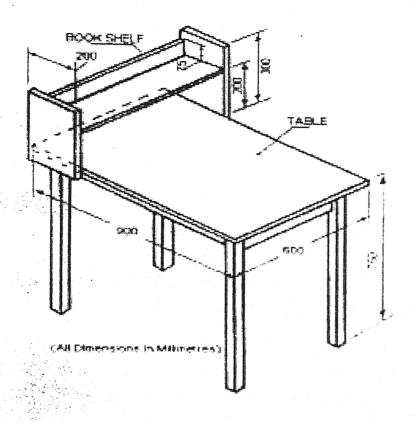
अध्ययन कक्ष हेतु मेंजों का विवरण –

कुर्सियां साधारण ,मजबूत तथा आरामदेय होनी चाहिए। मेज की ऊँचाई 30 इन्च तथा कुर्सियों की ऊँचाई 18 इन्च के लगभग होनी चाहिए। कुछ छोटे पाठकों को ध्यान में रखते हुए कुर्सियों की ऊँचाई 16 इन्च तथा 14 इन्च तक रख सकते है। पुस्तकालय फर्नीचर के सम्बन्ध में भारतीय मानक ब्यूरो की द्वारा की गयी संस्तुतियां निम्न हैं।

बेन्च या कुर्सी की ऊँचाई	42.5 सेमी0
मेज की ऊँचाई	65 सेमी0
पत्रिका निधानी की अधिकतम ऊँचाई	150 सेमी0

प्राथमिक कक्षा के विद्यार्थियों हेतु संस्तुत फर्नीचर की ऊँचाई निम्न प्रकार है।

कुर्सी या बैन्च की ऊँचाई	34 सेमी0
मेज की ऊँचाई	50 सेमी0

Illustration of Reading Room Table
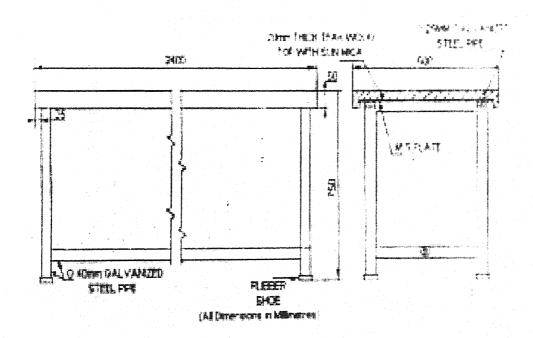
प्रसूची पत्रक ट्रे तथा कैविनेट

भारतीय मानक ब्युरो द्वारा दिये गये नियमों के अनुसार प्रसूची पत्रक ट्रे तथा कैविनेट का निर्माण निम्न प्रकार किया जाना चाहिए।

1. प्रसूची पत्रक ट्रे का आकार 125 X 75 मिमी0 का होना चाहिए।

2. ट्रे की आन्तरिक माप 155 X100X430 मिमी0 की होनी चाहिए तथा किनारे एवं पीछे की सतह की मोटाई 12 मिमी0 तथा ऊँचाई 55 मिमी0 होनी चाहिए। सामने वाली सतह की चौड़ाई 155 मिमी तथा ऊँचाई 100 मिमी0 की होनी चाहिए।

3. बीच की पत्ती जो कि सूची पत्रक को साधने का कार्य करती है की माप 30 X 5 मिमी0 की होनी चाहिए।

4. एक पीतल या स्टील की छड़ जिसका कि व्यास 5 मिमी0 होना चाहिए, ट्रे के मध्य में लगी होनी चाहिए जिससे प्रसूची पत्रकों को इधर उधर होने तथा निकलने से रोका जा सके। छड़ को एक हुक की सहायता से पीछे की ओर कस देना चाहिए।

5. ट्रे की बाहरी तरफ एक पीतल का लेवल होल्डर लगाना चाहिए जो बीचों बीच से थोड़ा ऊपर हो। तथा बाहरी तरफ खीचने एवं बन्द करने के लिए एक हत्था भी लगा होना चाहिए।

प्रसूची पत्रक ट्रे का विवरण

(All Dimensions in Millimetres)
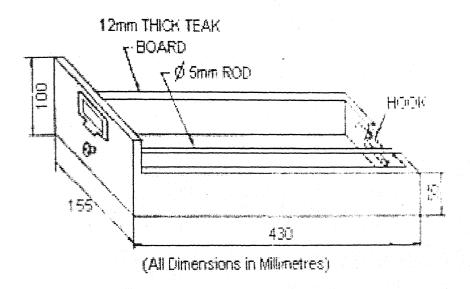
प्रसूची पत्र कैविनेट

इसके मुख्यतः 2 भाग होते हैं –

1. कैबिनेट।
2. स्टैण्ड जिस पर वह रखी जाती है।

किसी प्रसूची पत्र कैविनेट की माप उसमें लगने वाली ट्रे की संख्याओं पर निर्भर करती है। विभिन्न संख्या वाली प्रसूची पत्र कैविनेट की माप को निम्न प्रकार प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 22

(प्रसूची पत्र कैविनेट की माप)

सभी माप मिमी0 में हैं					
क्र.सं.	ट्रे की सं.	लम्बाई	ऊचाई		गहराई
			स्टैण्ड	बाड़ी	
1	36	1090	70	675	455
2	30	1090	840	560	455
3	24	1090	840	455	455
4	20	915	840	455	455
5	16	710	840	455	455
6	12	560	710	455	455
7	9	560	710	345	455

1. निर्माण कार्य में लाई जाने वाली लकड़ी की मोटाई 20 मिमी होनी चाहिए।

2. कैविनेट के सामने के हिस्से को 6 वरावर भागों में वांटना चाहिए तथा ढ़ांचे में प्रयुक्त लकड़ी मोटाई 200 मिमी0 की होनी चाहिए।

3. कैविनेट के साथ खींचने तथा बन्द करने हेतु एक स्लाइड का भी इस्तेमाल करना चाहिए।

सूची पत्रक कैविनेट का विवरण
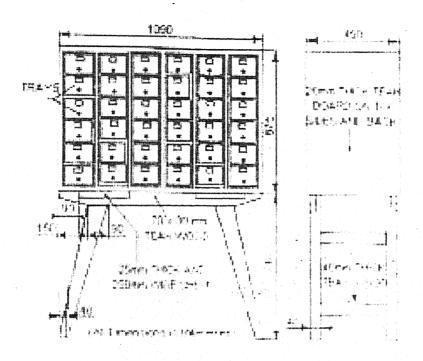
आदान प्रदान ट्रे

आदान प्रदान ट्रे का तात्पर्य है कि वह पात्र जिसमें पाठक टिकिट्स को रखा जाता है। जो एक, दो, तीन या चार हिस्सों में वटी होती है। आदान–प्रदान ट्रे की माप उसमें रखी जाने वाली टिकिट्स की माप पर निर्भर करता है। न्यूयार्क या व्राउन प्रणाली में उपयोग की जाने वाली ट्रे की माप निम्नांकित तालिका द्वारा दर्शायी गयी है। ट्रे की बाहरी सतह की मोटाई 18 मिमी0 तथा आन्तरिक पर्तों की मोटाई 12 मिमी0 के लगभग होनी चाहिए।

तालिका 23

आदान प्रदान ट्रे की माप

(सभी माप मिमी0 में हैं)

आदान प्रदान ट्रे का प्रकार	न्यूयार्क प्रणाली				ब्राउन प्रणाली			
	लम्बाई	चौड़ाई	ऊँचाई कवर सहित	ऊँचाई बिना कवर	लम्बाई	चौड़ाई	ऊँचाई कवर सहित	ऊँचाई बिना कवर
एक खाने की ट्रे	405	120	180	125	405	95	100	75
दो खाने की ट्रे	405	215	180	125	405	165	100	75
तीन खाने की ट्रे	405	310	180	125	405	235	100	75
चार खाने की ट्रे	405	405	180	125	405	305	100	75

पत्र पत्रिका प्रदर्षन रैक

पत्र पत्रिका प्रदर्शन रैक के सम्बन्ध में भारतीय मानक व्यूरो द्वारा दिये गये निर्देश निम्नांकित हैं,

1. ऊँचाई 1910 मिमी0
2. चौड़ाई 1435 मिमी0
3. गहराई 405 मिमी0

प्रत्येक पत्र पत्रिका प्रदर्शन रैक में लगभग 25 खाने जो कि पांच लाइन में होते हैं होने चाहिए। प्रत्येक खाने का आकार 265 मिमी0 X 345 मिमी0 का होना चाहिए। तथा उपयोग हेतु हत्था का लगा होना भी आवश्यक है।

रैक के बाहरी ओर 18 मिमी0 मोटाई का वोर्डर लगाना चाहिए। रैक की पिछली, नीचे, ऊपर आदि की सतह पर लड़की की मोटाई 18 मिमी0 होनी चाहिए।

पत्र पत्रिका प्रदर्षन रैक का विवरण
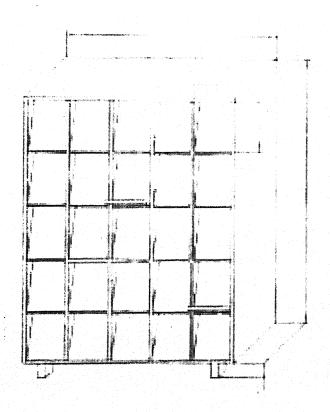
पुस्तकालय संग्रह

एक अच्छे पुस्तकालय हेतु अच्छी पुस्तकों का चयन तथा प्रशिक्षित पुस्तकालय कर्मचारियों का होना अति आवश्यक है। तथा उपयोगकर्ता की दृष्टि से एवं उनकी आवश्यकतानुसार भी पाठ्य सामग्री का चयन होना चाहिए। जिसमें सम्बन्धित विषय विशेषज्ञों की राय एवं सहायता भी लेनी चाहिए। तथा पुस्तकालय में वही पाठ्य सामग्री खरीदी जानी चाहिए जिसका अधिकतम उपयोग हो सके तथा जो अत्यधिक ज्ञान वर्धक एवं मनोरंजनात्मक हो। इस तरह के साहित्य में पुस्तकें, पत्र पत्रिकाऐं, नक्से, चार्टस, वीडियोटेपस, आडियोकैसेट्स, मल्टीमीडियाकिट तथा कम्प्यूटर साफ्टवेयर आदि का चयन बड़ी ही सावधनी पूर्वक होना चाहिए।
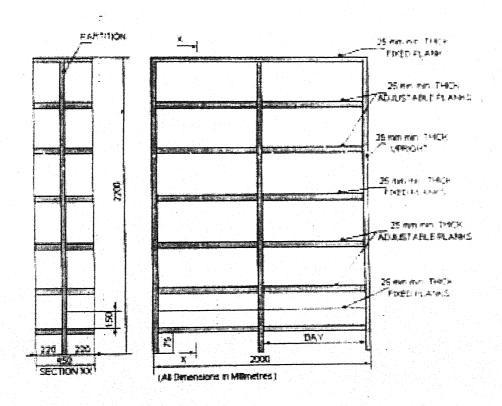
किसी भी पुस्तकालय के मुख्य संग्रह को निम्नांकित प्रकार से प्रदर्शित किया गया है।

1. सम्बन्धित विषय की पाठ्य पुस्तकें।

2. मूल संदर्भ श्रोत जैसे – इन्साइक्लोपीडिया, 2 या 3 तस्वीर युक्त इन्साइक्लोपीडिया, तथा कुछ शब्द कोष जैसे– इंगलिश – इंगलिश (एडवांशड लर्नरस), इंगलिश–हिन्दी, हिन्दी इंगलिश आदि।

3. महान व्यक्तियों एवं औरतों की जीवनियां जैसे–डिक्सनरी आफ नेशनल वॉयोग्राफी द्वारा एस0पी0सेन, इण्डियास हूस–हू (भारत सरकार द्वारा प्रकाशित) विल्डर्स आफ मॉडर्न इण्डिया (एन0वी0टी0) आदि।

4. पंचतन्त्र की कहानियां।

5. वृत्तांतमक कहानियां जैसे – अरेवियन नाइट, रॉविन हूड स्टोरी आदि।

6. जानवरों पर आधारित तस्वीरों युक्त पुस्तकें।

7. खेल, यात्राओं आदि से सम्बन्धित पुस्तकें।

8. देश के प्राचीनतम एतिहासिक घटनाओं पर आधारित पाठ्य सामग्री

9. बच्चों की पत्रिकाऐं जैसे – ट्रिन–ट्रिन, चन्दा मामा, चाचा चौधरी, लोट पोट, नन्दन तथा विज्ञान एवं प्रतियोगिताओं से सम्बन्धित पत्रिकाऐं जैसे विज्ञान प्रगति, प्रतियोगिता दर्पण, कम्पटीशन सक्सेस इत्यादि।

उपर्युक्त संग्रह के अतिरिक्त पुस्तकालय में कुछ आवश्यक अमुद्रित पाठ्य सामग्री जैसे – कम्प्यूटर, टी0वी0, वीडियोटेप्स, सी0डी0, डी0वी0डी0 इत्यादि का भी पर्याप्त संग्रह होना चाहिए।

अध्याय – सात

सुझाव एवं संस्तुतियां

सुझाव एवं संस्तुतियां

वर्तमान अध्ययन का महत्व जवाहर नवोदय विद्यालय पुस्तकालयों द्वारा उपयोग कर्ताओं को प्रदान की जाने वाली सेवाऐं के स्तर को ऊँचा उठने एवं उनकी कार्य प्रणाली को और अधिक विकसित करने में सहयोग और सुझाव प्रदान करना है।

इसके अतिरिक्त पुस्तकालयध्यक्षों की व्यवसायिक प्रतिद्वन्दता पुस्तकालयों को व्यवस्थित एवं संगठित बनाये रखने, निम्न वर्ग के उपयोगकर्ताओं को सभी सेवाऐं प्रदान करने, तथा उनमें व्यावसायिक उन्नति आदि के सम्बन्ध में भी आवश्यक सुझाव एवं सहयोग प्रदान करना है। नवोदय विद्यालय के पुस्तकालयध्यक्षों द्वारा भी अपने कुछ सुझाव पुस्तकालयों को एक आदर्श पुस्तकालय बनाने हेतु प्रेषित किये गये हैं।

सर्वेक्षण के समय उपयोगकर्ताओं, शिक्षकों तथा पुस्तकालयध्यक्षों द्वारा जिन्होंने सर्वेक्षण प्रक्रिया में भाग लिया द्वारा कुछ सुझाव दिये गये। तथा कुछ सुझाव जो विद्यालय पुस्तकालयों के सम्पूर्ण विकास एवं उत्थान हेतु आवश्यक है, जैसे – पुस्तकालय ढांचागत व्यवस्था, उपस्कर, पुस्तकालयों का कम्प्यूटरीकरण, वेतन व्यवस्था, सहायक

पुस्तकालयध्यक्षों की नियुक्तियां, पुस्तकालय सहायकों की नियुक्तियां, पुस्तकालय के वार्षिक वजट में बृद्धि, संसाधनों की सहभागिता तथा सतत रूप से चलने वाले शिक्षण एवं प्रशिक्षण एवं कम्प्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रम के सम्बन्ध में दिये गये हैं जो कि निम्नलिखित हैं।

पुस्तकालय कर्मचारी

सर्वेक्षण से स्पष्ट होता है कि जवाहर नवोदय विद्यालय पुस्तकालयों में कर्मचारी पद्यति में सुधार अति आवश्यक है। तथा आवश्यक परिवर्तन होना चाहिए। वर्तमान में सभी नवोदय विद्यालयों के पुस्तकालयों में मात्र एक ही पुस्तकालयध्यक्ष द्वारा समस्त कार्यों को किया जा रहा है। तथा कहीं–कहीं पुस्तकालयों में शिक्षकों को पुस्तकालय इन्चार्ज बनाया गया है। उक्त विद्यालय पुस्तकालयों में कहीं भी सहायक पुस्तकालयध्यक्ष, पुस्तकालय सहायक, अनुचर, क्लर्क एवं चपरासियों आदि का कोई प्रावधान नहीं है। मात्र एक पुस्तकालयध्यक्ष द्वारा ही पुस्तकालय से सम्बन्धित समस्त कार्यों जैसे – पुस्तक प्राप्ति, संग्रहण एवं संरक्षण, तकनीकी कार्यों आदि को जिनमें 300 से 600 विद्यार्थियों शिक्षकों एवं कर्मचारियों को उनकी आवश्यकत सेवाओं को प्रदान किया जाता है। इस लिए पुस्तकालय का समस्त कार्यभार मात्र एक पुस्तकालयध्यक्ष पर होने के कारण दक्षता एवं कार्यों को प्रभावी एवं संतोषजनक ढ़ंग से प्रदर्शित नहीं कर पाता है।

वेतन वृद्धि

लगभग आधे से अधिक प्रतिवन्दियों का यह मतह" कि समस्त नवोदय विद्यालय पुस्तकालयों में कार्यरत पुस्तकालयध्यक्षों के वेतनमान में वृद्धि की जानी चाहिए। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि सभी नवोदय विद्यालय पूर्ण आवासीय विद्यालय हैं, जो कि एक दम ग्रामीण इलाकों में स्थित हैं का प्रमुख लक्ष्य ग्रामीण क्षेत्रों के गरीब वर्ग के होनहार छात्रों को निःशुल्क शिक्षा प्रदान करना है। जो विद्यालय पूर्ण रूपेण स्थापित हो चुके हैं उनमें छात्रों की संख्या 400 से 600 के मध्य है में पुस्तकालयध्यक्ष द्वारा सभी कार्यों को सन्तोषजनक एवं प्रभावी ढ़ंग से उपयोगकर्ताओं आवश्यक सेवाऐं प्रदान की जाती हैं। अतः सभी नवोदय विद्यालय पुस्तकालयध्यक्षों की मांग जो कि जायज है कि उन्हें भी कालेज के शिक्षकों की भांति उच्च वेतनमान तथा पदोन्नति जैसे – प्राचार्य, सहायक निदेशक, उपनिदेशक स्तर के पदों तक प्रदान की जानी चाहिए।

ढांचागत व्यवस्था

वर्तमान समय में लगभग सभी नवोदय विद्यालय ग्रन्थालय प्रशासनिक भवन के खण्ड में एक बड़े हाल में संचालित हो रहे हैं। जिनका आकार 20 गुना 30 फुट का जिसमें लगभग 40 लोगों को बैठने के लिए 6 मेजें, लोहे की अलमारियां, पाठ्य सामग्री, जो कि दीवारों के सहारे लगी होती हैं की व्यवस्था होती है। पुस्तकालयध्यक्ष

का छात्रों के समक्ष ही बैठने का स्थान होता है जहाँ पर वह अपने दैनिक कार्यों एवं पुस्तकालय से सम्बन्धित तकनीकी कार्यों को सम्पादित करता है। इस प्रकार पुस्तकालयों की स्थिति एक कक्षीय पुस्तकालय की होती है। जिससे ही सभी सुविधाऐं पुस्तकालयध्यक्ष द्वारा प्रदान की जाती हैं। स्थानाभाव होने के कारण पुस्तकालध्यक्ष शिक्षकों को गहन अध्ययन हेतु अलग से स्थान उपलब्ध नहीं करा पाता है।

इस प्रकार अधिकतर पुस्तकालयध्यक्षों का सुझाव है कि अलग पुस्तकालय भवन की स्थापना की जाय, जिसमें वह सभी सुविधाऐं जो एक आदर्श पुस्तकालय में होनी चाहिए जैसे – पुस्तकालय उपस्कर, कम्प्यूटर, इण्टरनेट तथा मल्टीमीडिया एवं ई–मेल आदि सेवाओं की व्यवस्था होनी चाहिए।

आय व्यय

प्रत्येक नवोदय विद्यालय में 5000 रूप्ये से लेकर 20000 रूप्ये तक की सन्दर्भ पुस्तकें पत्र–पत्रिकाऐं आदि खरीदने की व्यवस्था होती है। तथा जवाहर नवोदय विद्यालय के क्षेत्रीय कार्यालयों द्वारा एन0सी0ई0आर0टी0 के पाठ्यक्रम पर आधारित पाठ्य पुस्तकें विभिन्न विद्यालय पुस्तकालयों की मांग पर खरीद कर छात्रों के लिए उपलब्ध करायी जाती है। कभी कभी कुछ सन्दर्भ पुस्तकें एवं क्षेत्रीय भाषाओं की

पुस्तकें तथा अन्य पाठ्य सामग्री भी जवाहर नवोदय विद्यालय समिति के क्षेत्रीय कार्यालयों द्वारा सम्बन्धित विद्यालय पुस्तकालयों को उपलब्ध करायी जाती है।

सूचना एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नित हो रहे नये अनुसंधानों एवं साहित्यक विस्फोट के कारण प्रतिदिन नया साहित्य प्रकाशित हो रहा है एवं दिन प्रतिदिन उपलब्ध पाठ्य सामग्री के मूल्य में भी निरंतर हो रही वृद्धि के कारण पुस्तकालयों हेतु आवंटित 5000 रूप्ये लेकर 20000 रूपये तक का वजट अपर्याप्त सिद्ध हो रहा है जो पुस्तकालयों के विकास में सबसे बड़ी वाधा है। इस लिए वार्षिक आय व्यय में वदलाव एवं वृद्धि होना अति आवश्यक है।

कम्प्यूटरीकरण एवं नेटवर्क

सूचना प्रसारण, तकनीकी एवं उसके प्रयोग में आये क्रान्तिकारी बदलाव जैसे– पुस्तकालय एवं सूचना सेवा, कम्प्यूटर एवं मल्टीमीडिया की उपलब्धता आदि के परिणाम स्वरूप पुस्तकालयों को कम्प्यूटरीक्रत करना अति आवश्यक हो गया है। जवाहर नवोदय विद्यालयो में आई0सी0टी0 का प्रयोग कर स्वचालित पुस्तकालय एवं पुस्तकालय कम्प्यूटरीकरण द्वारा उपयोग कर्ताओं को अधिक से अधिक प्रदान की जा सकती हैं। अधिकतर पुस्तकालयध्यक्षों द्वारा पुस्तकालयों के

कम्प्यूटरीकरण की वकालत की गयी है, जिसमें टेलीफोन, फैक्स तथा इन्टरनेट आदि की सुविधा निहित हो।

संसाधन सहभागिता

जवाहर नवोदय विद्यालय पुस्तकालयों में सूचना के आदान प्रदान एवं अन्तर पुस्तकालय लोन के द्वारा पुस्तकालयों को काफी समुन्नत किया जा सकता है। वर्तमान अध्ययन के अनुसार लगभग 54.16 प्रतिशत पुस्तकालयध्यक्षों ने उक्त सेवाऐं पुस्तकालयों में लागू करने का सुझाव दिया है। प्रदेश सरकार द्वारा संचालित विद्यालयों एवं कालेजों की स्थिति बहुत अच्छी नहीं हैं। इस लिए उक्त पुस्तकालयों में इस प्रकार की सेवाऐं लागू करना अति आवश्यक हो गया है।

लगभग समस्त नवोदय विद्यालय कर्मचारियों एवं पुस्तकालयध्यक्षों द्वारा शिक्षण एवं प्रशिक्षण के कार्यक्रम, पुस्तकालय में कम्प्यूटरों का प्रयोग, पुस्तकालयों के विकास एवं प्रसार हेतु अवश्यसंभावी करने का सुझाव दिया है।

उपर्युक्त अध्ययन के विश्लेषण एवं निष्कर्ष के आधार पर कुछ संस्तुतियां जो उत्तर प्रदेश एवं सम्पूर्ण भारत वर्ष के नवोदय विद्यालय पुस्तकालयों को और अधिक उन्नत, क्रियाशील एवं आदर्श बनाने में

सहायक सिद्व तो सकती है। को प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के माध्यम से प्रस्तुत किया जस रहा है जो कि निम्नांकित है।

1. लगभग समस्त नवोदय विद्यालय पुस्तकालयों का भौतिक निरीक्षण करने पर पाया गया कि पुस्तकालयों में किसी भी प्रकार की सुरक्षा व्यवस्था नहीं है जिससे पुस्तकों एवं अन्य पाठ्य सामग्री के चोरी हो जाने या नुकसान होनी की सम्भावनाऐं सदैव बनी रहती है।

   अतः प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के माध्यम से यह संस्तुति की जाती है कि प्रत्येक नवोदय विद्यालय पुस्तकालय में एक सुरक्षा कर्मचारी की नियुक्ति की जानी चाहिए जिससे इस प्रकार के नुकसान को होने से रोका जा सके।

2. सर्वेक्षण के अध्ययन एवं विश्लेषण के उपरान्त यह भी ज्ञात हुआ कि पुस्तकालयों के समुचित विकास एवं प्रसार हेतु पर्याप्त धन उपलब्ध न होने के कारण बाधा उत्पन्न हो रही है।

   अतः प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के माध्यम से यह भी संस्तुति की जाती है कि पुस्तकालयों के विकास हेतु वार्षिक आय व्यय में पर्याप्त वृद्वि की जानी चाहिए तथा नवीन एवं उच्च्च स्तर की पाठ्य सामग्री का क्रय किया जाना चाहिए एवं उपयोग कर्ताओं तथा

शिक्षकों हेतु जर्नल्स आदि का भी क्रय किया जाना चाहिए। नवोदय विद्यालय समिति एवं प्राचार्यों द्वारा कुछ अतिरिक्त की भी पुस्तकालयों हेतु व्यवस्था की जानी चाहिए।

3. नवोदय विद्यालय पुस्तकालयों में उपयोगकर्ताओं की दृष्टि से प्रस्तुत शोध प्रबन्ध यह भी संस्तुति करता है कि पुस्तकालयों को स्थापित प्रदान करने हेतु संग्रह में भी आवश्यक वृद्धि की जानी चाहिए। ताकि उपयोगकर्ताओं को उनकी आवश्यकतानुसार अधिक से अधिक पाठ्य सामग्री उपलब्ध हो सके। नवीन प्रकाशित साहित्य, सन्दर्भ पुस्तकें, पत्र– पत्रिकाऐं सामान्य अध्ययन की पुस्तकें, विख्यात विज्ञान की पुस्तकें तथा आत्मकथा एवं महापुरूषों की जीवनी आदि से सम्बन्धित पाठ्य सामग्री का क्रय किया जाना चाहिए।

4. वर्तमान समय में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में हो रहे विकास के परिणाम स्वरूप, और जब कम्प्यूटर आदि को खरीदना अधिक मंहगा भी नहीं है के फलस्वरूप, सूचना एवं तकनीकी सेवाऐं प्रदान करने के लिए पुस्तकालयों का कम्प्यूटरीकरण अति आवश्यक हो गया है। अतः प्रस्तुत शोध प्रबंन्ध में यह भी संस्तुति की जाती है कि पुस्तकालयों का स्तर ऊँचा उठाने तथा सूचना एवं प्रौद्योगिकी से जोड़ने के लिए पुस्तकालयों को मल्टीमीडिया कम्प्यूटर, इन्टरनेट, ई–मेल सेवा आदि से सुसज्जित किया जाना

चाहिए। जिससे उपयोगकर्ताओं को देश एवं विदेश में हो रहे अनुसंधानों एवं अन्य गतिविधियों को समझने एवं उनसे जुडने के अवसर प्राप्त हो सकें।

5. नवोदय विद्यालय ग्रन्थालयों में कार्यरत पुस्तकालध्यक्षों की दशा एवं वर्तमान स्थित में पर्याप्त सुधार की आवश्यकता है। इसलिए प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के माध्यम से यह भी बताने का प्रयास किया गया है कि नवोदय विद्यालय ग्रन्थालयों में कार्यरत पुस्तकालयध्यक्षों का कार्यभार कुछ कम किया जाना चाहिए ताकि वह और अधिक क्रियाशील रहकर प्रभावी कार्य कर सकें। इसके लिए विद्यालय ग्रन्थालयों में वरिष्ठ पुस्तकालयध्यक्ष हेतु पुस्तकालय विज्ञान में परास्नातक उपाधि एवं पी0जी0टी0 वेतन होना चाहिए तथा सहायक पुस्तकालयध्यक्ष हेतु पुस्तकालय विज्ञान में स्नातक उपाधि तथा प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक के बराबर वेतनमान की वयवस्था होनी चाहिए। इस परिप्रेक्ष्य में डा0 एस0आर0 रंगानाथन द्वारा प्रतिपादित कर्मचारी फार्मूला तथा राष्ट्रीय शिक्षण तथा प्रशिक्षण अनुसंधान परिषद द्वारा जो संस्तुतियां माध्यमिक विद्यालय ग्रन्थालयो हेतु दी गयी है उनका पूर्णतः पालन किया जाना चाहिए। ताकि नवोदय विद्यालय ग्रन्थालयों में अच्छे तंत्र को विकसित कर एवं उत्तम सेवाऐं प्रदान कर एक आदर्श ग्रन्थालयों में परिवर्तित किया जा सके।

6. प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के माध्यम से यह भी अनुसंसा की जाती है कि नवोदय विद्यालय के पुस्तकालयध्यक्षों का वेतन माना माध्यमिक विद्यालय एवं उच्च माध्यमिक विद्यालय पुस्तकालयध्यक्षों के बराबर होना चाहिए तथा उच्च वेतनमान में पदोन्नति की भी व्यवस्था होनी चाहिए।

7. निष्कर्षों के आधार पर प्रस्तुत शोध प्रबन्ध यह प्रबल संस्तुति करता है कि समिति द्वारा संचालित समस्त विद्यालय पुस्तकालयध्यक्षों को अद्यतन बनाये रखने हेतु व्यावसायिक संगठनों की गतिविधियों में भाग लेना चाहिए। ILA एवं IASLIC को जवाहर नवोदय विद्यालय समिति द्वारा संचालित सभी 423 विद्यालयों के पुस्तकालयध्यक्षों एवं प्राचार्यों से सम्पर्क कर उन्हें व्यक्तिगत तथा संस्थागत रूप से उनसे जुड़ने के लिए एवं उक्त संगठनों द्वारा प्रकाशित विख्यात पत्रिकाओं को पुस्तकालय द्वारा क्रय करने हेतु प्रेरित करना चाहिए। इसके अतिरिक्त माध्यमिक विद्यालय, केन्द्रीय विद्यालय तथा अन्य सर्वजनिक विद्यालयों के प्राचार्यों को उक्त संस्थाओं से संस्थागत रूप से जुड़ना चाहिए क्योंकि काफी अधिक संख्या में पुस्तकालय कर्मचारी जो इन विद्यालयों से जुड़े हुए हैं व्यक्तिगत रूप से इन संस्थाओं के प्रकाशनों को प्राप्त नहीं कर सकते हैं।

8. जवाहर नवोदय विद्यालय तथा केन्द्रीय विद्यालय के पुस्तकालयध्यक्षों को उपर्युक्त संस्थाओं की सदस्यता ग्रहण करने एवं प्राचार्यों द्वारा ILA एवं IASLIC द्वारा आयोजित की जाने वाली गोष्ठियों एवं सम्मेलनों में उनके व्यावसायिक विकास एवं उन्नति हेतु भेजने की भी प्रस्तुत शोध प्रबन्ध द्वारा अनुसंसा की जाती है।

9. प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के माध्यम से यह भी संस्तुति की जाती है कि एम0एच0आर0डी0 एवं एम0आई0टी0 द्वारा पुस्तकालयों के कम्प्यूटरीकरण, नेटवर्किंग हेतु आवश्यक अनुदान की भी व्यवस्था करनी चाहिए जिससे उपयोग कर्ताओं, शिक्षकों एवं प्रशासनिक कर्मचारियों को संचार आदि की अच्छी व्यवस्था सुलभ हो सके।

10. प्रस्तुत शोध प्रबन्ध द्वारा यह भी संस्तुति की जाती है कि सभी नवोदय विद्यालय ग्रन्थालयों में अन्तर पुस्तकालय लोन सेवा को क्रियान्वित करने के लिए ठोस नीतिगत निर्णय लेना चाहिए। पुस्तकालय सहयोग, संसाधन सहभागिता, नेटवर्किंग, आदि की विचार धारा को राष्टीय अथवा क्षेत्रीय स्तर पर लागू किया जाना चाहिए। उपर्युक्त कार्य योजना के अन्तरगंत स्कूल एवं कालेजों को स्थानीय स्तर पर भी नवोदय विद्यालयों से सम्बद्व किया जा सकता है।

11. प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के माध्यम से पूर्व नियोजित कार्यक्रम, सेवा प्रशिक्षण, कम्प्यूटर प्रशिक्षण, पुस्तकालय पत्रीकरण, तथा इन्टरनेट सेवा आदि के कार्यक्रमों को सतत रूप से नवोदय विद्यालय कर्मचारियों हेतु आयोजित करते रहने, ताकि कार्यरत कर्मचारियों का प्रमुख संसाधन विकास व्यावसायिक प्रगति हो सके की भी अनुसंसा की जाती है।

12. प्रादेशिक सरकार से सम्बद्व विद्यालयों के पुस्तकालयों की स्थिति बहुत अच्छी नहीं है। जवाहर नवोदय विद्यालय एवं केन्द्रीय विद्यालय पुस्तकालय उन विद्यालयों के लिए आदर्श स्थापित करने में सहायक सिद्व हो सकते हैं।

अतः प्रस्तुत शोध प्रबन्ध यह अनुसेसा करता हे कि जवाहर नवोदय विद्यालय ग्रन्थालयों की स्थिति में और सुधार कर उन्हें कुछ ही समय में अन्य विद्यालय पुस्तकालयों के लिए एक आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

13. प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में विभिन्न नवोदय विद्यालयों के सर्वेक्षण के उपरान्त यह पाया गया है कि लगभग समस्त विद्यालयों में विभिन्न आयोगों व समितियों अथवा मानकों के अनुरूप पुस्तकालय कर्मचारियों की नियुक्ति नहीं है। लगभग समस्त विद्यालयों में एक पुस्तकालयध्यक्ष अथवा एक चपरासी कार्यरत है। भारत सरकार द्वारा प्रस्तावित नई शिक्षा नीति 1986 के तहत

यह प्रस्तावित किया गया था कि नई शिक्षानीति पुस्तकालयोन्मुखी होनी चाहिए। लेकिन विभिन्न विद्यालय पुस्तकालयकर्मियों के अन्दर प्रेरणा का अभाव है। अतः यह प्रस्तुत शोध प्रबन्ध यह संस्तुति करता है कि राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय मानक के अनुरूप नवोदय विद्यालय ग्रन्थालयों में कर्मचारियों की नियुक्ति अत्यन्त असवश्यक है।

14. कार्यरत पुस्तकालयध्यक्षों के मध्य सतत प्रशिक्षण योजना नीति का भी पूर्ण रूपेण पालन नहीं किया जा रहा है। वर्तमान समय में पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में बहुआयामी परिवर्तन हुए हैं जो प्रत्येक दिशा में दृष्टिगोचर हो रहे हैं । आज जब हम मुद्रित पाठय सामग्री के स्थान पर अमुद्रित एवं इलेक्ट्रानिक साहित्य को ग्रन्थालय में खरीद रहे हैं । वहाँ पर नवोदय विद्यालय ग्रन्थालय भी इस परिवर्तन से अछूते नहीं है। कम्प्यूटर एवं सूचना प्रौद्योगिकी के प्रचलन से विभिन्न ग्रन्थालयों के नेटर्वक में नियमित करने की प्रवूत्ति दृष्टिगोचर हो रही है। लेकिन नवोदय विद्यालय चूंकि भारतवर्ष के विभिन्न स्थानों पर स्थित है के लिए काई भी नेटर्वक प्रस्तावित नहीं किया गया है। यदि सभी नवोदय विद्यालय ग्रन्थालयों को एक नेटर्वक के साथ जोड दिया जाय तो धन, समय, तथा भवन जैसी बहुत सी समस्याओं पर विजय प्राप्त कर पुस्तकालय सेवाओं को और अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है। लेकिन इन सब के साथ साथ सतत शिक्षा योजना के

अन्तरगत सभी ग्रन्थालय कर्मियों के लिए सूचना प्रौद्योगिकी में होने वाले परिवर्तनों से अवगत कराने के लिए एक कार्यक्रम को समय समय पर विद्यालय संगठन द्वारा प्रारम्भ करना चाहिए, ताकि पुस्तकालयकर्मी क्षेत्र विशेष में होने वाले परिवर्तनों से अवगत रहें।

15. प्रायः समस्त नवोदय विद्यालय पुस्तकालय वित्तिय समस्याओं से ग्रस्त हैं। अतः सूचना के बाजारीकरण जैसी प्रवृत्तियों को इन ग्रन्थालयों में लागू करने के लिए कर्मचारियों को समुचित प्रशिक्षण देना चाहिए। साथ ही विभिन्न विधियों का प्रयोग कर ऐसे क्षेत्रों की खोज करनी चाहिए जिससे विद्यालय अपने ग्रन्थालयों के लिए धन को एवं एकत्रित कर सके। इसके अतिरिक्त यह भी आवश्यक है कि राज्य अथवा केन्द्र सरकारों को ऐसे पुस्तकालयों को अनुदान इत्यादि में बृद्धि करके इन ग्रन्थालयों की वित्तीय समस्याओं को दूर करना चाहिए। यहाँ भी आवश्यक है कि विद्यालय अधिकारियों जैसे – अध्यक्ष, प्रबन्ध समिति के सदस्य, प्राचार्य एवं शिक्षकों आदि को विभिन्न समाजसेवी संस्थाओं के माध्यम से दान इत्यादि प्राप्त कर वित्तीय श्रोतों को विकसित करना चाहिए।

16. सर्वेक्षण में यह भी दृष्टिगोचर हुआ कि नवोदय विद्यालय समिति के प्रायः सभी विद्यालय दूर–दराज के ग्रामीण इलाकों में स्थित

हैं जहाँ समाचार पत्र–पत्रिकाऐं आदि समय से नहीं पहुँच पाती हैं। समाचार पत्र प्रायः 4 से 6 घण्टे देरी से प्रायः दोपहर तक पहुँच पाते हैं। अतः विद्यालय प्रबन्धन एवं प्राचार्य को इस प्रकार की व्यवस्था करनी चाहिए कि समाचार पत्र विद्यालय में समय से प्राप्त हो सकें।

17. नई शिक्षानीति के तहत कक्षा पुस्तकालय प्रणाली का शुभारम्भ हुआ। जिसमें विद्यालय पुस्तकालय चलकर कक्षाओं तक जाता है। अतः सर्वेक्षण में यह दृष्टिगोचर हुआ कि नवोदय विद्यालय ग्रन्थालयो में यह योजना प्रभावी रूप से कार्यरत नहीं हैं। अतः प्रस्तुत शोध प्रबन्ध यह संस्तुति करता है कि कक्षा पुस्तकालय प्रणाली को प्रभावी ढ़ग से संचालित करना चाहिए।

18. नवोदय विद्यालय केन्द्र सरकार की आवासीय शिक्षानीति का परिणाम है। नवोदय विद्यालयों के उपयोग कर्ता छात्र, शिक्षक, कर्मचारी एवं अधिकारी के विद्यालय में ही आवास है। तथा विभिन्न उपयोग कर्ताओ ने यह सुनिश्चित किया है कि नवोदय विद्यालय पुस्तकालय कालेज अवधि में ही खुल रहे हैं। चूंकि यह विद्यालय आवासीय है अतः ऐसे ग्रन्थालयों को अवकाश के दिनों एवं विद्यालय समय के अतिरिक्त देर रात तक खोलने का प्रावधान भी सुनिश्चित करना चाहिए। ताकि छात्र विद्यालय समय के उपरान्त प्रायः एवं सायं काल तथा रात्रि में एक निश्चित

समय सीमा तक इन ग्रन्थालयों का उपयोग कर सकें। प्रस्तुत शोध के सर्वेक्षण के समय छात्रो के इस असन्तोष पर कि प्राचार्य एवं पुस्तकालयओं से वार्तालाप किया तो उन्होने सुरक्षा एवं कर्मचारियों की संख्या के अभाव में असमर्थता जाहिर की। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के माध्यम से यह संस्तुति ी जाती है कि विद्यालय ग्रन्थालयों को अतिरिक्त समय में खोलने के लिए सुरक्षा एवं कर्मचारियों की व्यवस्था को सुनिश्चित कर छात्रों की इस न्यायोचित मांग पर शीघ्र निर्णय लेना चाहिए।

19. सर्वेक्षण में यह भी दृष्टिगोचर हुआ कि पुस्तकालय में कार्यरत कर्मचारियों में प्रायः एक पुस्तकालयध्यक्ष एवं एक चपरासी (चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी) होता है। पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान के क्षेत्र में होने वाले नवीन परिवर्तनों से पुस्तकालयध्यक्षों को पूर्ण करने के लिए सतत् शिक्षा प्रोग्राम के अन्तरगत किसी प्रकार की नीतियों का अभाव नवोदय विद्यालय में पाया जाता है। वर्तमान में जैसे कम्प्यूटर, सूचना प्रौद्योगिकी, इण्टरनेट, ई जर्नलस, मल्टीमीडिया सिस्टम आदि विद्याओं से पुस्तकालय अछूते है।

अतः प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के माध्यम से यह आवश्यक है कि नवोदय विद्यालय प्रबन्ध समितियों, केन्द्र एवं राज्य सरकारों को इस दिशा में अविलम्ब एक नीति निर्धारण करके पुस्तकालयों का कम्प्यूटरीकरण करने की दिशा में कदम उठाने चाहिए। तथा

कार्यरत कर्मचारियों को मानव संसाधन विकास कार्यक्रमों के तहत अल्पकालीन प्रशिक्षण शिविरों, सम्मेलनों, कार्यशालाओं इत्यादि में भेजने की नीति की अनुसंसा करनी चाहिए।

20. बदलते सूचना प्रौद्योगिकी के परिप्रेक्ष्य में यह भी पाया गया कि बहुत से नवोदय विद्यालयों के पुस्तकालयों में अमुद्रित पाठ्य सामग्री के संग्रहण, संरक्षण एवं अधिग्रहण के प्रति पुस्तकालयध्यक्षों का रूझान नकारात्मक है। वर्तमान समय में कोई भी पुस्तकालयध्यक्ष नकारात्मक रूख कर अधिक समय तक जीवित नहीं रह सकता।

अतः प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के माध्यम से यह भी प्रयास किया गया है कि अमुद्रित पाठ्य सामग्री जैसे – सी0डी0, डी0वी0डी0, कैसेट्स, मैगनेटिक टेप्स, सी0डी0रोम्स, चार्टस, मैप्स एवं नक्से आदि के अर्जन एवं संग्रहण के प्रति एक नीति का निर्माण करके प्रभावी कदम उठानें चाहिए। इस तरह की पाठ्य सामग्री के संग्रहण में कम लागत कम स्थान तथा श्रेष्ठ सूचना प्राप्त होती है।

21. नवोदय विद्यालय पुस्तकालयों के अध्ययन करने पर यह भी दृष्टिगोचर हुआ कि दृष्य श्रव्य के आधुनिक उपकरणों जैसे – खिलौंने, टी0वी0, कैसेट्स, टेपरिकार्डर आदि का संग्रह भी नगण्य अवस्था में है। किसी भी विद्यालय पुस्तकालय का प्रमुख उद्देश्य

छात्रों के अन्दर पढ़ने की आदत को विकसित करना है और इस आदत को विकसित करने में इन दृष्य–श्रव्य उपकरणों की भूमिका काफी महत्वपूर्ण होती है।

अतः प्रस्तुत शोध प्रबन्ध इस बात की भी अनुसंसा करता है कि उपरोक्त नीति के प्रति नवोदय विद्यालय समिति की उदाशीनता विद्यालय पुस्तकालय को उनके उद्देश्य से सर्वथा वंचित रखती है।

22. जिस प्रकार से किसी विद्यालय पुस्तकालय में सावधानी पूर्वक चयन किया गया साहित्य, प्रशिक्षित कर्मचारी, सुन्दर भवन एवं सुसज्जित पठन–पाठन कक्ष पुस्तकालय की सुन्दरता में चार चांद लगा देते हैं। उसी प्रकार पाठकों की आवश्यकता, उनकी रूचि, एवं पाठकों के सही ज्ञान के विकास हेतु किसी भी पुस्तकालय में पत्र पत्रिकाओं का होना अत्यन्त आवश्यक होता है। सर्वेक्षण के समय यह भी दृष्टि गोचर हुआ कि लगभग समस्त नवोदय विद्यालयों में पत्र पत्रिकाओं की संख्या या तो बहुत कम थी या किसी–किसी विद्यालय में तो नगण्य थीं।

अतः प्रस्तुत शोध प्रबन्ध यह भी संस्तुति करता है कि बच्चों के सही मानसिक विकास एवं मनोरजंन हेतु उनकी रूचि के अनुरूप जैसे –चन्दामामा, चाचा चौधरी, लोटपोट, नन्दन आदि तथा विज्ञान एवं विभिन्न प्रतियोगिताओं सम्बन्धी पत्रिकाऐं जैसे–

विज्ञान प्रगति, कम्पटीशन सक्सेस, प्रतियोगिता दर्पण, प्रतियोगिता विकास आदि के खरीदने के लिए आवश्यक कदम उठाये जाने चाहिए। तथा इसके लिए आवश्यक हो तो किसी अन्य मद से भी धन आदि की व्यवस्था कालेज प्राचार्य एवं प्रबन्ध समिति को करनी चाहिए।

23. नवोदय विद्यालयों पुस्तकालय का सर्वेक्षण तथा अवलोकन करने पर यह भी दृष्टिगोचर हुआ है कि लगभग सभी नवोदय विद्यालय ग्रन्थालयों के भवनों का आकार एक ही प्रकार का है। जो विद्यालय के किसी एक भाग में प्रशिक्षण कक्षों के समान ही लगभग 25 वर्ग मीटर क्षेत्रफल के बराबर होता है मे ही विद्यालय पुस्तकालय स्थित होते है। जिनमें स्थान का काफी अभाव होता है। किसी किसी नवोदय विद्यालय ग्रन्थालय में तो यह भी देखा गया कि हवा और रोशनी भी पर्याप्त मात्रा में अन्दर नहीं आ पाती है। तथा छात्रों के पढने एवं बैठने आदि की समुचित व्यवस्था नहीं है।

अतः प्रस्तुत शोध प्रबन्ध यह संस्तुति करता है कि विद्यालय पुस्तकालय का भवन एक अलग ब्लाक में स्थित होना चाहिए जिसमें पाठकों के बैठने का पर्याप्त स्थान, पुस्तकालयध्यक्ष के बैठने हेतु अलग कक्ष एवं कार्यशाला आदि के लिए अलग कक्ष की व्यवस्था पुस्तकालय में होनी चाहिए। साथ ही प्रस्तुत शोध

प्रबन्ध के माध्यम से यह भी संस्तुति की जाती है कि पुस्तकालय भवन ऐसे स्थान पर होना चाहिए जहाँ– हवा, पानी एवं पर्याप्त प्रकाश की व्यवस्था हो तथा पुस्तकालय भवन की स्थिति विद्यालय के केन्द्र में हो, जहाँ पर विद्यालय के किसी भी कोने से कम से कम समय में आसानी से पहुँचा जा सके।

BIBLIOGRAPHY

BIBLIOGRAPHY

1. American association of school library: Standards for school lib. Programs, 1960.

2. Bureau of Indian Standards (1998) Design of Library Buildings, Recommendation Relating to its primary Elements. 1989 pp. 5.

3. Indian Standards Institute (1997) Indian Standards: Recommendations Relating to primary elements in the design of school library buildings. New-Delhi: Indian Standard Institute, pp8.

4. Indian Standards Institute (1997) Indian Standards: Recommendations Relating to primary elements in the design of school library buildings. New Delhi: Indian Standard Institute, pp 9-10.

5. Indian Standards Institute (1978) Indian Standards: specification for Library Furniture and fittings: New Delhi : Indian Standards Institute, pp 18-9.

6. Indian Standards Institute (1978) Indian Standards: specification for Library Furniture and fittings: New Delhi :Indian Standards Institute, pp 21.

7. Indian Standards Institute (1978) Indian Standards: specification for Library Furniture and fittings: IS:

1829 (Part- I)-1978 (Reprint 1982) New Delhi :Indian Standards Institute, pp 8.

8. Indian Standards Institute (1978) Indian Standards: specification for Library Furniture and fittings: New Delhi :Indian Standards Institute, pp9.

9. Indian Standards Institute (1978) Indian Standards: specification for Library Furniture and fittings: New Delhi : Indian Standards Institute, pp 9-10.

10. Indian Standards Institute (1978) Indian Standards: specification for Library Furniture and fittings: New Delhi :Indian Standards Institute, pp11-2.

11. Indian Standards Institute (1978) Indian Standards: specification for Library Furniture and fittings: New Delhi :Indian Standards Institute, pp14, 16.

12. Indian Standards Institute (1978) Indian Standards: specification for Library Furniture and fittings: New Delhi :Indian Standards Institute, pp 17.

13. Indian Standards Institute (1978) Indian Standards: specification for Library Furniture and fittings: New Delhi :Indian Standards Institute, pp 22.

14. Indian, Publication Division (2001). India: a reference annual. Publication and Information Department, New Delhi.

15. Indian Standards Institutes (1997) Indian standards: Recommendations relating to primary elements in the design of school library buildings. New Delhi: Indian Standards institute, pp7-8.

16. Library Association, V.K. School library resource center recommended standards for policy and provision, 1973.

17. Annual Report on Novodhay Viddhalaya Samiti 1995-96.

18. Annual Report on Kendriya Viddhalayas Samiti 1996-97.

19. Annual Report on Novodhay Viddhalaya Samiti 1997-98.

20. Annual Report on Novodhay Viddhalaya Samiti 1999-2000.

21. Annual Report on Novodhay Viddhalaya Samiti 2001-2002.

22. Great Britain. Central Office of Information. (1996) Britain 1995: An official handbook. London: HMSO: Central office of information, pp 43- 44.

23. Great Britain. Central Office of Information. (1994) Britain 1995: An official handbook. London: Central office of information, pp 418-20.

24. Great Britain. Central Office of Information. (1988) Britain 1987: An official handbook. London: Central office of information, pp168-69.

25. Great Britain. Central Office of Information. (1988) Britain 1987: An official handbook. London: Central office of information, pp175.

26. Great Britain. Central Office of Information. (1996) Britain 1995: An official handbook. London: Central office of information, pp. 429.

27. Husen and Postlethwaite, Eds. (1985) International encyclopedia of education. Oxford: Pergamon Press, Vol. 9, page 5364-5.

28. Controller of publication (1992) Census of India 1991: Delhi: Publication Division, pp.3.

29. Controller of publication (1998) Educational Statistics: Delhi: Publication Division.

30. India. Ministry of Information and Broadcasting (1996) India 1995: A reference annual. New Delhi: Publication Division, p.1.

31. India. Ministry of Information and Broadcasting (1996) India 1995: A reference annual. New Delhi: Publication Division, p.8.

32. India. Census of India 1991. Final population tab. PCA Part II-B (ii).

33. India. Ministry of Information and Broadcasting (1995) India 1994: A reference annual. New Delhi: Publication Division, p.86.

34. India. Ministry of Human Resources Development (1985) Challenge of Education: A policy prospective. New Delhi: Department of Education, pp 68-70.

35. Abbott, A. Professionalism and future of librarianship. Library Trends. 46(3), 1998.

36. Kaul, H.K. (2002). "Resource sharing barriers". Library resource sharing and networks. Library Progress (International), 22(2).

37. Sinha, M.K. (2002). School library system in India. Kelpro Bulletin, 5 (Communicated for publication).

38. Sinha, M.K. (2003). Studies on the role and professional status of libraries of Jawahar Navodaya Vidayalayas of Navodaya Vidyalaya Samiti, Lucknow region: a survey. ILA Bulletin, 39(2), April-June: 23-33.

39. Srivastva, R.K. and Saxena, S.C. (1997). Software requirements and existing software in India for library automation, paper published at the Indo-British meet on Library Networking 14-15 Jan. 1997, DELNET, New Delhi.

40. Agarwal, J.C. (1993) Eighth five-year plan: Planning and Development in India, Delhi: Shipra, p 72.

41. Agarwal, J.C. (1989) Education in India: Global prospective. Delhi: Doaba House, p.75.

42. Evans, Keith. (1975) Development and structure of the English Educational System. London: University of London Press, p.175

43. Hunter, Brain, ed. (1995) Statesman yearbook: Statistical and Historical annual of the states of the world for the year 1993-94. London: Macmillan Press Ltd.

44. Husen and Postlethwaite, Eds. (1985) International encyclopedia of education. Oxford: Pergamon Press, Vol. 9, p.5355

45. Hunter, Brain, ed. (1995) Statesman yearbook: Statistical and Historical annual of the states of the world for the year 1993-94. London: Macmillan Press, p.1346.

46. India. Ministry of Information and Broadcasting (1993) India 1992: A reference annual. New Delhi: Publication Division, pp.25-30.

47. India. Ministry of Information and Broadcasting (1995) India 1994: A reference annual. New Delhi: Publication Division, p.86.

48. India. Ministry of Human Resources Development (1985) Challenge of Education: A policy prospective. New Delhi: Department of Education, pp 68-70.

49. Indian Bureau of Education – Review of Education in India p-21-26.

50. Indian Bureau of Education – Progress in Education in India. p-21-26.

51. Johri, B.P. (1996) Bhartiya siksha ka itihas: Rajhans Pub.

52. Krishna Kumar (1996). Library Organization. Vikas, New Delhi.

53. Lakedes, Daniel N.Ed. (1974) McGraw-hill Dictionary of Scientific And Technical Terms. New York, McGraw-hill. Pp1065b.

54. Maganand and Vaish, J.D. Higher secondary school libraries, 1961.

55. Mohanray, U.M. School libraries : An Education Problem, 1984.

56. Mookerji, Radha Kumud (1960) Ancient Indian education 3rd Ed. Delhi: Motilal, p. xix.

57. Mookerji, Radha Kumud (1960) Ancient Indian education 3rd Ed. Delhi: Motilal, p. xxvi.

58. Mulhan, I. V. Developing reading talent among children, 1979.

59. National Council of Educational Research and Training (India)(1998) Sixth All India Educational Survey. New Delhi: N.C.E.R.T. Table 10.2

60. Pates, Andrew, ed. (1983) Education fact book: An A. Z guides to education training in Britain. London: Macmillan.

61. Pathak, P.D. (1994) Siksha ke sidhant: Vinod pustak mandir, Agra.

62. Pathak, P.D. (1991) Bhartiya siksha aur ushaki samsyan: Vinod pustak mandir, Agra.

63. Pillai, K. Sivadarsan (1990) Non-Formal Education in India. New Delhi: Criterion publication, p. iv.

64. Padely, F.H. (1964) Pergamon guide to the educational system in England and Wales. Oxford: pergamon, p. ix

65. Rangnathan, S.R. New education and school library, 1973.

66. Rangnathan, S.R. New education and school library Delhi, Vikas publishing, 1973.

67. Santosh Kumar, V. and Parmeswaran, M. (2000). Libraries in Navodaya Vidyalaya: an evaluative study. Kelpro Bullitin, 4(1 & 2), December: 51-54.

68. Saiyadin, K.G. (1992) Bhartiya siksha ki bichardhara: Lal book depot.

69. Singhal, Mahesh Chandra (1997) Bhartiya siksha ki bartman sthiti: International Pub.

70. Sharma, J.S. School library and its importance [In library and libraries Ed. Bg. Sogani and Vijay Narain]

71. Saxena, S.R. Academic and special libraries: Y.K publishers, 1984.

72. Springer, E.I. Arrence independent school administration, London, 1982.

73. Stott, C.A. (1995) School Libraries: A Short Manual: Cambridge University Press, pp14.

74. Sodhi, T.S. (1993) Textbook of Comparative education. 5th Ed. New Delhi: Vikas Publishing House, p.54

75. Singh, K.S., ed. (1996) People of India: Delhi, Vol. 20: Anthropological Survey of India. pp. 2.

76. Sodhi, T.S. and Multani, N.S. (1989) Comparative studies in adult education. Ambala Cantt: Associated Pub. pp 1706-71.

QUESTIONNAIRE

USER SURVEY

From

Pradeep Dwivedi

43/478, Radha Nagar,

Sikandra, Agra

Dear Sir/Madam,

I am simultaneously registered for **Ph. D. Degree** in **Bundelkhand University Jhansi** under the supervision of **Dr. B. K. Sharma** Ex. Head, Department of Library & Inf. Sc. (Dr. B. R. Ambedkar University, Agra) and Co-supervision of **Prof. M. T. M. Khan** Head, Department of Library & Inf. Sc. (Bundelkhand University Jhansi). The topic of my research of **"Navodaya Vidyalaya Granthalayon Ke Sankalan Avam Sevaon Ka Eak Vivechanatmak Adhyayan".** As you will kindly appreciate, such a study has to be based on collection of data and views on different aspects of library activities including services. I therefore approach you with the enclosed questionnaire.

The data supplied by you and your view in the matter will be of immense use for my research work and also for suggesting some guidelines in way of recommendations through this research work for the improvement of library services to this academic

community including teachers, researchers and other users of the library. May, I therefore solicit your kind cooperation in this regard. I undertake that the information supplied by you will be used by me only for research work in hand.

Thanking you in anticipation and with deep regards

Yours faithfully

(Pradeep Dwivedi)

____

____

____

____

QUESTIONNAIRE

(USERS SURVEY)

1. Name (Mr./Mrs.)..

2. Status

   (A) Teacher

   (B) Student

   (C) Administrative staff

   (D) Other (pl.

   specify)..

3. Name of the class & section ....

4. For how long you have been using the School Library

   (A) Less then 6 months

   (B) 6 months to 1 year

   (C) 1-2 years

   (D) 2-5 years

   (E) 5-10 years

(F) More then 10 years

5. How often do you visit the Library?

(A) Daily

(B) Twice a week

(C) Once a week

(D) Occasionally

6. If you are not a regular user of the library, please indicate the reason

(A) School Library's working hours

(B) Library does not open on Saturday and other holidays

(C) Organization (Classification, Cataloging, Self arrangement) is not satisfactory

(E) Library lacks proper reading facilities

7. How far the Library's Collection meet your information requirements

In respect of your area of study

(A) More adequately

(B) Adequately

(C) Satisfactory

(D) Less satisfactory

8. Do you request /recommended the library to acquire Books/ publication
of your specific interest

(A) Yes

(B) No

9. If yes, then response of the Library has been

(A) Highly satisfactory

(B) Satisfactory

(C) Not Satisfactory

(D) Poor

10. How do you come to know about a new Book/Publication acquired by the Library (kindly indicate the order in which you come to know)

(A) Display in the Library

(B) List of additions

(C) Library catalogue

(D) Informally through other student / teachers

(E) Informally through the Librarian / Library staff

(F) Any other sources (pl. specify)

11. For which of the following purpose you primarily use the Library

(A) Teaching

(B) Circular activity such as debate

(C) Self knowledge

(D) Prescribed course

(E) Recreation

12. Please indicate your opinion regarding the use of Libraries collection in general

(A) Over 90% in used

(B) Up to 90% is used

(C) Up to 75% is used

(D) Up to 50% is used

(E) Up to 25% is used

(F) Less then 25% is used

13. Please indicate your opinion about Library services, facilities etc.

Services / Facilities Excellent V.Good Good Poor

Does not exist

(A) Library working hours

(B) Physical Facilities

(C) Library collection

(i) Books

(ii) Reference Books

(iii) Periodical

(iv) Maps & Reports

(D) Organization of Lib.

Collection

(E) Library services

(F) User education

(G) Reference services

(H) List of editions

(I) Reprography services(e.g. Xeroxing)

(J) Translation services

(K) Book display

(L) C A S

14. Please indicate your opinion about Library education programme for Students

    (A) Yes

    (B) No

LIBRARY SURVEY

From

Pradeep Dwivedi

43/478, Radha Nagar,

Sikandra, Agra

Dear Sir/Madam,

I am simultaneously registered for **Ph. D. Degree** in **Bundelkhand University Jhansi** under the supervision of **Dr. B. K. Sharma** Ex. Head, Department of Library & Inf. Sc. (Dr. B. R. Ambedkar University, Agra) and Co-supervision of **Prof. M. T. M. Khan** Head, Department of Library & Inf. Sc. (Bundelkhand University Jhansi). The topic of my research of **"Navodaya Vidyalaya Granthalayon Ke Sankalan Avam Sevaon Ka Eak Vivechanatmak Adhyayan".** As you will kindly appreciate, such a study has to be based on collection of data and views on different aspects of library activities including services. I therefore approach you with the enclosed questionnaire.

The data supplied by you and your view in the matter will be of immense use for my research work and also for suggesting some guidelines in way of recommendations through this research work for the improvement of library services to this academic

community including teachers, researchers and other users of the library. May, I therefore solicit your kind cooperation in this regard. I undertake that the information supplied by you will be used by me only for research work in hand.

Thanking you in anticipation and with deep regards

Yours faithfully

(Pradeep Dwivedi)

____

____

____

____

QUESTIONNAIRE
(LIBRARY SURVEY)

1. Name of the college...

2. Year of establishment...

3. Area of Library...

4. No. of current title (Books) processed during 2000-2001

5. Operating days of Library(in a week)...................................

6. Operating hour's of Library on week day

   From.................a.m. to ....p.m.

7. Operating hours of Library on holidays e.g. Sunday, Gazetted holidays etc.

   From.................a.m. to ....p.m.

8. Operating hours of Library during Examination period

   From.................a.m. to ....p.m.

9. No. of documents issued and returned during 2000-2001

10. Membership

    (A) Teachers

    (B) Students

    (C) Administrative Staff

    (D) Other's

11. Total collection as on 31.03.2001

    (A) Books

    (B) Reference books

    (C) Bound periodical

    (D) Current periodical

    (E) Manuscript

    (F) Audio visual material

    (G) Microforms

    (H) Computer readable material

    (I) Others

12. Growth of collection during the last five years

(A) 1996-97

(B) 1997-98

(C) 1998-99

(D) 1999-00

(E) 2000-01

13. Are there significant /vivid gaps in books/ periodical collection as for as Serial/periodical publication are concerned

(A) Yes

(B) No

14. If yes, continuity in which of the following areas has been affected

(A) Sciences

(B) Social sciences

(C) Humanities

(D) General books

(E) Reference books

(F) Periodical/serials

15. What are the causes of gaps

    (A) Damage by fire or other calamity

    (B) Change in acquisition policy

    (C) Weeding of publication

    (D) Others

16. Who selects books

    (A) Administration

    (B) Librarian

    (C) Teaching faculty

    (D) Teaching faculty & Librarian together

    (E) Library Staff

    (F) Users participation

17. How many staff members are engaged in acquisition work of books?

(A) Has the Library formulated book selection policy?

(B) Yes

(C) No

(D) If yes, please send the Xerox

copy..

18. Is there subject-wise allocation of books grant

(A) Yes

(B) No

19. Who allocates the book grant?

(A) Principal

(B) Library Committed

(C) Librarian

(D) Executive council

(E) Others

20. Does the Library maintain separate statistics of the following areas?

(A) Visitors

(B) Circulation (ILL)

(C) Circulation (except ILL)

(D) Reprography

21. If yes, please state the frequency of compiling these statistics

AREA	FREQUENCY
Normal hours	After School hours

(A) Visitors

(B) Circulation (ILL)

(C) Circulation (except ILL)

(D) Reprography

22. Please indicate your view regarding use of Library in terms of number of Library staff on duty vis-à-vis number of visitor after school time.

(A) Highly satisfactory

(B) Satisfactory

(C) Not Satisfactory

(D) Poor

23. Do you have continuing education programs for the library staff

(A) Yes

(B) No

24. If some of the jobs / services of the Library are computerized

(A) Yes

(B) No

25. If Yes, please indicate the job / services

(A) Acquisition

(B) Catalogue

(C) Circulation

(D) Serial control

(E) Library statistics

(F) C A S

(G) S D I

(H) Others

26. Do you feel the card catalogue should continue even after computerization?

(A) Yes

(B) No

27. Do you have Local Area Network (LAN) facility

(A) Yes

(B) No

28. Latest available information on Library expenditure

	2001-00	00-1999	1999-98	1998-97	1997-96
(A) Financial year					
(B) Total Budget					
(C) Staff Salary					
(D) Books					
(E) Periodical					
(F) Other reading material					

(G) Binding

(H) Maintenance

(I) Fitting/Furniture/Stationary

(J) Modernization

(K) Miscellaneous